भगवान

॥ श्रीः ॥

रामरसायन ।

गोलोकवासी रामभक्त कविवर
रसिकविहारी-कृत ।

जिसमें

सच्चिदानंद आनंदकंद जगवंद्य कोशलराज श्रीमन्महाराज रामचंद्रजीकी सम्पूर्ण नरलीला सुखशीला हरिकथा-मृताभिलाषियोंके पानार्थ विविध प्रकारके मनहरण छन्दोंमें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीमान् महाराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजी की आज्ञानुसार और सहायतासे,

कलिमलग्रसित मनुष्योंके उपकारार्थ

अत्यंत शुद्धता और स्वच्छता पूर्वक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया ।

वैशाख संवत् १९६४, शके १८२९.

प्रस्तावना.

महाशय काव्यानुरागियो ! इस नवीन काव्यशिरोमणि पदललित भावकूट ग्रन्थके अवलोकन करनेसे अवश्य अतुल प्रेम उत्पन्न होकर श्रीरामचंद्रजीकी भक्तिका प्रवाह हृदयमें विस्तृत होताहै. इसे श्रीमान् महाराजाधिराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजीकी सभास्थ कवियोंमें अग्रगण्य श्रीरामचंद्र कृपाधिकारी गोलोकवासी कविवर रसिकविहारीजीने समस्त प्राणियोंके भवसागर उत्तीर्णार्थ श्रीरघुनाथजीके जन्मकी मनोहर कथा, व्याहोत्सव, वनगमन, विपिनचरित्र, सुग्रीव मिलन, अंजनीनंदनका लंकागमन, बिभीषण आगमन, रावणवध, राज्याभिषेक, रामाश्वमेध, सीतारामरासविलास इत्यादि कथाएँ मनोहर छंदोंमें वर्णन की हैं, उक्त कविने जो मनभावन रुचिउपजावन रामयश वर्णन किया है, वह समस्त प्रेमी जनोंके दृष्टिगोचर है.

आपका–विद्वज्जनकृपाकांक्षी–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्–यन्त्रालयाध्यक्ष–मुंबई.

॥ श्रीः ॥

भूमिका ।

प्रकट हो कि प्राकृत काव्योंमें अग्रगण्य यह नवीन ग्रंथ "रामरसायन" श्रीमद्वाल्मीकीय रा
आशयसे रचागया है, इसमें श्रीमद्रामचंद्रजीके जन्मसे स्वर्गगमन पर्यंतके परमपावन तथा
चारित्र श्रुतिस्मृति पुराणादिकोंके उदाहरणों युक्त वर्णित हैं; इस प्रमाणिक ग्रंथमें व्य
ललित मनभावन रुचि उपजावन है कि जिसके पठन पाठनसे कलिमलग्रसित मनुष्य बहु
भगवद्भक्तिरूपी अखंड मार्त्तंडकी दीप्तिसे विकसित तथा आह्लादित होता है. किंतु बाद
भवसागरोत्तीर्ण होते हैं; इसके रचयिता गोलोकवासी श्रीमहाराज जानकीप्रसादजी अयो
भवनके महंत जिनका उपनाम रसिकविहारीजी तथा रसिकेश करके कवितामें प्रसिद्ध हे
विवरजीने इसके सिवाय २६ छब्बीस ग्रंथ और रचे हैं जिनका चक्र पृष्ठ ३ में है, अब
से जितने ग्रंथ जिस स्थानसे प्रकाशित हुये हैं उनकी व्यवस्था ...
...लय–मुंबई.
काव्यरसिक वहाँसे लेकर मुद्रित होवें—

अमदाबाद मामाकी हवेली युनाइटेड प्रेन्टिंगप्रेसमें "१ काव्य सुधाकर"
श्रीकाशीजी अमरयंत्रालयमें "१ इश्क अजायब" "२ ऋतुतरंग" और
यंत्रालयमें "१ विरहदिवाकर" और वहीं मु० नैपालीखपरा हरिप्रकाश यंत्राल
मुदी" "२ सुमतिपचीसी" "३ सुयशकदम" लखनऊ पं० बैजनाथ
"कानून मजमूआ" जाब्ते अदालत निस्बत कुलरियासत पन्ना, यह पुस्तक वि
सतकी आज्ञाके नहीं मिलती; श्रीउदयपुर सज्जनयंत्रालयमें "राग चक्रावली"
साहेब श्रीनाहरसिंहजीने अपने व्ययसे छपवाइके बिना मूल्य प्रदान करते हैं जिस कि
मँगालेवे, अब २६ के सिवाय ग्रंथ लिखे जाते हैं, "१ संग्रहकवित्तावली"
सवैया प्रत्येक विषयोंके हैं, "२ मनमंजन" मित्रद्रोहके विषयमें; "३ संगृहीत"
चीजैं पद ठुमरी गज़ल इत्यादि हैं; "४ गुप्त पचीसी" आदि छोटे और
विशेष ग्रंथकर्त्ताका वृत्तान्त स्थान जन्मकुंडली पृष्ठ नं० ४ में स्पष्ट लिखा है

श्रीरसिकविहारीजी श्रीअयोध्याजीसे आनंदपूर्वक तीर्थाटन करतेहुये मे... ...वत्रको
के समीप स्थान कानोड़ श्रीमद्रावतजी साहब श्रीनाहरसिंहजीके यहाँ पधार
अत्यन्त प्रसन्न हुये. और वहाँ स्वस्थितिकी रुचि प्रकट की, अतएव कवि
श्रीमद्रावत महाशयजी सौख्यप्रद स्थानमें स्थायीकर सत्संग सुखामृत पान क
सरसावने समयमें श्रीमद्रावतजीकी अनुमतिसे उक्त ग्रंथ निर्मित हुवा जो आ

जिन्होंने ऐसे परमोदार महात्माको निवास कराय निजव्ययसे लोकहितार्थ उक्त ग्रन्थ मुद्रित कराय प्रसिद्ध किया; ऐसे परोपकारोद्यत श्रीरावत नाहरसिंहजीको शतशः धन्यवाद देते हैं, दीर्घाऽऽयु; जगदीश्वर देवें ॥ श्लोक ॥ श्रीमज्जानकीदासेन कृत्वा रामरसायनम् ॥ भूयारतच्छ्रेयसे नृणां राघवाय समर्पितम् ॥ १ ॥ उर्वीमंडलमंडिते धनवतां प्रज्ञावतां सौख्यदे कानोडे पृथुमंदिरे सुनगरे दंडयान् पुनर्दंडयन् ॥ नित्यं च प्रतिपालयन् विनयिनः पाखडिनः खंडयन्नस्ति श्रीनृपनाहरसिंहसुमतिः सत्पण्डितान् मंडयन् ॥ २ ॥ कवित्त ॥ रामचन्द्र वारि ऋतुराज नित पूर चहँ सातसुख लीन्हे मत वेदित अनन्दके ॥ गुरु वेद पितु मातु आज्ञा अनुकूल रहें सुजन कुटुंवी प्रजा मोदरस कंदके ॥ लक्ष्मणसो भ्राता लक्ष सत्यको सुरक्षन हैं शांति स्वरूप स्वच्छ अच्छ मनुचंदके ॥ अवध नरेशवारि विभूति विचारि आजु रसिकविहारी सारी नाहरनरेन्दके ॥ ३ ॥

इति ॥

आपका कृपापात्र-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय-मुंबई.

इसके आगे श्रीमहाराजजीकी संस्कृतप्रशस्तिपत्रिका है.

अवश्य देखने योग्यहै.-

॥ श्रीः ॥

प्रशस्तिपत्रम् ।

पृथ्वीमण्डलमण्डनायितमहापाण्डित्यवन्मण्डितोनानादेशविदेशवासिविबुधप्रत्यक्षकल्पद्रुमः ।
धैर्यौदार्यसुवीर्यशौर्यसुकलाशौटीर्यशाली सदाश्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजोऽवतान्मेदिनीम् ॥ १ ॥
धन्यं गोत्रमिदं हि भूमिवलये श्रीबैजवापायनं धन्यं तत्कनकं पुरं च विमलः शीशोदवंशः कृती ।
यत्र श्रीमदुमेदसिंहधरणीनाथात्मजो राजते श्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजोऽधिराजश्रिया ॥ २ ॥
विद्याबुद्धिविवेकनीतिनिपुणःसद्धर्मविश्रंभवान्गोविप्रप्रियसर्वकार्यकरणे दक्षः सभेयप्रियः ॥
श्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजानुजो भाग्यवाञ्श्रीमल्लक्ष्मणसिंहजिद्विजयतां सौभाग्यसंपत्तिभिः ॥
श्रीमंताविह मुंबयीपुरि यदाऽऽयातौतदास्वोत्सवादागम्यातिसुशोभितं मम महाभाग्येन मुद्रालयम् ।
दृष्टं सर्वमपीह कृत्यभवनं संभाषिताः शास्त्रिणो मन्ये धन्यमिदं शुभागमवशाच्छ्रीवेङ्कटेशालयम् ॥
श्रीमन्नाहरसिंहरावतमहाराजौर्वंपश्चिद्गणाः सन्मान्या अतिमानिता इति यशो लोकत्रयं व्याश्नुते ।
तच्चैतादृशसाधुवर्यरचितग्रंथप्रकाशाज्ञया सत्यं स्वानुभवप्रसिद्धमिति तान्धन्यांश्च मन्यामहे ॥ ५ ॥
श्रीजानकीप्रसादेन कविना रचितं शुभम् । सर्वार्थसाधनपरं श्रीमद्रामरसायनम् ॥ ६ ॥
अस्य प्रकाशनं कर्तुं सर्वोपकरणक्षमः । प्रेषयन्मुद्रणागारे श्रीमन्नाहरसिंहजित् ॥ ७ ॥
तन्मया सुंदरैर्वर्णैः पुष्टचिक्कणपत्रके । स्वकीये "श्रीवेंकटेश" मुद्रायंत्रे सुमुद्रितम् ॥ ८ ॥
एतद्ग्रंथप्रकाशेन मोदंतां सज्जनाः सदा । महाराजयशश्चापि त्रैलोक्यं पूरयत्वलम् ॥ ९ ॥
श्रीकृष्णदासतनयः खेमराजाभिधेयवान् । विद्वद्गुणगणप्रेमी समाशास्ते प्रशस्तिकाम् ॥ १० ॥

महाराजविजयाभिलाषी–

खेमराज श्रीकृष्णदास.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखाना.

मुंबई.

श्रीरामपञ्चायतन.

बालकाण्डम् १.

दोहा—राम चरण रति जो चहै, अथवा पद निर्वान ॥
भाव सहित सो यह कथा, करै श्रवण पुटपान ॥
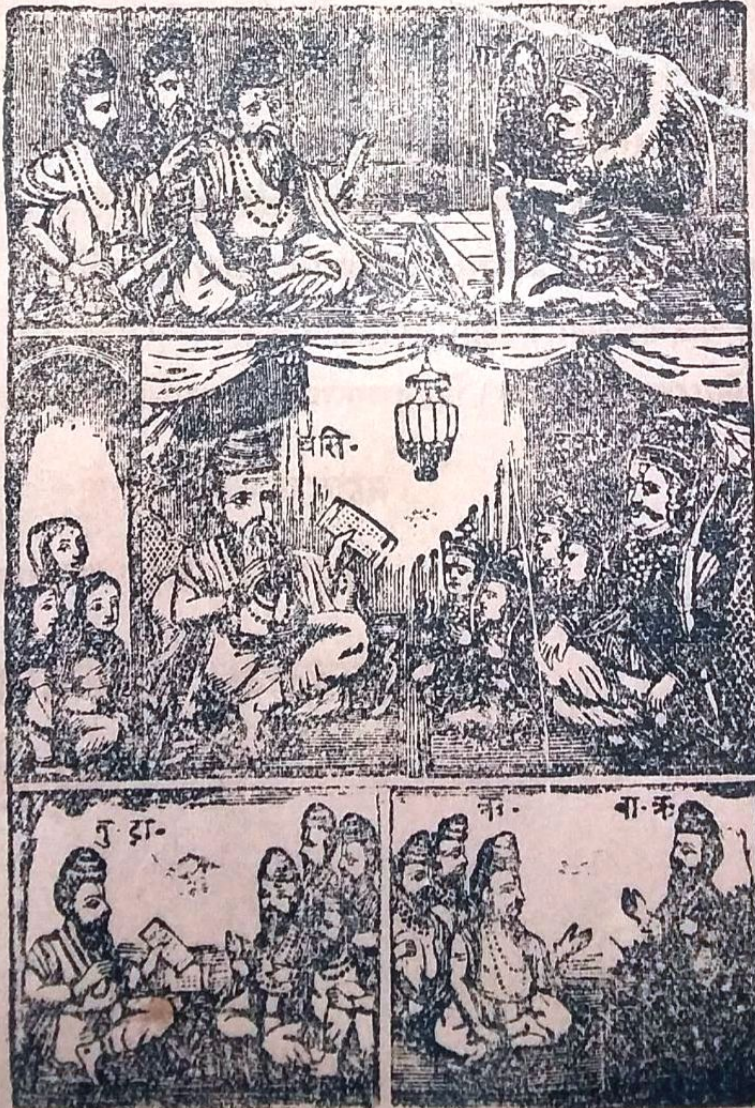
चौपाई—मनकामना सिद्धि नर पावै। जो यह कथा कपट तजि गावै।
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं। ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥

दोहा—सुनि दुर्लभ हरि भक्तिनर, पावहिं विनहिं प्रयास।
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि विश्वास ॥

अयोध्याकाण्डम्
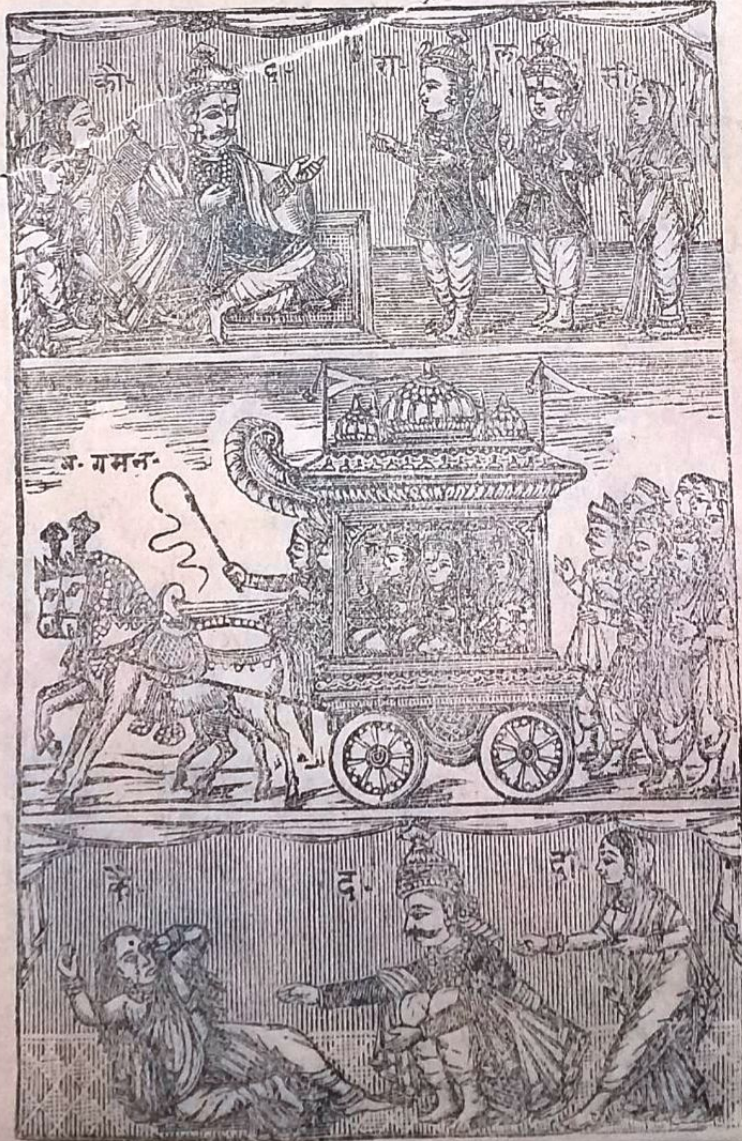
चौ०—जे असि कथा पाय परि हरहीं। केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं ॥
ते जड कामधेनु गृहत्यागी। खोजत आक फिरहिं पयलागी ॥

श्रीरामपंचायतन

❀ आरण्यकाण्डम् ❀

दोहा—सो कुल धन्य उमा सुन, जगत्पूज्य सुपुनीत ॥
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नर उपज विनीत ॥
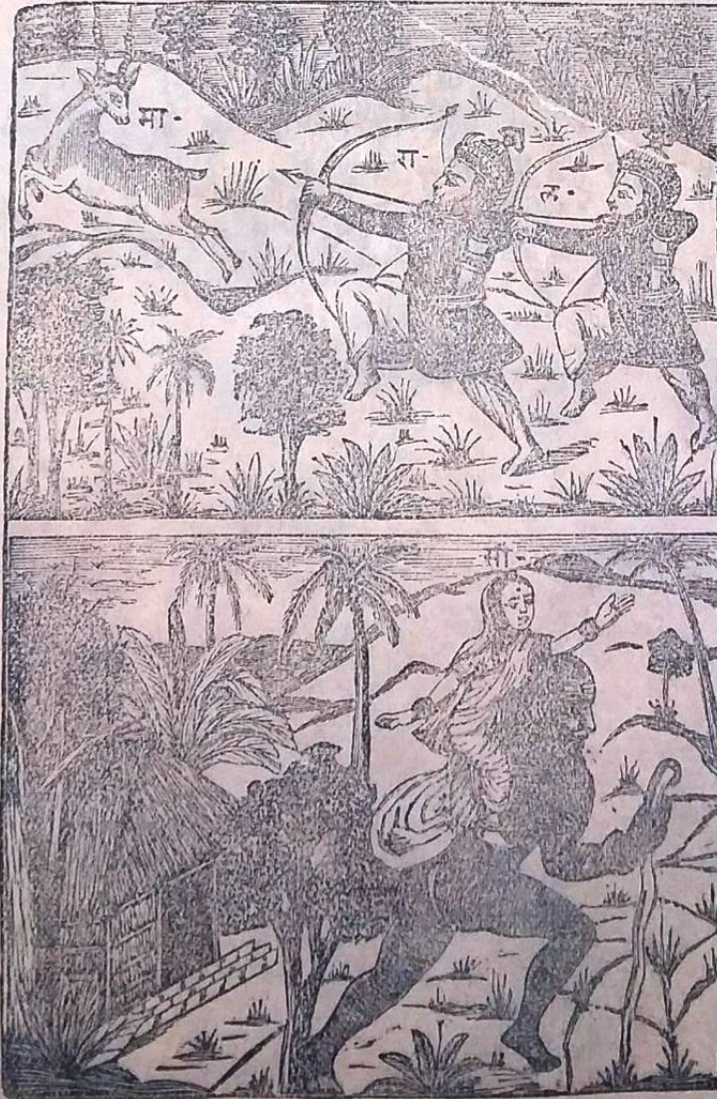
चौ०—इहि कलि काल न साधन दूजा । योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं । सन्तत सुनिय राम गुण ग्रामहिं ॥

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

❀ श्रीरामपंचायतन ❀

❀ किष्किन्धाकाण्डम् ४ ❀

दोहा–वारि मथे वरु होइ घृत, सिकतात वरु तेल ॥
विन हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धान्त अपेल ॥
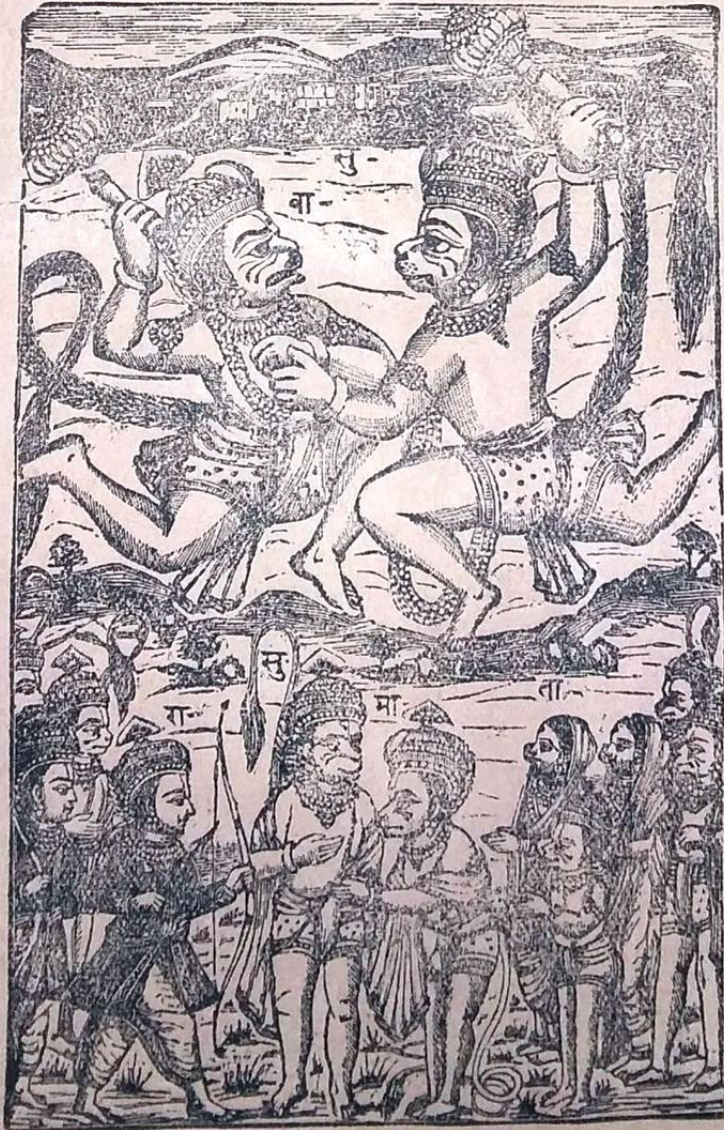
चौ०–संशृत रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
अति हरि कृपा जाहि पर होई । पाँव देइ यहि मारग सोई ॥

दोहा—यह रहस्य रघुनाथ कर, वेगि न जानै कोइ ॥
जाने ते रघुपति कृपा, स्वमहु दुःख न होइ ॥

❀ सुन्दरकाण्डम् ९. ❀

चौ०—तृषा जाइ वरु मृगजल पाना । वरु जामहिं शश शीश वृषाना ॥
अन्धकार वरु रविहि नशावै । रामविमुख सुख जीव न पावै ॥

❀ श्रीरामपञ्चायतन. ❀

श्रीरामपञ्चायतन.

लङ्काकाण्डम् ६.

दोहा—समर विजय रघुवीरके, सुनहिं जे संत सुजान ॥
विजय विवेक विभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान ॥

चौ०—भवभंजन गंजन संदेहा । जनरँजन सज्जन प्रिय येहा ॥
रामउपासक जे जगमाहीं । इह सम प्रिय तिन कहँ कछुनाहीं ॥

❀ श्रीरामपंचायतन ❀
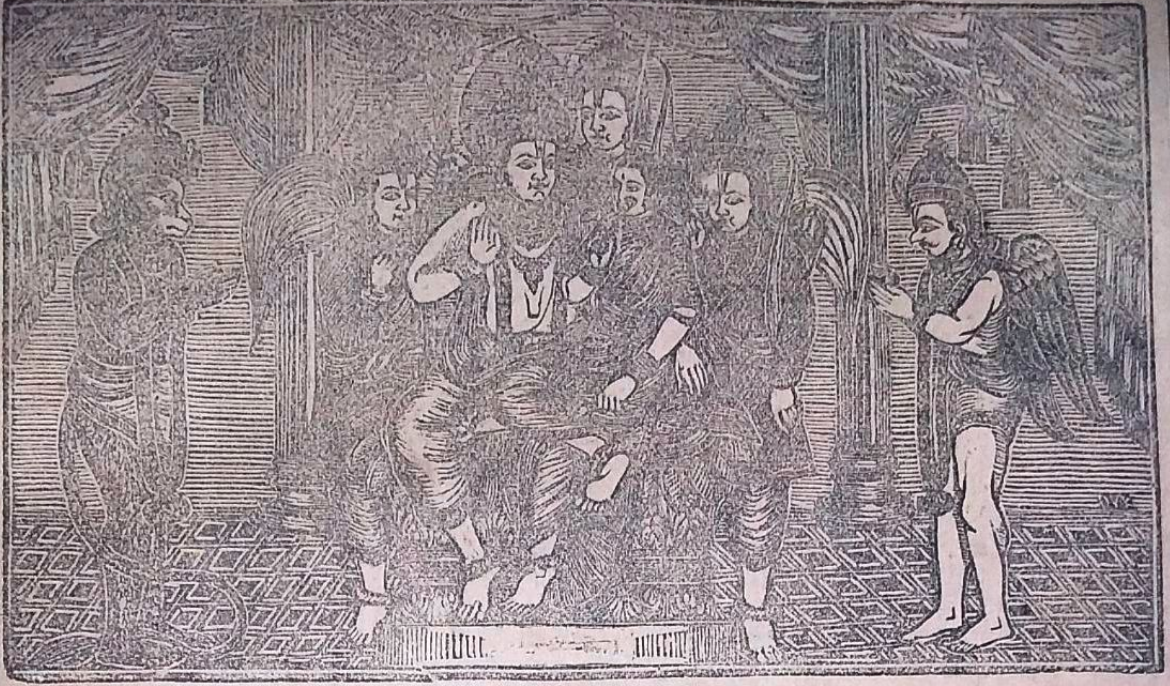
❀ उत्तरकाण्डम् ❀

चौ०—जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । सुख सम्पति नाना विधि पावहिं ॥
सुर दुर्लभ सुख करि जगमाहीं । अन्तकाल रघुपति पुर जाहीं ॥

दोहा—बार बार वर माँगौं, हरषि देहु श्रीरंग ॥
पद सरोज अन पावनी, भक्ति सदा सतसंग ॥

रामाश्वमेध
प्रारंभः ।

पुस्तकमिलनकाठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम् प्रेस-बंबई.

श्रीवेङ्कटेशाय नमः ।

अथ रामरसायनकी अनुक्रमणिका ।

विधान	विभाग	विषय	पृष्ठांक
(१)	१	वंदना-श्लोक मालिनीछंद	१
,,	,,	रसिकविहारीकृत ग्रंथचक्र	३
,,	,,	रसिकविहारीकी कुण्डली	४
,,	२	वंदना तथा कविके हृदयमें भगवतकी प्रेरणा-कथाप्रबंध	९
(२)	१	अवधराजश्रीवर्णन	१३
,,	२	दशरथयज्ञवर्णन	१९
,,	३	हनुमज्जन्मवर्णन	२१
,,	४	श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्नकी जन्मकुण्डली तथा श्रीरामचन्द्रजीके व श्रीलक्ष्मणादिके सखायोंका निर्णय तथा रामजन्मोत्साह वर्णन	३०
,,	५	रघुचरित्र वर्णन	५२
,,	६	रावण वृत्तान्त वर्णन...	५६
,,	७	श्रीसीताजन्म वर्णन	६२
,,	८	शुकचरित्र वर्णन	७३
,,	९	कुलदेव पूजन वर्णन	७८
(३)	१	धनुषयज्ञारंभ वर्णन	८१
,,	२	विश्वामित्रको अयोध्याप्रति आगमन वर्णन ...	८४
,,	३	विश्वामित्र चरित्र वर्णन	९०
,,	४	जनकपुर दर्शन वर्णन	९[illegible]
,,	५	वाटिका प्रसंग वर्णन	[illegible]

इति अनुक्रमणिका समाप्त

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ श्रीरामरसायनप्रारम्भः ।

श्लोक–मालिनीछन्द ।

सकलसुकृतसारंचार्थधर्मस्यसारंबहुगुणगणसारंभक्तिसारंचनित्यम् ॥
प्रचुरप्रणवसारंसर्वदामोक्षसारंदशरथहृदिसारंरामनामैववंदे ॥ १ ॥

पद्य अनुष्टुप्छन्द ।

श्रीरामंसीतयासार्द्धंलक्ष्मणेनहनूमता ॥ कोटिकंदर्प्पदर्प्पघ्नंशिरसा-प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥ गुरुंगणेशंगिरिशंगिरंचगरुडध्वजम् ॥ वाल्मीकिं-बुद्धिदंवंदेकविंकाव्यकलानिधिम् ॥ ३ ॥ दृढबद्धौभवाब्धौयद्गाथासे-तूसुविस्तरौ ॥ तुलसीसूरदासौचवंदेतौपुरुषोत्तमौ ॥ ४ ॥

उपजातिछन्द ।

अनेकजन्मार्जितदुष्कृतेनतेनोद्भवाःसंतिअपारक्लेशाः ॥
तेषांविनाशायसुभेषजंसत्सिद्धीकृतंरामरसायनंमे ॥ ५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

शोभितसतीके सतीभारतीरतीके करसेवित सुतीके सुरतीके नरतीकेहैं
विमलरतीके विरतीके विरतीके दानिशुद्ध विरतीके सुरतीके सुरतीकेहैं
रसिकविहारी सुगतीकेसुमतीके नित्यकारक पतीके दृढहारक छतीकेहैं
देववंदिनीके निमिवंश चंदिनीके युगनीके पदकंज मिथिलेश नंदनीकेहैं
॥६॥ तारी ऋषिनारी वज्र अंकुशादिधारी चित्रकूट बनचारी सहचारी
त्रिपुरारीके ॥ अधम उधारी मुनि मानस विहारी सारी विपति
विदारी पूज्य कपि गिरिधारीके ॥ सोचके सँहारी पाप तमके तमारी

दीन दास निरधारी प्रियजनकदुलारीके ॥ रसिक विहारी भारी दोष दुखहारी सदा सब सुखकारी पद अवधविहारीके ॥ ७ ॥ मानकी भरन भूरि भानकी छरन देव प्राणकी शरण वेगि तरन दिसानकी ॥ सानकी हरन यातुधानकीदरन उद्ध त्रानकी धरन ढार ढरन सुवानकी ॥ वानकी वरन पूरी आनकी अरन वोज नित्य प्रति रसिक विहारी सुखदानकी ॥ दानकी करन जानकीस जानकी सजान हद हठ हिम्मत हठीले हनुमानकी ॥ ८ ॥

दोहा—सन्त सुकवि कोविद सुजन, जे जग दीनदयाल ॥
ते सब अपनी ओर लखि, मोपर होहु कृपाल ॥ ९ ॥
राम कथा कछु रचत हौं, सुरस सत्य सुख धाम ॥
राम रसायन नाम यह, बरनौं ग्रन्थ ललाम ॥ १० ॥

घनाक्षरी कवित्त।

राम राम राम पुनि राम फिर राम राम रामचद्र सम्वत[१]१९३९यों विक्रम विचारौजू ॥ रामको जनम मास[१] लषनसु जन्म तिथि[२] भरत [illegible] बन्धु जन्म वासर[३] सम्हारौ जू ॥ हनुमतं जन्म[४] पक्ष वास[५]व भयोग साध्य बालव करण रामलग्न[६]न निहारौ जू ॥ रसिक विहारी भयो अधिक सुखारी अब पायकै रसायन समस्त निरधारौजू ॥ ११ ॥

दाहा—रसिक विहारी मुदितभो, राम रसायन पाय ॥
दुरित दाह दारिद्र दुख, सबही गये दुराय ॥ १२ ॥
भई सुद्धि वर बुद्धि तब, राम कथा चित चाव ॥
उपजो अति आनन्द उर, हरि गुरु कृपा प्रभाव ॥ १३ ॥
यदपि रचे पूरव विविधि, भाषा ग्रन्थ अनेक ॥
तदपि रामसिय चरित पुनि, वरनौं सहित विवेक ॥ १४ ॥
मम कृत ग्रन्थनको लखौ, चक्र लिखी सब बात ॥
संख्या नाम प्रसङ्ग अरु, समय सकल दरशात ॥ १५ ॥

१ चत्र। २–११। ३ मंगल। ४ कृष्ण। ५ ज्येष्ठ। ६–४

अथ रसिक विहारी कृत ग्रंथ चक्र।

ग्रंथोंकी गिनती	ग्रंथोंके नाम	बननेका संवत्	श्लोक संख्या	ग्रंथोंके वर्णनकी सूक्ष्म सूचना
१	काव्यसुधाकर	१९२०	४०००	साहित्यरीति २४ ग्रंथ मत पूर्वक
२	मानसप्रश्न	१९२२	१२५	श्रीतुलसी रामायणसे प्रश्न देखना
३	नामपचीसी	१९२२	१००	श्रीसीताराम नामप्रभाव
४	सुमतिपचीसी	१९२४	३०	धर्मनीतिज्ञानकाप्रश्नोत्तर
५	आनंदवेलि	१९२४	३००	श्रीतुलसीकृत अनुसारवाटिकाप्रसंग
६	पावसविनोद	१९२४	३२५	श्रीसीतारामजीकीहिंडोललीला
७	सुयशकदंब	१९२५	१७५	विभीषणकीशरणागत
८	ऋतुरंग	१९२५	१४०	षटऋतु
९	नेहसुंदरी	१९२७	२७५	नायकविरह
१०	रसकौमुदी	१९२७	१६००	विहारीसतसईके ३१६ दोहापरकवित्त
११	विपरीतिविलास	१९२८	१५०	विपरीतरति
१२	इश्कअजायब	१९२८	२५०	उर्दूहिंदीमिश्रितप्रीतविरह
१३	बजरंगबत्तीसी	१९३०	१२५	श्रीहनुमानजीकेकवित्त
१४	विरहदिवाकर	१९३१	६००	श्रीरामवनगमनग्रामबधूप्रीतिदुःख
१५	पंथप्रभाकर	१९३१	७५	ज्योतिषमतयात्राविचार
१६	कानूनष्टाम्प	१९३४	२००	रियासतपंनाकेनिसबत
१७	कानूनजाप्तेअ०	१९३५	२५००	रियासतपंनाकेनिसबत
१८	सतरंजविनोद	१९३५	५००	सतरंजकेनकसेऔरकायदा
१९	नवलचरित्र	१९३६	४०००	नवीनइतिहास
२०	षटऋतुविभाग	१९३६	२०	नईरीतिसेऋतुनकाविभाग
२१	रागचक्रावली	१९३७	३५०	रागरागिनीसुरादिनिर्णय
२२	मोदसुकर	१९३७	१२००	रसिकविहारीकृतकवितासंग्रह
२३	कल्पतरुकवित्त	१९३८	१२००	एक २ कवित्तके ३२ बत्तीसअर्थ
२४	कवित्तवर्णावली	१९३८	१५००	हरएकअक्षरमात्राकेकवित्त
२५	दरिद्रमोचन	१९३८	५३	श्रीहनुमानजीकीस्तुति
२६	श्रीरामरसायन	१९३९	११०००	श्रीसीतारामचरित्रप्रमाणसहित

दोहा–नाहिं कविहौं कोविद न हौं, नहीं कछू गुणमन्त ॥
हरि दासनको दासहौं, कृपा करत सब सन्त ॥ १६ ॥
अवध पुरीके मध्यमें, कनक भवन स्थान ॥
सिय रघुवरको सुख सदन, है प्राचीन प्रमान ॥ १७ ॥
रहे तहाँके अधिपवर, सो मेरे गुरु देव ॥
षटश्री प्यारे रामजी, नाम विदित चहुँ येव ॥ १८ ॥

कान्यकुब्ज द्विज पुत्रहौं, श्रीधर पितुको नाम ॥
नृप मन्त्री मो जन्मथल, झाँसी धाम सुठाम ॥ १९ ॥
चौ० चन्द्र १ अकास ० नन्द ९ महि १ जानौ ❀ सोविक्रमको संवत मानौ ॥
पौष शुक्ल सप्तमी निहारौ ❀ कुज द्विपाद रेवती विचारौ २० ॥
बान ५ वेद ४ विधिमुख ४ गुण गहिये ❀ इष्ट जन्मको यह ध्रुव लहिये ॥
बान ५ बान ५ पुनिबान ५ गनीजे ❀ जन्म भूमि पलभा लखिलीजे २१
वेद ४ वेद ४ शशि १ सर ५ दृग २ नन्दा ❀ भानु अंश यह शुद्ध अमन्दा ॥
सिंह लग्न मधि जन्म सुपायो ❀ परे अचल ग्रह दृढठहरायो २२ ॥
चौथे मङ्गल राहु परेहैं ❀ बुध भृगु पञ्चम दुहू खरेहैं ॥
षष्टम भवन भानु शनि बैठे ❀ अष्टम चन्द्र जीव मिलि पैठे २३ ॥
दशम केतु मेरे ग्रह ऐसे ॥ परे करत सबही फल तैसे ॥ यदपि साधुपै ग्रह अनुसारा ॥ रहै सुकविता चाह अपारा ॥ २४ ॥ पुनि सबते बलिष्ट प्रभु इच्छा ॥ प्रेरत सकल हृदय करि शिच्छा ॥ देखहु मैं कितते कहँ आयो ॥ कोहों बहुरि कहा पद पायो २५ ॥

रसिक विहारी कुण्डली।

६ ४
७ ५ ३
मं ८ रा के २
९ बु शु ११ १
सू श १० बृ चं १२
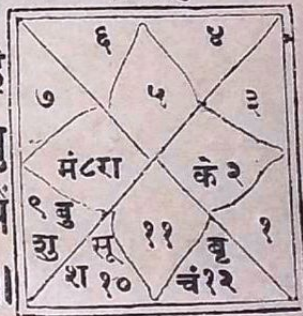
तीन मासको बालक जबहीं ❀ आयौ संत शरण मैं तबहीं ॥
जबहौं भयो वर्षयक बाला ❀ मृत्यु भई तब संध्या काला २६ ॥
सबनिशि रहो मृतक तनु मेरो ❀ संत उठायो होत सबेरो ॥
सरयू जल प्रवाहके काजा ❀ मोहिं लैगये सुजन समाजा २७ ॥
दोहा—करन लगे परवाह जब, सरयू जल अन्हवाय ॥
ताही छिनमो दृग खुले, प्राण देह मधि आय ॥ २८ ॥
सकल संत ताही समै, कहो सहित अहलाद ॥
याको नाम सुआजते, है जानकी प्रसाद ॥ २९ ॥
चौ० प्रौढ किियो गुरु पालि पढ़ाई ❀ राजपुत्र सम साज सजाई ॥
पुनि विष अस्त्र शस्त्रकी घाता ❀ भई होय कह जब हरि त्राता ३० ॥
जब श्रीगुरु हरि धाम पधारे ❀ तब मिलि संत महंत जपारे ।
नाम पतित पावन तड़भारी ❀ जिन कंठी सुकंठ मम डारी ॥ ३१ ॥
दैपदवी महंत मुहिं भाखो ❀ कीनी कृपा शरण निज राखो ॥

कहि महंत जानकी प्रसादा ❀ नाम पुकारत युत मरयादा॥३२॥
सो यह नाम छंदके माँहीं ❀ कहुँ कहूँ अति अमिल लखाहीं॥
याते निज कविता मधि राखौं ❀ और नाम द्वैसो इत भाखौं॥३३॥
रसिक विहारी नाम उचारो ❀ कितहूँ है रसिकेस निहारो॥
मम कृत छंद प्रबंध सुजोऊ। तिन महँ प्रगट नाम ये दोऊ॥३४॥

दोहा—सूक्षम निज वृत्तांत मैं, धरो इहाँ इहि हेत॥
सुनिसज्जन निजजानि मुहि, करिहैं कृपा सचेत॥३५॥
पुनि प्रणमौं कर जोरिकै, करौ कृपाते धन्य॥
हो सिय सिय वरके सदा, जे प्रिय रसिक अनन्य॥३६॥
निजनिज प्रकृतिप्रभावमो, औगुण निरखि अनंत॥
कृपा करौ मोपै सदा, दोऊ संत असंत॥३७॥

इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायनग्रंथे
प्रथमविधाने प्रथमो विभागः॥१॥

सोरठा—शिव विरंचि सुरराय, नारदादि सनकादिऋषि॥
वंदौं मन वच काय, मुनि वासिष्ठ कौशिक सकल॥१॥
राम चरित अभिराम, नाम रूप लीला बहुरि॥
धाम सहित सुख धाम, वरनौं मति अनुसार कछु॥२॥
राम चरित्र अपार, नेति निगम आगम भनै॥
पै निज बुधि अनुसार, कहौ कहैं पुनि कहँहिंगे॥३॥
राम चरित अति गूढ, विन हरि कृपा जनात नाहिं॥
सो कह जानै मूढ, पगे विवाद प्रमादमें॥४॥
राम उपासक होय, गहैं अनन्य उपासना॥
हरि गुरु कृपा सुजोय, राम चरित तब जानहीं॥५॥
वर उपासना ग्रंथ, हैं प्राचीन प्रमाण बहु॥
राम चरितको पंथ, जातें सकल दिखातहैं॥६॥
पै वे बहु सतसंग, कीने विना न पाइये॥
यातें तजि जगरंग, सेवै संत अभंग चित॥७॥

राम चरितको भेद, जब जानै गुरुकी कृपा ॥
तब छूटै सब खेद, राम उपासक होय दृढ ॥ ८ ॥
यातें लखि उपकार, कालि जगजीव उधार हित ॥
लघु मतिके अनुसार, राम कथा कछु रचतहौं ॥ ९ ॥
पूरव ग्रंथ प्रमान, संस्कृत अरु भाषा विविध ॥
सब संमत उर आन, रास रसायन ग्रंथ किय ॥ १० ॥

दोहा—रांम रसायनके विशद, हेरौ आठ विधान ॥
प्रति विधान सुविभाग बहु, यथा योग अनुमान ॥ ११ ॥
निर्णय १जन्म २विवाह ३वन ४,अरु०वियोग ५पुनि०युद्ध६ ॥
वर अभिषेक ७ विहार ८ ये, आठ विधान विशुद्ध ॥ १२ ॥
हैं बहु गुप्त प्रतक्ष जे, सिय रघुचंद्र चरित्र ॥
पूरव कथित प्रमाण जे, बरणौं परम पवित्र ॥ १३ ॥
जन्म कथातें आदिलै, मध्य चरित्र अनंत ॥
वरण तहौं साकेत निज, गुप्त वास परयंत ॥ १४ ॥
रास विलास हुलास बहु, सुख दुख योग वियोग ॥
यथा उचित सिय रामयश, कहौं सुनौ सत लोग ॥ १५ ॥
सिय रघु चंद्र चरित्र सुनि, संका करौ न कोय ॥
है प्रमाण युत सत्य सब, वर्णन कीनो जोय ॥ १६ ॥
जे जन कबहूँ नहिं सुने, राम उपासन ग्रंथ ॥
पुनि दृग भरि देखो न कहुँ, रसिक जननको पंथ ॥ १७ ॥
ते सुनि रासादिक कथा, सिय रघुवरकी सोय ॥
करि करि विविध वितर्क मन, चकित रहत चितजोय ॥ १८ ॥

चौ०जिनाहिकछू शंका जियहोई ❀ ते यह यतन करौ सब कोई ॥
सीता राम उपासकहेरो ❀ तिनहूँमें अनन्य निरवेरो ॥१९॥
पुनि तिनमें अति रसिक जु होई ❀ रसिकनमें विद्वान सु जोई ॥
ताढिगजाय करौं सतसंगा ❀ तनमनधनयुत प्रीतिअभंगा॥२०
तब ता मुख अनेक वर गाथा ❀ सुनौ चरित जे सिय रघुनाथा ॥
वरणे सुर मुनि संत अपारा ❀ ग्रंथ अमितजे लघुविस्तारा २१॥

संस्कृत अरु प्राकृत हैं कोऊ ❀ परम प्रमाण वाक्य वर दोऊ ॥
लिखौं नाम ते सकल निहारौ ❀ इमि अनेक औरहु विचारौ ॥२२॥

ग्रंथनाम।

चौ० हनुमंतसंहिता १ हि लखिलीजे ❀ पुनि वसिष्ठसंहिता २ कहीजे ॥
अरु अगस्त्यसंहिता ३ विचारो ❀ त्यों० निरुक्तिसंहितानिहारौ ४,२३
लखौ सदाशिवसंहिता ५ हि गुनि ❀ रामरसामृत सिंधु ६ भलोपुनि ॥
बहुरि चरण चामर ७ वर देखौ ❀ रामरास तिहि ८ सुंदर पेखो २४॥
वालमीकिरामायण ९ हेरौ ❀ सुंदररामायण १० निरवेरौ ॥
पुनि भुशुंडिरामायण ११ पेषो ❀ बहुरि महारामायण १२ देखो २५
फेरि बालरामायण १३ जानौ ❀ पुनि हनुमन्नाटक १४ दृढठानौ ॥
कौशलखंड १५ बहोरि विचारो ❀ अरु सियगुणवल्ली १६ निरधारो २६
संग्रह उत्सवसिंधु १७ अनूपा ❀ अरु गुणावली १८ सुखदसरूपा ॥
महासुंदरी तंत्र १९ निहारो ❀ पुनि नवरत्न २० हि निरखिविचारो २७
इते ग्रंथ संस्कृतके पेखो ❀ पुनि प्राकृत ग्रंथनको देखो ॥
अष्ट जाम २१ नाभाकृत हेरो ❀ तुलसीकृत २२ सब ग्रंथ निवेरो २८
बहुरिलखौं सीतायन २३ ग्रंथा ❀ कादंबरी २४ विशद शुभपंथा ॥
नेहप्रकाश २५ विशद जिय जानौ ❀ पुनितरंगिनी २६ परम प्रमानौ ॥ २९
इनहि आदि बहु ग्रंथन माहीं ❀ सीताराम चरित्र मिलाहीं ॥
रास विलास अनेक प्रकारा ❀ समय मास ऋतुदिन अनुसारा ३०
वरनी कथा पुरातन जोई ❀ विरचैं राम रसायन सोई ॥
अब इत कछु प्राचीन प्रमाना ❀ सूक्षम धरौं करौं बहु ज्ञाना ॥३१॥

प्रमाण—वाल्मीकीये। अयोध्याकांडे ॥ सर्ग २॥

श्लोक—गांधर्वेषु भुवि श्रेष्ठो बभूव भरताग्रजः ॥
कल्याणाभिजनः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥ १ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ सुंदरकांडे ॥ सर्ग ॥ २८ ॥

पितुर्निदेशंनियमेनकृत्वावनान्निवृत्तश्चरितव्रतश्च ॥
स्त्रीभिस्तुमन्येविपुलेक्षणाभिःसंरंस्यसेवीतभयःकृतार्थः ॥ २ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ सर्ग ३६ ॥

नमांसंराघवोभुंक्तेनचैवमधुसेवते ॥ वन्यंसुविहितंनित्यंभक्तमश्नातिपंचमम् ॥ ३ ॥ नैवदंशान्नमशकान्नकीटान्नसरीसृपान् ॥ राघवोपनयेद्गात्रात्त्वद्गतेनांतरात्मना ॥ ४ ॥ नित्यंध्यानपरोरामोनित्यंशोकपरायणः ॥ नान्यंचिंतयतेकिंचित्सतुकामवशंगतः ॥ ५ ॥ अनिद्रःसततंरामःसुप्तेपिचनरोत्तमः ॥ सीतेतिमधुरांवाणींव्याहरन्प्रतिबुध्यते॥६॥ दृष्ट्वाफलंवापुष्पंवायच्चान्यत्स्त्रीमनोहरम् ॥ बहुशोहाप्रियेत्येवश्वसंस्त्वा६ मभिभाषते ॥ ७ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ युद्धकांडे ॥ सर्ग २१ ॥

ततःसागरवेलायांदर्भानास्तीर्यराघवः ॥ अंजलिंप्राङ्मुखंकृत्वाप्रतिशिश्येमहोदधेः ॥ ८ ॥ बाहुंभुजंगभोगाभमुपधायारिसूदनः ॥ जातरूपमयैश्चैवभूषणैर्भूषितंसदा ॥९॥ मणिकांचनकेयूरमुक्ताप्रवरभूषणैः॥ भुजैःपरमनारीणामभिमृष्टमनेकधा ॥ १० ॥

पुनः ॥ तत्रैव उत्तरकांडे ॥ सर्ग ४२ ॥

अशोकवनिकांस्फीतांप्रविश्यरघुनंदनः ॥ आसनेचशुभाकारेपुष्पप्रकरभूषिते ॥ ११ ॥ कुशास्तरणसंस्तीर्णेरामःसन्निषसादह ॥ सीतामादायहस्तेनमधुमैरेयकंशुचि ॥ १२ ॥ पाययामासकाकुत्स्थःशचीमिवपुरंदरः ॥ मांसानिचसुमिष्टानिफलानिविविधानिच ॥ १३ ॥ रामस्याभ्यवहारार्थंकिंकरास्तूर्णमाहरन् ॥ उपानृत्यंश्चराजानंनृत्यगीतविशारदाः ॥ १४ ॥ अप्सरोरगसंघाश्चकिन्नरीपरिवारिताः ॥ दक्षिणारूपवत्यश्चस्त्रियःपानवशंगताः ॥ १५ ॥ उपानृत्यंतकाकुत्स्थंनृत्यगीतविशारदाः ॥ मनोभिरामारामास्तारामोरमयतांवरः ॥ १६ ॥ रमयामासधर्मात्मानित्यंपरमभूषिता ॥ सतयासीतयासार्धमासीनोविरराजह ॥ १७ ॥ रमयामासवैदेहीमहन्यहनिदेववत् ॥ तथातयोर्विहरतोःसीताराघवयोश्चिरम् ॥ १८ ॥ दशवर्षसहस्राणिशतानिसुमहात्मनोः ॥ प्राप्तयोर्विविधान्भोगानतीतःशिशिरागमः ॥ १९ ॥

पुनः ॥ निरुक्तिसंहितायाम् ॥

सौगंधयोज्वलसौकुमार्य्यकलिताकौमल्यदाकेलिदासंगीतामृतवर्षिणीप्रतिपदंप्रेयःप्रयासापहा ॥ एणाक्षीस्वकटाक्षकलिपतसुरेश्वर्यादिकाशक्तिदायद्वंद्वाविबुधोत्तमोत्तमशिवाजाभ्यांजयेज्जानकी ॥ २० ॥ याःसख्यःकलिताःसताभगवतागस्त्येनतेकोटिशस्ताभिस्त्वंसममेवनाथदयितंत्वाह्लादयंतीरहः ॥ मच्चित्रस्फुरग्सुंदरस्फुटगुणस्मेरायमाणानन-नानानाभावविनोदिनीहजनकक्षीरोदजातेसदा ॥ २१ ॥ कांच्याद्यारणनंचरंगकरणंमंजीरमंजुध्वनिंश्रोतुंत्वांरमणोविहारयतितेसामादिगानोद्गतिम् ॥ संगीतंसुरसेवितंचसमयेसीते विदूरेभजन्व्यर्थंतन्नचसर्वथा सकुरुतेमानार्हमानप्रदः ॥ २२ ॥ साधर्म्यंयदवाप्तमात्ममननात्सर्वात्मनातन्नवास्यादित्येवपरीक्षितुंतवसखीः कांतोयदाश्लिष्यति ॥ एकैकांहिविवक्तिचान्यवनितांत्वत्साम्यशंकीतियत्तत्तेमर्मतुदंनमर्ममधुरामुग्धासियन्मैथिलि ॥ २३ ॥ पुनः ॥ सदाशिवसंहितायां ॥ उर्वशीमेनकारंभाराधाचंद्रावलीतथा ॥ हेमाक्षेमावरारोहापद्मगंधासुलोचना ॥ २४ ॥ हंसिनीमालिनीपद्माहारिणीमृगलोचना॥ रामस्यपरिनृत्यंतिगीतवादित्रमोहिताः ॥२५॥

पुनः महारामायणे।

अनंतसखिभिःसार्द्धंरामचंद्रः ससीतया ॥ स्वेच्छयाकुरुतेरासंताःकुजागात्रसंभवाः ॥ २६ ॥ मध्योवयःकिशोरश्चानंतरूपोरघूत्तमः ॥ किशोर्य्यःसकलाःसख्योभूषिताश्चंद्रिकादिभिः ॥ २७ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥

मुनिवेषधररामंनीलजीमूतसन्निभम् ॥ रमंतेयोषितीभूतारूपंदृष्ट्वाम-हर्षयः ॥ २८ ॥ ईषद्धास्यकृतोरामोदृष्ट्वातेषामिमांगतिम् ॥ यूयंधन्यतराज्ञानंमत्प्रसादेनसांप्रतम् ॥ २९ ॥ रमितारामममूर्तौतेस्त्रियोरूपास्तपश्चरन् ॥ अतोदेवीरमुक्रीड़ारामनाम्नैववर्तते ॥ ३० ॥ इत्यादि ॥

चौ०—योंहीं अमित ग्रंथ विस्तारा ❀ तिनमहँ रामचरित्र अपारा ॥
सो प्रमाण मय मैं कछु भाखो ❀ मोपर कृपा सदा सब राखो ३२॥
राम रसायन ग्रंथ अनूपा ❀ प्रगट भयो शुभ मंगलरूपा ॥
यह सुग्रंथ विरचो जिहि कारन ❀ सुनौ सकल मैं करौं उचारन ३३

दो०–येक दिवस मध्याह्न मधि, वालमीकिअभिराम ॥
मैं अवलोकन करतहों, सुंदरकांडललाम ॥ ३४ ॥
रावण भाषित कटु वचन, जनकसुता कृतखेद ॥
सो प्रसंग लखि दुःखते, मो हिय भयो विभेद ॥ ३५ ॥
चली अश्रुधारा दृगन, शिथिल भयो तनु मोर ॥
कछु आलस आई सुमैं, पौढि रहो तिहि ठौर ॥ ३६ ॥
नाहिं जागत सोवत नहीं, और न कछू प्रतक्ष ॥
स्वप्न नहीं अचरज महां, मोहिं भयो यह लक्ष ॥ ३७ ॥
कानन विशद विशाल तहँ, यक वट वृक्ष ललाम ॥
तापर सकल समाज युत, बैंठेहैं सिय राम ॥ ३८ ॥
तहँ दंपति ढिग मैं खड़ो, पैकछु जीय उदास ॥
याते हिय अकुलाय मुहि, आई दीह उसास ॥ ३९ ॥
सुनि उसास सियराम जू, विहँसे मोदिशि हेरि ॥
इक इक फूल कदंबको, दियो दुहू मुहि फेरि ॥ ४० ॥
ताछिन आई एक तिय, लिये चारिकपि संग ॥
करन लगी कौतुक विविध, बीन बजाय सुढंग ॥४१ ॥
पुनि मोसन सो तिय कही, सिया राम गुण गान ॥
तुमहुँ करौ हिय हुलसिकै. दंपति पद उर आन ४२ ॥
सो सुनिकै सिय राम दुहुँ, मोहिंदई मणि एक ॥
कही लेहु यह कल्पमणि, येहौ विमल विवेक ॥ ४३ ॥
ऋद्धि सिद्धि वर बुद्धि बहु, मणि प्रभावते होय ॥
इतनेमें मुहि धायकै, गहि लीनो कपि दोय ॥ ४४ ॥
ताछिन घिरि आये जलद, परनलगी जलधार ॥
इते माहिं मोदृग खुले, आनँद भयो अपार ॥ ४५ ॥
मैं उठि बैठो चकित चित, कीनों अमित विचार ॥
सिया राम यश कछु रचौं, यही भयो निरधार ॥ ४६ ॥
यह विचारके करतहीं, औचक उर उमगाय ॥
राम रसायन नाम हिय, आपहि पर्‍यो जनाय ॥ ४७ ॥

तब सिय रघुवरकी कृपा, दृढ जानी सब भाँति ॥
वर्णन लागो विमल यश, गुप्त प्रगट गुण पाँति ॥ ४८ ॥

चौ०—यातेंहैं यह ग्रंथ अनूपा ❀ सब सुखदानि सुमंगलरूपा ॥
जो इहि बांचै सुनै सुनावै ❀ दुहूँ लोक आनंद सुपावै ॥४९॥
सहित प्रतीति प्रीति युतनेमा ❀ पढ़ै सुनै होवैं सब क्षेमा ॥
विरुज अंग बल तेज अपारा ❀ वृद्धिलहैं संतन परिवारा ॥५०॥
विद्या विजय विभूति बडाई ❀ सुयश सुबुद्धि सुकृत शुचिताई ॥
लहि सुख भोगि लोक इहि माहीं ❀ अंतकाल हरि रूप मिलाहीं ५१॥
रामरसायन मंगलकारी ❀ तन मन धन सुखदानि निहारी॥
जो यह पढै सुनै चितलाई ❀ रामकृपातिहिपर अधिकाई५२॥
यामें बहु ग्रंथनके अंगा ❀ धरे यथोचित निरखि प्रसंगा ॥
छंद अनेक नायिका नायक ❀ अलंकाररसजो जहँ लायक५३॥
भाव विविध ध्वनि व्यंग्य घनेरी ❀ कोष व्याकरण शब्द निवेरी ॥
निज लघु मतिकी गति अनुसारा ❀ विरचों ग्रंथ समेत विचारा५४॥
पै निज बुधि भरोसं नहिं आवै ❀ लखि स्वमंदता हिय सकुचावै ॥
याते सब सज्जन समुदाई ❀ दीन जानिकै करो सहाई॥५५॥
अनुचित मोर क्षमा सब कीजो ❀ जहँ अशुद्ध तहँ शुद्धकरि दीजो॥
पै [illegible] सुधि राखियो सदाही ❀ पक्षपात नहिं रंच बनाही॥५६॥
[illegible] विनय करौं करजोरी ❀ क्षमियो सकल ढिठाई मोरी ॥
प्राकृत और संस्कृत दोऊ ❀ कविता भेद लखे जो होऊ५७॥
पुनि बहु ग्रंथ प्रसंग निहारे ❀ पक्षवाद जिन दूरहि टारे ॥
जे ऐसे जन सुमति उतंका ❀ शुद्ध करैं ते याहि निशंका ५८॥
मैं यह ग्रंथ रचो करि हेतू ❀ सुखी होहिं सुनि बुद्धि निकेतू॥
सो सब मैं अभिलाष पुजावों ❀ दीन जानि दाया दरशावों॥५९॥

दोहा—पुनि सबसज्जन जननतें, विनय करौं करजोरि ॥
रामरसायन देखिकै, मोहिं न दीजो खोरि ॥ ६० ॥
रघुवर प्रेरित शारदा, आय बसी हिय धाम ॥
सोई वर्णन करतहै, सिय सियपति गुणग्राम ॥ ६१॥

यही भाँति पूरव रचे, बहु विधि ग्रंथ अनेक ॥
प्रथम भागके चक्रको, निरखे होत विवेक ॥ ६२ ॥
तिनहूँ ग्रंथनके रुचिर, निज विरचित बहु छंद ॥
यथा उचित या ग्रंथ में, धरिहौं निरखि प्रबंद ॥ ६३ ॥
औरहु विविध प्रसंगके, नूतन छंद प्रबंद ॥
रचिहौं प्रेरित भारती, राम चरित निरद्वंद ॥ ६४ ॥
प्रगट कियोहै शारदा, पढैं सुनैं हरि भक्त ॥
सिया रामजूकी कृपा, ग्रंथ प्रकाशै जक्त ॥ ६५ ॥
अब वंदौ श्री अवधपुर, मन वच कर्म समेत ॥
जो सिय राम विहार थल, नित्य धाम साकेत ॥ ६६ ॥
परहूते पर अवधपुर, जाते परे न और ॥
वर प्राचीन प्रमाण है, वर्णनीय बहु ठौर ॥ ६७ ॥

प्र०—अथर्वणवेदे श्रुतिः ।

यायोध्यासर्ववैकुंठानांमूलाधारः मूलप्रकृतेःपरात्परातत्सद्ब्रह्ममया विरजोत्तरादिव्यरत्नकोशाढ्यातस्यांनित्यमेवसीतारामविहारस्थल-मस्तीति ॥ १ ॥

पुनः ॥ पद्मपुराणे ॥ श्लोकः ।

श्लोक—विष्णोःपादमवंतिकांगुणवतींमध्येचकांचीपुरींनाभौ द्वारवतीं तथाच हृदये मायापुरींपुण्यदाम् ॥ ग्रीवामूलमुदाहरंतिमथुरानासाग्रवा राणसीमेतद्ब्रह्मपदंवदंतिमुनयोयोध्यापुरींमस्तके ॥ ३१ ॥ मथुराद्याः पुरःसर्वाअयोध्यापुरदासिका ॥ अयोध्यामेवसेवंतेप्रलयेप्रलयेपिच ॥ ३२॥षष्टिवर्षसहस्राणिकाशीवासेषुयत्फलम्॥ तत्फलंनिमिषार्धेनकलौ दाशरथीपुरी ॥ ३३ ॥ पुनः ॥ महारामायणे ॥ गोलोकाच्चपरंज्ञेयं साकेतान्तःपुरंप्रियम् ॥ गोप्यागोप्यतरानित्यासायोध्यातीवदु-र्लभा ॥ ३४ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—पुनि बंदौं सरयू सरित, राम रूप अभिराम ॥
सकल सरितकी शीश मणि, विशद विदित गुणग्राम ६८॥
सो सरयू तट विशद वर, द्वादश वन अभिराम ॥
विमल विशाल अनूप अति, सकल समै सुखधाम ॥ ६९ ॥

द्वादशवननाम ॥ काव्यछंद ॥

प्रथम–अशोक १ प्रमोद २ बहुरि–संतानक ३ जानौ ॥
पारिजात ४ मंदार ५सु–चंदन ६ चंपक ७ मानौ ॥
रमनक ८ आम्र ९ पलास १० कदम ११ सोहै–तमाल १२ वन ॥
ये सरयूके तीर अनूपमहैं द्वादश वन ॥ ७० ॥

दोहा–मृदुल भूमि शुचि पुण्य थल, सुंदर दोऊ तीर ॥
सुर पावनकारी सदा, निर्मल सरयू नीर ॥ ७१ ॥
नाम लेत नियरात सुख,दुख दुरात दरशात ॥
परसत पाप नशात जिहि, मज्जत राम मिलात ॥ ७२ ॥
श्रीसरयू जलपान करि, वसत अवधपुर माँहिं ॥
धन्य अवधवासी सकल, जिन लखि देव सिहाँहिं ॥७३॥
अवधपुरी सरयू नदी, अवध निवासी तत्व ॥
विदित प्रमाण पुराणमें, वर्णौं महत महत्व ॥ ७४ ॥

पु० ॥ अगस्त्यसंहितायाम् ॥

अयोध्याचपरब्रह्मसरयूःसगुणःपुमान् ॥ तन्निवासीजगन्नाथःसत्यं सत्यंब्रवीमिति ॥३५ ॥ यथासर्वावताराणामवतारीरघूत्तमः ॥ तथासर्वे-षुतीर्थेषुपावनीसरयूसरित् ॥ ३६ ॥ यावन्नजायतेतस्यांस्नानपानानि-षेवणम् ॥ तावन्नजानकीनाथेप्राप्यतेभक्तिरुत्तमा ॥ ३७ ॥

पुनः ॥ पद्मपुराणे ॥

मन्वंतरसहस्रेषुकाशीवासेनयत्फलम् ॥ तत्फलंसमवाप्नोतिसरयू-दर्शनेकृते ॥ ३८ ॥ प्रयागेयोनरोगत्वामाघानांद्वादशंवसेत् ॥ तत्फला-दधिकंप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते ॥ ३९ ॥ मथुरायांकल्पमेकंवसतेमानवो यदि ॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते ॥ ४० ॥ गयाश्राद्धेन यत्पुण्यंपुरुषोत्तमदर्शने ॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तंसरयूदर्शनेकृते ॥ ४१ ॥ पुष्करेषुनरोयातिकार्तिक्यांकृत्तिकायुते ॥ तत्फलादधिकंप्रोक्तंसरयू-दर्शनेकृते ॥ ४२ ॥ इत्यादि ॥

दोहा–यौंहीं अमित प्रमाणहैं, वेद पुराणन माहिं ॥
ग्रंथ अपार अपार वच, कहँलों वर्णै जाहिं ॥ ७५ ॥

नाम रूप लीला बहुरि, धाम राम गुण ग्राम ॥
अमित अपार विचार कछु, वरणौं यश अभिराम ॥ ७६ ॥
सिय रघुवर वर चरित बहु, सुर मुनि किये बखान ॥
ग्रंथ लखौ प्राचीनते, जानौ परम प्रमान ॥ ७७ ॥

इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायने प्रथमविधाने द्वितीयो विभागः ॥ २ ॥ इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायने निर्णय वर्णनोनाम प्रथमोविधानः ॥ १ ॥

अथ जन्मविधानप्रारंभः ।

दोहा—श्रीसीतावर सहित पुनि, लषण समीर कुमार ॥
पुर परिजन संयुत सबहिं, वंदौं वारंवार ॥ १ ॥

चौ०—अब वर्णतहौं कथा प्रसंगा ❀ जाते होय अनंद अभंगा ॥
बीच बीच पुनि थल अनुमाना ❀ धरिहौं वर प्राचीन प्रमाना ॥२॥
नाय संत गुरु द्विज पद माथा ❀ विरचौं सिय रघुवर गुण गाथा ॥
सकल दोष दुख विघ्न विहाई ❀ राम कृपा सद्ग्रंथ बनाई ॥ ३ ॥

दोहा—प्रथम करौं श्रीरामकी, वंशावली बखान ॥
ता पाछे पुनि होय बहु, विशद कथाको गान ॥ ४ ॥

अथ वंशावली ।

नारायण १ की नाभिते—कमल २ प्रगटभो आन ॥ ताते पुनि—ब्रह्मा ३ भये, विरचो सकल जहान ॥ ५ ॥ ब्रह्मातेसु—मरीचि ४ भे, तिनके—कश्यप ५ मान ॥ कश्यपके—सूरज ६ प्रगट, सूरजके—मनु ७ जान ॥ ६ ॥ मनुकेहैं—इक्ष्वाकु ८ सुत, तिनके—कुच्छ ९ विचार ॥ तिनके भये—विकुच्छ १० पुनि, तिनके— बान ११ निहार ॥ ७ ॥ बान पुत्र—अनरन्य १२ नृप, तिनके—पृथु १३ पृथिपाल ॥ तिनके भये-त्रिशंकु १४ जो स्वतनुस्वर्गगे हाल ॥ ८ ॥ धुंधुमार १५ तिनके भये, तिनकेहैं—युवनाश्व १६ ॥ मांधाता १७ तिनके सुजिन; भजीधरा सरवस्व ॥ ९ ॥ तिनकेभये—सुसंधि १८ पुनि, तिनकेहैं—ध्रुवसंधि ॥ ॥१९॥ तिनके—भरत २० सुजासुकी, फैलि रही यश गांधि ॥ १० ॥

भये—असित २१ सुत भरतके, तिनके—सगर २२ महान ॥ तिनके—अस मंजस २३ लखौ; भूप भूरि बलवान ॥ ११ ॥ अशुमान २४ तिनके प्रगट, तिनके पुत्र—दिलीप २५ ॥ भये भगीरथ २६ तासुके, लाये गंग समीप ॥ १२ ॥ तिनके प्रगट--ककुस्थ २७ भे, तिनके--रघु २८ विख्यात ॥ तिनकेहैं--कल्माष २९ पद, अंत--पाद २९ कहिजात ॥ १३ ॥ तिनके--संखन ३० तासुके, भये--सुदर्शन ३१ भूप ॥ अग्निवरण ३२ तिनके प्रगट, तेजवंत वर रूप ॥ १४ ॥ शीघ्र गमन ३३ तिनके सुवन, तिनके—मरु ३४ महराज ॥ भये--प्रसुश्रुक ३५ तासुके, जिनको सुयशदराज ॥ १५ ॥ अंबरीष ३६ तिनके बहुरि, तिनके--नहुष ३७ सुभाग ॥ तिनके भये--ययाति ३८ पुनि, तिनके सुत नाभाग ३९ ॥ ॥ १६ ॥ तिनके--अज ४० अजके भये--श्रीदशरथ ४१ महाराज ॥ भूप चक्रवर्ती प्रबल, तिहूँ लोक शिरताज ॥ १७ ॥ लसैं तीनसै साठ जिहि, पटरानी वर रूप ॥ परम प्रवीन पतिव्रता; सब गुण ज्ञान अनूप ॥ १८ ॥ यदपि सकल समहैं तदपि, तिनमहँ परम प्रधान ॥ तीन महारानी रुचिर, नृप बहु राखत मान ॥ १९ ॥ पुनि तिनहूँ महँ मुख्य वर, श्रीकौशल्या देवि ॥ और सबै जिनकी सदा, अनुगामिनि रुचि सेवि ॥ २० ॥ श्रीकौशल्या कैकयी, बहुरि सुमित्रा आदि ॥ सब महारानी परस्पर, राखहिं प्रीति अनादि ॥ २१ ॥

चौ०—वरपटरानिन सहित नृपाला ❀ परमानंद रहत सब काला ॥
प्रीति रीति शुचि नीति समेता ❀ राजकाज बहुहोत सचेता ॥ २२ ॥
मंत्री आठ प्रवीन प्रधाना ❀ धर्म धुरंधर नीति सुजाना ॥
वीर उदार धीर शुभचारी ❀ प्रजापाल नृपआज्ञाकारी ॥ २३ ॥

दोहा—धृष्ट १ जयंत २ सुमंत ३ अरु, विजय ४ अशोक प्रधाना ॥
मन्त्रपाल ६ सिद्धार्थ ७ पुनि, अर्थसाधक ८ हि जान ॥ २४ ॥
श्रीदशरथ महिपालके, ये वसु मन्त्री मान ॥
पुनि द्वै प्रोहित मुख्यवर, त्रिकालज्ञ गुणमान ॥ २५ ॥
श्रीवसिष्ठ १ गुरु ज्ञान निधि, वामदेव २ मति धर्म ॥
शुभचिंतक निरलोभ दुहुँ, कृत सन्तत सत कर्म ॥ २६ ॥

येहै गुरु प्रोहित सुवे. मन्त्री आठ महान॥
दश दशरथ महाराजके, राज काज कर जान॥ २७॥
सुरपुर नरपुर नागपुर, अवध नाथ आधीन॥
सकल सुखी सब भाँति नृप, आज्ञा पाल प्रवीन॥२८॥
श्रीदशरथ महाराजको, अनुपम साज समाज॥
तेज स्वरूप प्रताप बल, शोभित सुयश दराज॥ २९॥

घनाक्षरी कवित्त।

जाको नाम प्रगट प्रताप तिहुँ लोकनमें रहत सशंक दिगपाल लोकपाल सब॥ चलत चमूके हियहूके होतभूके अति उठत भभूके शेषजूके शीश हाल तब॥ राजनके राजा महाराजा दश स्यन्दनजू कढत सवारी घनी शस्त्र नोकशाल जब॥ रसिक विहारी अवधेश चक्क वैनरेश सोहै और कोहै जौन जोहै झोकजाल अब॥ ३०॥ कर कर होतहै कठोर पीठ कच्छपकी थर थर कँपतहै ग्रीवा अहिराज की॥ तर तर शब्द होत दाढतें बराह हूके धर धर छाती धरकात गज-राजकी॥ छाय जात धूरि नभ मण्डल छिपाय जाति आसन डगाय जात शिव सुरराजकी॥ रसिकविहारी जै जै सोर सरसाय जात कढ़त सवारी जब रघुकुल राजकी॥ ३१॥ जाकी ओर भूलिहू कृपाकी कोर कीनी भूप ताके दुख दारिद परायकै जनी भये॥जाहीके भरोसे सुरपालहू निशंक रहैं जाके तेज पुञ्ज शेष सहस्र फनी भये॥ रसिकविहारी ऐसे भयेहैं न ह्वैहैं अब जैसे अवधेश धर्म थपन पनी भये॥ जाकी प्रभुताई दई पाई प्रभुताई सब जाके धन दीनेसे कुबे-रहू धनी भये॥ ३२॥

सो०-ऐसो अमित प्रताप, श्रीदशरथ महाराजको॥
सो कौशलपुर आप, रैनि दिवस पालत प्रजहि॥ ३३॥

चौ०अवधपुरी दशरथ रजधानी ❀ जिहि लखि अमरावती लजानी॥
चहुँदिशि विशद विचित्र ललामा ❀ सदन सरित सरमग आरामा ३४
उत्तर अरु दक्षिण दिशि माँहीं ❀ योजन तीन प्रमाण रहाँहीं॥
पुनि पूरब पश्चिम दिगजोहै ❀ द्वादश योजन अवध बसोहै॥

अष्टावृत्त बद्ध प्राकारा ❀ परम रम्य दृढ उच्च अपारा ॥
ताबिच रहत अमित पुरवासी ❀ यथा योग प्रमुदित सुखरासी ३६
पुर पैठत जो प्रथम प्रकारा ❀ ताबिच शूद्र सदन विस्तारा ॥
ताते पुनि द्वितीय प्राकारा ❀ तहाँ वैश्य गृह विविध प्रकारा ३७
ता आगे जो तृतिय प्रकारा ❀ तामधि विप्र धाम शुचिसारा ॥
ताते पुनि प्राकार चतुर्था ❀ तामहँ क्षत्रिय सकल समर्था ३८
जो पञ्चम प्राकार तहाँई ❀ बन्धु वर्गते सकल रहाँई ॥
है षष्ठम प्राकार तहाँहीं ❀ संनिध सेवक विशद बसाँहीं ३९
अति विचित्र सप्तम प्राकारा ❀ तामधि राजसदन विस्तारा ॥
द्वै योजन प्रमाण वर हेरा ❀ भूप भवन मण्डल चहुँ फेरा ४०
परम विचित्र धाम वर सोहैं ❀ सुरपति सदन जाहि लखि मोहैं ॥
यथा योग सब थल सुखकारी ❀ साजे साज अमित मनहारी ॥४१॥
कुंज निकुंज वाटिका नाना ❀ सर आराम पंथ सुरथाना ॥
सभा धाम इत्यादि अनेका ❀ सुंदर सकल एकते एका ॥ ४२ ॥
पुनि अष्टम प्राकार अनूपा ❀ अति उत्तम वर विशद सुरूपा ॥
तहँ अंतहपुर सदन सुहाये ❀ द्वैयोजन मंडल चहुँ छाये ॥४३॥
कौशल्यादि सकल नृपदारा ❀ सबके विलग विलग आगारा ॥
सरस एकते एक घनेरे ❀ तहँ लौकिक गति मिलै न हेरे४४॥

दोहा–शोभा संपति साज सुख, नित नूतन सरसाय ॥
दासी वेष बनाय जहँ, रिधि सिधि वसैं सदाय ॥ ४५ ॥
लघुते लघु सेवक भवन, हैं सुर सदन समान ॥
पुनि कौशलपति महलको, को करि सकै बखान ॥४६॥
तीन लोक महँ और थल, अवधपुरी सम नाहिं ॥
जाहि विलोकि विरंचि हारि, शिव सुरराज सिहाँहिं ॥४७॥
निज निज मंडल वसहिं सब, विविध मंडली धाम ॥
यथा उचित मरयाद मय, सकल सुपास सुठाम ॥४८॥
यद्यपि सदन विशाल बहु, सघन तदपि सब भांति ॥
चहुँ फराक मग स्वक्षता, वर शोभा सरसाति ॥ ४९ ॥

अवध सदन संख्या सकल, किमि वर्णौं मति थोरि ॥
याते मुख्य अगारते, कहौं यथा बुधि मोरि ॥ ५० ॥
अवध मध्य मुनि ७ लक्षवर, देवागार ललाम ॥
अंबर०नभ०ऋषि७बान,५शाशि१,नंद९राम३द्विज धाम५१
ख०ख०रवि१२तिथि१५वसु८अवधमें, क्षत्रियभवनअछेह ॥
ख०ख०नभ०सर५रस६नाग८मुनि७,चंद्र१वैश्यगणगेह५२
वसु८द्दग२ग्रह९सर५चंद१ऋषि७,राम३पक्ष२महि१जान ॥
सदन शूद्र गणके इते, अवधपुरी मधि मान ॥ ५३ ॥
वापी बाग तडाग वर, लसैं त्रयोदश १३ लक्ष ॥
अवध मध्य ऋषिगण कुटी, सपद कोटि १ अतिस्वक्ष ५४

अथ संख्या चक्र ।

प्राकार	१	२	३	४	५	६	७	८
अंतर	इसमें	इसमें	इसमें	इसमें	इसमें	इसमें	इसमें	इसमें
निवास	शूद्र	वैश्य	ब्राह्मण	क्षत्रिय	बंधुवर्ग	समीपी सेवक	राज भवन	रनिवास

॥ प्राकारनिर्णय चक्र ॥

भवनांक	भवननिर्णय
७०००००	देवस्थान—सातलाख
३९१५७००	ब्राह्मणोंके स्थान—उनचालीसलाख पंद्रहहजार सातसौ
८१५१२००	क्षत्रियोंके स्थान—इक्यासीलाख इक्यावनहजार दोसौ
१७८६५०००	वैश्योंके स्थान एककरोड अठत्तरलाख पैंसठहजार
१२३७१५९२८	शूद्रोंके स्थान बारहकरोड सैंतीसलाख पंद्रहहजार नौसोअठ्ठावीस
१३०००००	बावडी—कुवाँ—तालाव—बाग—तेरहलाख
१२५००००००	मुनिनकी कुटी—सवाकरोड़

राजभवन और निवास—और प्राकार बाहर वे न्यारेहैं ॥ ये ६ प्राकारमें मुख्य मुख्यहैं.

मुख्य निवासी स्थान संख्या चक्रः ।

दोहा—अंतहपुर अरु नृप भवन, इनते विलग बखान ॥
पुनि प्राकार बाहर प्रजा, ते गृह न्यारे जान ॥ ५५ ॥
षट् प्राकार सुमध्य जो, लसैं अमित आगार ॥
तिनमें जे गृहमुख्य यह, संख्या लेहु विचार ॥ ५६ ॥

रुद्र याम लहि देखिये, तहँ बहु करि निरधार ॥
अवध नगर वृत्तांत सब, लिखो सहित विस्तार ॥५७॥

प्र० ॥रुद्रयामले।

अयोध्यायांप्रदृश्यंतेपंचकोटिशतानिच ॥ प्रासादाश्चमहाभागेअर्बुदान्येकविंशतिः ॥ १ ॥ तन्मध्येराजराजस्यराजतेराजमंदिरम् ॥ सुविभागंमहाकक्षंताराणामिव चंद्रमाः ॥ २ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—वर्णन कौशल नगरको, करौं कहा मैं मंद ॥
शारद शेष गणेशहू, भाषि न सकहिं सुछंद ॥ ५८ ॥
जहाँ चक्रवर्ती नृपति, श्रीदशरथ महाराज ॥
धर्मराज संतत करत, सकल भूप शिरताज ॥ ५९ ॥
पुर परिजन संयुत नृपति, रहत सदा सानंद ॥
विपुल विलास विभूति मय, राज्य करत निरद्वंद ॥६०॥

इति श्रीरामरसायन द्वि० वि० अवधराज श्रीवर्णनोनाम प्रथमोविभागः ॥ १ ॥

दोहा—धर्म धुरंधर भूपवर, दानी परम प्रवीन ॥
प्रबल चक्रवर्ती सदा, तिहुँ पुर जिहि स्वाधीन ॥ १ ॥

चौ०सोइकदिनदशरथमहिपाला ❀ मुकुर लखो निजवदन विशाला ॥
वृद्ध वैस चिह्नित तनु देखी ❀ नृप हिय चिंता भई विशेखी॥२॥
बीती वय किशोर तरुणाई ❀ आय वृद्धता अंगन छाई ॥
अजहूँलों सुत एकहु नाहीं ❀ पुत्रहीन यह राज्य वृथाहीं ॥ ३॥
इमि ससोच नृप सचिव समेता ❀ आतुर गये वसिष्ठ निकेता ॥
गुरुहि पूजिपद धरिनिज शीशा ❀ विनय करी कर जोरि महीशा॥४॥
सुनिनृपविनयमुदितमुनिज्ञानी ❀ बोले त्रिकालज्ञ वर वानी ॥
वेद मूल तव पुत्र भुवाला ❀ ह्वैहैं अति सन्निधि वह काला॥५॥
सुनि वरवचनमुदितहियभयऊ ❀ गुरुहि वंदि भूपति गृह गयऊ ॥
तहाँ सुमंत रहसि लखि भूपा ❀ वर्णी पूरव कथा अनूपा ॥ ६ ॥
अंग देश तुव सखा सुदेशा ❀ रोमपाद बलवंत नरेशा ॥

अनावृष्टि तिहि राज मँझारी ❀ महाकाल वश प्रजा दुखारी ॥७॥
तब सो नृप यह मंत्र दृढ़ावा ❀ शृंगीऋषि कर परम प्रभावा ॥
सो मम धाम आय ऋतु करहीं ❀ होइ वृष्टि तौ सब सुख भरहीं ॥८॥
इमि विचारि गणिकान सिखाई ❀ भेजीं सो ऋषि पास सिधाई ॥
जाय ऋषिहि करि दंड प्रणामा ❀ बूझी कुशल कपट करि वामा ९॥
शृंगीऋषि तिहि तियन निहारी ❀ यह जानी ये मुनि वनचारी ॥
तिन प्रति कहे वचन हुलसाई ❀ धन्य दरश दीने ऋषि राई ॥१०॥
कश्यप तनय विभांडक नामा ❀ हम तिहि पुत्र बसैं इहि ठामा ॥
तुम मुनि रहौ कौन वन माहीं ❀ फेरि कबौं मिलि दरश कराहीं ११॥
सो सुनि तियवर मोदक दीने ❀ शृंगीऋषि फल जानि सुलीने ॥
भोजन किये स्वाद अति लागे ❀ बहु बखान कीनो अनुरागे ॥१२॥
तब गणिका बोलीं तिन पाहीं ❀ हम जिहि आश्रम सदा रहाँहीं ॥
ता वनके फल ये द्विजराई ❀ यों कहि मुनि लीने भरमाई॥१३॥
मिसही मिस इत उत बहराई ❀ शृंगीऋषिहि देश मधिलाई ॥
रोमपाद नृप हर्ष समेता ❀ मुनिहि पूजि लै गये निकेता॥१४॥
ताही छिन वर्षा चहुँ भारी ❀ भई भये सब लोग सुखारी ॥
पुनि नृप मुदित होय मन माहीं ❀ शांता नाम सुता तिन व्याहीं १५ ॥
सनतकुमार सकल यह भाखी ❀ कथा प्रथमतैं मैं सुनि राखी ॥
पुनि तिन कही अवध भूपाला ❀ दशरथ नाम धर्म प्रतिपाला १६ ॥
जब शृंगी ऋषिआनहिं जाई ❀ सविधि यज्ञ ठानैं हुलसाई ॥
तब नृप चारि पुत्र वर पावैं ❀ तिहूँ लोक कल कीरति छावैं १७ ॥
सचिव वचनसुनि नृप तहँ जाई ❀ लाये शृंगीऋषिहि लिवाई ॥
सरयू उत्तर दिशि थल पावन ❀ ख्यात मनोरम भूमि सुहावन १८ ॥
तहाँ यज्ञ मंडप वर साजा ❀ आये चहूँ देशके राजा ॥
सुर नर मुनि गंधर्व अपारा ❀ जुरे समस्त सहित सुतदारा॥१९ ॥
वेद विहित सब साज सजाई ❀ अमित अपार ऋद्धि सिधि छाई ॥
शृंगीऋषि वासिष्ठ अगवाना ❀ पुनिबहु द्विजमुनिकुशलसुजाना२०

अश्वमेध मख सविधि करायो ❀ पुत्र हेतु पुनि यज्ञ दिढायो ॥
वेद मंत्र मय आहुति दीनी ❀ सकल सुरीति यथोचितकीनी२१ ॥

सो०–ता छिन समय निहार, अग्निदेव नररूप धरि ॥
लैकर पायस थार, यज्ञ कुण्डते प्रगटभे ॥ २२ ॥
ऋषिहि दयो सो आय, ऋषि दीनों नरनाथको ॥
भूपति उठि हरषाय, लीनों शीश चढाय कर ॥ २३ ॥
सो पायस ले भूप, चारि भाग कीने उचित ॥
यथायोग लखि रूप, तिहुँ पटरानिनको दये ॥ २४ ॥
सब पायसको अर्ध, सो नृप कौशल्यहि दियो ॥
शेषरहो तिहि अर्ध, दयो कैकयिहि मुदितह्वै ॥२५॥
शेष रहो पुनि ताहि, करि द्वै भाग महीप मणि ॥
दयो सुमित्रहि चाहि, लहि तिहुँ तिय प्रमुदित भई॥२६॥
संयुत प्रीति प्रतीत, रानी कौशल्यादि तिहुँ ॥
पायस पाय पुनीत, भई गर्भवंती रुचिर ॥ २७ ॥
जादिनते नृपतीय, तिहूँ गर्भवंती भई ॥
ता दिनते सब हीय, पुर परिजन प्रमुदित महा॥२८॥
शिव विरंचि सुरराय, संयुत सुर ऋषि नाग सब ॥
नित प्रति हिय हुलसाय, राम दरश आशा लगी ॥२९॥
अमित देव नर नारि, धरि मानुष वपु अवधमें ॥
बसे अनंद विचारि, राम जन्म सुख लखन हित ॥ ३० ॥

इति श्रीरामरसायन द्वि० वि० दशरथयज्ञवर्णनो
नाम द्वितीयोविभागः ॥ २ ॥

चौपाई–अब वर्णों सो सहित उमंगा ❀ विधि प्रेरित जो देव प्रसंगा ॥
जब दशरथ नृप यज्ञ सुठाना ❀ अश्वमेध वर विधि अनुमाना ॥१॥
तबते प्रथम विरंचि विचारी ❀ प्रगटे राम अवध सुखकारी ॥
तिहूँ लोकको सब दुख हरिहैं ❀ अतिविचित्र लीला बहु करिहैं ॥२॥
यातें सुर गंधर्व सुनागा ❀ निज अंशन युत सकल सभागा ॥

प्रगटि बसैं महि जहँ तहँ जाईं ❀ वानर ऋक्ष मनुज समुदाई॥ ३॥
जो विचारि विधि आयसु दीनी ❀ सो सब उचित शीश धरि लीनी॥
रूप तेज गुण बल जिहि जैसे ❀ प्रगटे विविध अंशते तैसे ॥ ४ ॥

दोहा–प्रथम भये विधि अंशते, जाम्बवंत ऋच्छेश ॥
वाली सुरपति तेजते, कपिपाति प्रगट सुदेश ॥ ५ ॥
भानु अंश सुग्रीव भे, सुरगुरुते कपि तार ॥
बहुरि गंधमादन लखौ, अंश कुबेर सुढार ॥ ६ ॥
विश्वकर्माके अंश नल, अनल तेज कपि नील ॥
हैं अश्विनीकुमार ते, द्विविद मयंद सुशील ॥ ७ ॥
पुनिसुखेन वर वरुण ते, शंभु अंश हनुमान ॥
धीर वीर तिहुँ लोकमें, जा सम कोउ न आन ॥ ८ ॥
इच्छा तनुधारी सकल, तिहुँ पुर चारी कीश ॥
यदपि तदपि हनुमंत गुण, सबते अधिक सुदीस ॥ ९ ॥
अतिसमर्थ बल तेजनिधि, कपि केसरी कुमार ॥
जन्म कथा तिनकी कछू, कहौं सुमति अनुसार ॥ १० ॥

चौ०–कपि बलवंत केसरीनामा ❀ तिनकी तिय अंजनीललामा ॥
वर वानरी स्वइच्छाचारी ❀ एकदिवस सो हर्षितभारी ११॥
करि शृंगार मानुषी रूपा ❀ विचरतही गिरि शिखर अनूपा ॥
नखशिख सकल अंग शुचि सोहे ❀ तिहि लखि पवन देव मन मोहे १२
आय वेग करि तिहि तनु परसो ❀ मनसिज अंग अंग अति सरसो॥
तिनहिं देखि अंजनी रिसानी ❀ बोली बिलखि क्रोधमय वानी १३
देव मंदमति यह कह कीनो ❀ सब मम कर्म धर्म हरि लीनो ॥
पवन कही सुनि अंजनि वानी ❀ तुम सुंदरी वृथा रिस ठानी १४॥
हौं न अधर्म कियो तुम पाँहीं ❀ पतिव्रत भंग भयो कछु नाहीं ॥
लेहु मुदित यह मम वरदाना ❀ पैहो सुत मोसम बलवाना १५॥
पवन वचन सुनि केसरि नारी ❀ सकुची प्रगट हिये मुद भारी ॥
भई स गर्भ अंजनी जबहीं ❀ प्रतिदिन द्विगुन तेज तनु तबहीं १६॥

योहीं गर्भ समय सब बीता ❀ आयो कातिकमास पुनीता ॥
तिथी चतुर्दशि मंगल वारा ❀ असित पक्ष दिन अंत विचारा १७॥
स्वातीनखत लगन शुभ मेषा ❀ ग्रह बलिष्ठ सब योग विशेषा ॥
भई अंजनी तबहिं प्रसूता ❀ प्रगटो सुंदर पुत्र अभूता ॥ १८ ॥
कंचन वर्ण सुअंग अनूपा ❀ अतिचंचल तनु पुष्ट सुरूपा ॥
लखि अंजनी पुत्र हरषानी ❀ जानी सत्य पवनकी वानी ॥१९॥
प्रसव अंत लागि क्षुधा विशेखी ❀ अंधकार कानन निशि देखी ॥
विन जल फल सब रैनि बिताई ❀ प्रात होत आतुर उठि धाई ॥२०॥
सुतहि त्यागि तहँ जाय उताला ❀ खोजत फिरत अहार बिहाला ॥
सरस पत्र फल फूल सुहाये ❀ इत उत धाय उदर भरि खाये २१॥
इत विन मात बालकपि रोवै ❀ विलम भयो बहु क्षुधा विगोवै ॥
ता छिन प्रगट भये रवि आई ❀ अरुण वर्तुलाकार सुहाई ॥ २२॥
अंजनि पुत्र क्षुधातुर भारी ❀ लखे पक्क फल सरिस तमारी ॥
तड़ाकि तड़ाक भानु गहि लीनो ❀ बाल बुद्धि भ्रम कछु नाचीनो२३
जा छिन रविहि गहो कपिबाला ❀ ताछिन रहो ग्रहणको काला ॥
आयो भानु निकट द्रुत राहू ❀ सो लखि भयो क्रोध उर दाहू२४
पै लखि पवनपुत्र बल भारी ❀ गयो इंद्र ढिग वेगि सुरारी ॥
कहे सुरेशहि वचन रिसाई ❀ अब विरंचि नव सृष्टि बनाई॥२५॥
दूजो राहु आज रवि तोप्यो ❀ मेरो सकल पराक्रम लोप्यो ॥
सुनि सुरपतिलै कुलिश कराला ❀ चढि ऐरावत चले उताला २६
संग राहु वासव तहँ आये ❀ जहँ केशरी सुवन रवि छाये ॥
दूरहिते लखि राहुहि श्यामा ❀ कपि तिहि फल जानौ अभिरामा२७
रवि तजि गहो राहुको धाई ❀ सो लखिकै धाये सुरराई ॥
आवत उज्वल गज कपि देखो ❀ ऐरावतहि शुभ्र फल लेखो ॥२८॥
तजि सिंहिका सुतहि तिहिं ठाये ❀ सुरपति गज गहिवेको धाये ॥
आवत देखि बाल कपि योधा ❀ मारो कुलिश इन्द्र करि क्रोधा२९॥
बज्र घात पीडित कपि बाला ❀ आय गिरे गिरिपर बेहाला ॥
लागत सुरपति कुलिश अभंगा ❀ किंचित भयो वाम हनु भंगा३०॥

दोहा–पवन देखिं निज सुत विकल, अंक उठायो धाय॥
तिहि लै बैठे कुपित ह्वै, गिरि कन्दर दुरि जाय॥३१॥
मरुत कोपते जीव सब, विकल भये तिहुँ लोक॥
प्रलयकाल आयो अबै, यों अकुलात सशोक॥ ३२॥
सब इन्द्रिय मग रुद्धभे; नेक न पवन प्रचार॥
प्राण कण्ठगत छिनकमें, भये जीव गणझार॥ ३३॥
सकल सुरासुर विकल ह्वै; आरत करत पुकार॥
लखि कलेश सब अमर युत, वेगि चले करतार॥३४॥
जहां पवन निज पुत्र युत, रहे कन्दरा धाम॥
शिव विरंचि आदिक सकल, सुर आये तिहिं ठाम ३५॥
पवन हेरि सुर मण्डली, उठे सुतहि लै अंक॥
करि प्रणाम विधि चरणपै, पुत्रहि धरा निशंक॥ ३६॥
तब करता करिकै कृपा, कर फेरो शिशुमाथ॥
पुत्र भयो प्रमुदित पवन, जान्यो जन्म सनाथ॥३७॥
अति प्रसन्नह्वै वायु तब, कियो लोक सञ्चार॥
विरुज भये सब जीवगण, लहौं अनन्द अपार॥ ३८॥
मुदित देव गण जीव सब, जाने विगत कलेश॥
स्वारथ परमारथ मिलित, बोले वचन सुदेश॥ ३९॥
सकल देव मिलि दीजिये, मारुति हित वरदान॥
तब मघवा बोले मुदित, संयुत अर्थ प्रमान॥ ४०॥
बंक भयो हनु वज्रते, याते कपि सुत नाम॥
ख्यात रहे हनुमान इव, होय तेज बल धाम॥ ४१॥
पुनि प्रसन्न मम दत्तवर, यह हनुमत हित जान॥
अमर सदा मो वज्रते, रहै अमित बलवान॥ ४२॥
पुनि दिनेश निज कलन ते, दीनों सत कल अंश॥
परमप्रकाशित अंगभो, हनुमत कपि अवतंश॥ ४३॥
कहो भानु पुनि होय जब, सप्त वर्ष हनुमान॥
तब हम देहैं इनहिं :वर, सकल सुविद्यादान॥ ४४॥

प्रमुदित वर दीनों वरुण, हनुमन्तहि सुखदाय ॥
जलते अरु मम पाशसे, रहै अवध्य सदाय ॥ ४५ ॥
यम बोले हरषाय नित, निरुज रहै बलवन्त ॥
पुनि अवध्य मम दण्डते, विचरै सकल दिगन्त ॥४६॥
हनुमन्तहि पुनि विशद वर, दीनो मुदित कुबेर ॥
चण्ड गदाते अमर ह्वै, कपि विचरै चहुँ फेर ॥ ४७ ॥
हैं त्रिशूल आदिक विविध, जो मम शस्त्र सुझारि ॥
तिन सब ते कपि अमर यों, वर दीनो त्रिपुरारि॥४८॥
कहो विश्वकर्मा हरषि, मम कृत जिते हथ्यार ॥
अमर होय तिन सबनिते, सन्तत पवनकुमार ॥ ४९ ॥
वर विरंचि दीनो हरषि, ब्रह्मदंड सब जोय ॥
हनूमान तिनते सदा, अवशि अवध्य सुहोय ॥ ५० ॥
पुनि विधि बोले मरुत प्रति, हो तव पुत्र अजेय ॥
चिरजीवी बलवंत शुचि, रहै सदा मति श्रेय ॥ ५१ ॥
मित्रपाल होवै अमित, कामरूप रिपु शाल ॥
वर त्रिलोकगामी प्रबल, पूज्य अंजनी लाल ॥ ५२ ॥
याविधि सुरवर दै कपिहि, गये सु निज निज धाम ॥
बन विचरत निश्शंक नित, पवनपुत्र अभिराम ॥ ५३ ॥

चौपाई-दैवरदान गये सुरजबते ❀ प्रतिदिन बढ़ै तेज बल तबते ॥
हनूमान निज इच्छाचारी ❀ विचरत चहुँ नित विपिन मँझारी५४
कपि चंचल पुनि बालनिशंका ❀ वर प्रभाव अतुलित बलबंका ॥
जाय नित्य शिशु केलि कराहीं ❀ सो लखि वनचर अपर डराहीं ५५
तरु उखारि नभ ओर चलावैं ❀ धरि हलाय गिरि शिखर ढहावैं ॥
कूदैं किलकि चढैं द्रुम जाईं ❀ मंथै सर सरिता जल धाईं ॥५६॥
जाय मुनिनके आश्रम माहीं ❀ लैवल्कल मृगचर्म पराहीं ॥
काहू परन कुटी झकझोरैं ❀ काहू नीर पात्र गहि ढोरैं ॥ ५७ ॥
काहूकी पादुका बहावैं ❀ काहूके फल फूल नशावैं ॥
जो कोऊ ऋषि रंचहु डाटैं ❀ तौ तिहि धाय कोप करि काटैं५८

भय वश रहैं सबै चुप साधी ❀ पवनसुवन नित करैं उपाधी ॥
भये विकलऋषिगण वनवासी ❀ भृगु अंगिरा आदि तपरासी ॥५९॥
ते त्रिकालदर्शी मुनि ज्ञानी ❀ ज्ञान दृष्टि कपिवर गति जानी ॥
रहे मष्ट कछु दिवस बहोरी ❀ हनूमान निज वानि न छोरी ६०॥
सबही भयेविकल अति जबहीं ❀ दीनों शाप क्रोध करि तबहीं ॥
पवनपुत्र बल विस्मृत रहई ❀ संतत सरल चित्त निरवहई॥६१॥
जब कोऊ बल सुरति करावै ❀ तबहिं वीरता कपि तनु आवै ॥
इमि शापित ह्वै पवनकुमारा ❀ भूले निज बल सकल अपारा ६२॥
शांत रूप विचरै वन माहीं ❀ कबौं न कछु मुनि विघ्न कराँही ॥
इहि विधि सप्त वर्ष वय बीती ❀ रहत सदा शाखामृग रीती ॥६३ ॥
अष्टम वर्ष प्रवेश विचारी ❀ बोले पवन समय अनुहारी ॥
जाहु पुत्र दिनकरके पासा ❀ करौ सकल विद्या अभ्यासा ॥६४॥
तुम्हैं जबहिं सब सुर वर दीना ❀ तबहीं यह दिनेश प्रण कीना ॥
हम वर विद्या सकल पढ़ैहैं ❀ वेद शास्त्र गुण विविध सिखैहैं ६५
सुनि पितु वचन मौन हनुमाना ❀ सो लखि पवन आचरज माना ॥
बोले मरुत सुवैन बहोरी ❀ जान्यौ बाल केलि मत भोरी६६॥
पुत्र सु बाल बुद्धि परिहरहू ❀ विक्रम बल विद्या उर धरहू ॥
यदपि देव वर विदित प्रभावा ❀ बालकेलि कलिपत तुम पावा ६७॥
तदपि परम उत्तम यह बाता ❀ रवि ढिग जाहु पढ़न हित ताता॥
ह्वै मम सुत मोसम बलवाना ❀ रवि ढिग गमन सुनत चुपठाना ६८
केलि कलोल वीरता करहू ❀ रवि तम गज गहिवे नभ चरहू ॥
विद्या पढन हेतु हरि पासा ❀ जात होत हिय अधिक हिरासा ६९
सुनि पितु वचन वीरता बाढ़ी ❀ भई पुच्छ रोमावलि ठाढ़ी ॥
नभ दिशि देखि हर्षि हनुमाना ❀ तमकि गगन कूदें बलवाना ७०॥
परे जाय उदयाचल बंका ❀ तेज पुंज कपि निपट निशंका ॥
औचक देखि दिनेश डराने ❀ पुनि धरि धीर भानु पहिचाने ७१
धाय गहे रविपद हनुमंता ❀ दिनमणि आशिष दीन अनंता ॥
पुनि कर जोर केशरी वारे ❀ मृदुल नम्र वर वचन उचारे ७२

पितु सिखदै प्रभु पास पठायो ❀ गुरुपद रज सेवन मैं आयो ॥
लखि सेवक हरि कृपा करीजे ❀ विद्यादान मुदित मुहिं दीजे७३
सुनि कपि वचन प्रसन्न तमारी ❀ एवमस्तु वर गिरा उचारी ॥
खगपति बोले वचन बहोरी ❀ पवनपुत्र तव वय अति थोरी७४
मम रथ कबहुँ रहत थिर नाहीं ❀ अमित वेग वर वाजि चलाहीं॥
चलत संग अतिही श्रम पैहो ❀ किहि विधि विद्यामें चितदैहो७५

घनाक्षरी कवित्त।

काम क्रोध लोभ मोह विवश प्रमादी मूढ़ संतत दरिद्री दुःखी मत्त मद भावैंहै ॥ मानी अभिमानी व्यग्रचंचल अयान अति कृपण कुसंगी सोच सकुच रहावैंहै॥ आलसी अभागी अनचाही अनाचारी बहु स-रुज अनौसरी अधीर अकुलावैंहै ॥ रसिकविहारी भनै भानु हनुमान सुनौ येतनको पूरी वर विद्या नाहिं आवैंहै ॥ ७६ ॥

सो०—भानु वचन सुनि वीर, नाय शीश कर जोरि दुहुँ ॥
बोले हरषि सुधीर, नाथ कही सो सत्य सब ॥ ७७ ॥
मो लघुमति अनुसार, मैं निज हिय दृढ़ कीन यह ॥
गुरुकी कृपा अपार, अगम होय सो सुगम अति ॥७८॥
मोहिं दास दृढ़ जानि, नाथ साथ निज लीजिये ॥
वर विद्या शुभ दानि, कृपा दृष्टि करि दीजिये ॥ ७९ ॥
यौंहीं बहु बतरात, बात जात अति दूरलौं ॥
पिछले पगन चलात, गगन गये रवि संगही ॥ ८० ॥
सो गति देखि दिनेश, कृपा सहित अति मुदितह्वै ॥
करन लगे उपदेश, वेद शास्त्र विद्या विशद ॥ ८१ ॥
रवि रथ आगे वीर, चलत पाछिले पगनतें ॥
विद्या पढ़ी सुधीर, स्वल्प दिवसमें पवन सुत ॥ ८२ ॥
सामादिक चहुँ वेद, व्याकरणादिकशास्त्र षट ॥
संयुत सकल विभेद, पढि रवितें कपि निपुणभे ॥ ८३ ॥
विद्या विशद अनूप, तेज धाम कपिको दई ॥
सुमति तेज बलरूप, लखि सब देव सराहहीं ॥ ८४ ॥

पुनि आदित्य दयाल, कह्यो जाहु कपि निज भवन ॥
वर विद्या सबकाल, अनभ्यास जनि राखियो ॥ ८५ ॥
गुरु आयसु धरि माथ, चरण वंदि बुधिमंत कपि ॥
कही जोरि युग हाथ, नीत प्रीत संकोच युत ॥ ८६ ॥

दोहा—नाथ कृपा करि मुहिं दई, विद्या विमल अपार ॥
गुरुतें उरण तौन जो, सेवौं जन्म हजार ॥ ८७ ॥
पै मर्याद प्रमाण यह, प्रभुहि विदित सब सोय ॥
विन दीने गुरु दक्षिणा, विद्या सफल न होय ॥ ८८ ॥
याते प्रभु करिकै कृपा, यथाशक्ति अनुमान ॥
लीजे कछु गुरु दक्षिणा, मुहि निज सेवक जान ॥ ८९ ॥
पवनपुत्रके वचन सुनि, बोले तेज निकेत ॥
सत्य धर्म मर्याद यह, भाषी सुमति सचेत ॥ ९० ॥
निरखि शक्ति तुव पवनसुत, हम जो करहिं रजाय ॥
देहु वही गुरुदक्षिणा, मम हिय अति हुलसाय ॥ ९१ ॥
अंशुमान हनुमान प्रति, भाषो सहित सनेह ॥
वीर धीर गुरु दक्षिणा, प्रीति सहित यह देह ॥ ९२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

दुष्ट दल दंडिबेको रहियो उदंड चंड मंडितह्वै कीजो बल खंडित सुरारीको ॥ सकल दराज साज साज राम काज काज संयुत समाज सुख दीजो धनुधारीको ॥ तुम हनुमान बलवान वर बुद्धिमान ह्रूजो अनुरक्त भक्त जक्त रखवारीको ॥ देश परदेशमें हमेश सब भांति घनो राखियो आनंद सदा रसिकविहारीको ॥ ९३ ॥

चौ०-यौं कहि पुनि बोले दिनराई ❀ परम प्रीति संयुत हुलसाई ॥
यह रजाय दृढ गहौ हमारी ❀ येही गुरु दक्षिणा तिहारी ॥९४॥
सुनि गुरु आयसु कपि गुणवंता ❀ दृढ करि हिय धरि लई तुरंता ॥
निरखि दिवाकर कपि धुरधर्मा ❀ ह्वै प्रमुदित वर दयो सुपर्मा॥ ९५
फलित होय विद्या तुव कीशा ❀ पूरण कृपा करैं जगदीशा ॥
जे जन तुव सेवा चित लावैं ❀ते सब निज इच्छित फल पावैं९६

यों कहि कपि शिरपर कर फेरो ❀ कृपा सहित सिखैदं बहुतेरा ॥
विदा किये हनुमंतहि ईशा ❀ चले हरषि गुरुपद धरि शीशा९७
कूदि कुधर अस्ताचल पाहीं ❀ नभ मारगह्वैके छिन माहीं ॥
आय दुहूँ पद माथ नवायो ❀ पितु जननी सुत लखि सुख पायो
विचरत सुख युत इच्छाचारी ❀ तिहूँ लोक मुद मंगल कारी ॥
रामचंद्र दरशनकी आसा ❀ लागि रही गुरु वच विश्वासा९९॥
गुरु सिख हिय धरि अंजनि लाला ❀ रसिकविहारी पाल कृपाला ॥
इमि हनुमंत जन्म गुण गाथा ❀ वर्णि यथाश्रुतभयो सनाथा१००
अब हनुमंत जन्म तिथि मासा ❀ है प्रमाण पूरव जो खासा ॥
उत्सव सिंधु ग्रंथके माँहीं ❀ है सो लिखौं सत्य इहि ठाँहीं१०१

प्र० ॥ उत्सवसिंधौ ।

ऊर्जस्यचासितेपक्षेस्वात्यांभौमेकपीश्वरः ॥
मेषलग्नेञ्जनागर्भाच्छिवःप्रादुरभूत्स्वयम् ॥ १ ॥

दोहा—लिखो हनूमत जन्मको, है इतिहास पुरान ॥
चैत मास पूनौ तहां, सोऊ वाक्य प्रमान ॥ १०२ ॥
कल्पभेदसों जानिये, यामें कछू न फेर ॥
वर्तमानके कल्पको, निश्चय यही निवेर ॥ १०३ ॥
उत्सवसिंधु सुग्रंथ अरु, वाल्मीकि ये दोउ ॥
होत एकता बुद्धिते, लखौ सुबुध सब कोउ ॥ १०४॥
वाल्मीकिमें है सुकछु, लिखौं इहां लखि लेहु ॥
शब्द अर्थ भावार्थतें, निश्चय सकल करेहु ॥ १०५ ॥

प्र० ॥ वाल्मीकीये ॥ उत्तरकाण्डे ॥ सर्ग ॥ ३५ ॥

शालिशूर्का भाभासंप्रासूतेमंतदांजना ॥ फलान्याहर्तुकामावैनि ष्क्रांतागहनेवरा ॥ २॥ एषमातुर्वियोगाच्चक्षुधयाचभृशार्दितः ॥ रुरोदशिशुरत्यर्थंशिशुःशरवणेयथा ॥ ३ ॥ ततोद्यंतंविवस्वंतंजपापुष्पोत्करोपमम् ॥ ददर्शफललोभाच्चह्युत्पपातरविंप्रति ॥४॥ बालार्काभिमुखो बालोबालार्कइवमूर्तिमान् ॥ गृहीतुकामोबालार्कंप्लवतेंबरमध्यगः ॥५॥ यमेवदिवसंह्येषग्रहीतुंभास्करंप्लुतः ॥ तमेवदिवसंराहुर्जिघृक्षतिदिवाकरम् ॥ ६ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—जो पूरणिमा कहिय तौ, सूरज ग्रहण न होय ॥
यातै हनुमत जन्म तिथि, असित चतुर्दशि सोय ॥ १०६॥
पुनि स्वाती नक्षत्र सो, ज्योतिष गणित प्रमान ॥
आवै कातिक कृष्ण तिथि, इमि चतुर्दशी जान १०७॥

इति श्री०रा०र०द्वि०वि० हनुमज्जन्मवर्णनोनाम तृतीयोविभागः ॥ ३ ॥

चौ--अब वर्णौं सो सकल प्रसंगा ❀ राम जन्म रस रंग उमंगा ॥
जिहि उत्सव हित सुर मुनि झारी ❀ अमित दिवस आशा उरधारी १ ॥
अवधपाल दशरथ नृप रानी ❀ कौशल्यादि तिहूँ सुखदानी ॥
जबते भई सगर्भ अनूपा ❀ तबते प्रतिदिन बढ़त सुरूपा २॥
पुरवासी सब मगन अपारा ❀ घर घर होत मंगलाचारा ॥
सुख संपति निशिदिन अधिकाई ❀ राजमहल शोभा सरसाई ॥ ३॥
राम जन्म औसर नियरायो ❀ तिहूँ लोक आनँद उमगायों ॥
लंका त्यागि और सब काहू ❀ जड चेतन तनु भरो उछाहू ॥ ४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

ठौर ठौर मंजुल रसाल झौर झौर फूले तरुण भयेहैं नव पल्लव लहै लहे ॥ मुदित मलिंद डोलैं निर्तत मयूर चारु करैं कमनीय कीर कोकिल कह कहे ॥ रसिकविहारी सुखकारीहै तयारी सब देव नर नारी भारी आनँद डह डहे ॥ औसर विलोकि राम जन्म को त्रिलोक चहूँ आपहीते होन लागे मंगल गह गहे ॥ ५ ॥ राम जन्म सुखके निरंतर विलोकिबेको आनंद सुमिर देव हृदय उमाहैंहैं ॥ अति पछितायँ रहिजायँ अकुलायँ फेरि बार बार अवध निवासिन सराहैंहैं ॥ रसिकविहारी आयो औसर आनंदकारी सब सुर झारी भारी भरत उछाहैंहैं ॥ विधि विधिताई त्यागि वामदेव भयो चाहैं शंभुताजि शंभुता वशिष्ठहोनचाहैंहैं ॥ ६ ॥

दोहा--राम जन्मते प्रथमहीं, लीनी विरचि विरंचि ॥
चहूँ बंधुकी पत्रिका, धरि राखी अति संचि ॥ ७ ॥
सो चतुरानन समय लखि, शेष रहे दिन तीन ॥
चारु चारिहूं कुंडली, सुरगुरुके कर दीन ॥ ८ ॥
कही विधाता देव गुरु, ये पत्री सुखदाय ॥
शुभ दिन आज वशिष्ठको, देहु अवधपुर जाय ॥ ९ ॥
सुर मंत्री सुनि मुदित ह्वै, चले अवध चित लीन ॥
वेगि आय वर पत्रिका, चहूं वशिष्ठहि दीन ॥ १० ॥
पितु विरचित लखि कुंडली, अति वशिष्ठ हुलसाय ॥
सुर गुरु संयुत वेगहीं, अविलोकत चितलाय ॥ ११ ॥

कुंडलीवर्णन–घनाक्षरी कवित्त।

चैत सित नौमी सोम नषत पुनर्वसू है शूल योग, कौलव करण शुभकारीहै ॥ कर्कहै लगन तहां सोहैं गुरु चंद्र दोऊ शनिहैं तुलाके धन केतु रिपुहारीहै ॥ भौमहैं मकर मीन क्रक्र मेष भानु देख मिथुन परेहैं बुध साथ तम भारीहै ॥ रसिकविहारी राम कुंडली अनूप ऐसी विशद विचित्र या विधाता निरधारीहै ॥ १२ ॥

दोहा--भरत जन्म ग्रह रामतें, ध्रुव न्यारे ध्रुव एक ॥
यह विभेद सो जानिहैं, जिनके विमल विवेक ॥१३॥
चैत शुक्ल दशमी नखत, पुष्य भौम दिन जान ॥
गंड योग तैतिल करण, भरत सुजन्म प्रमान ॥ १४ ॥
राम धर्म सो भरत तन, खेचर एक समस्त ॥
भरत कुंडली कल कलित,विधि इमि लिखी प्रसस्त१५॥
पुनि लछमन रिपुदमनको, जन्म येकही संग ॥
याते एकहि लग्न ग्रह, एक पांचहू अंग ॥ १६ ॥
चैत शुक्ल एकादशी, अश्लेषा बुधवार ॥
वृद्धियोग गर करणमें, दुहू जन्म निरधार ॥ १७ ॥
लषण शत्रुहन लग्न ग्रह, राम सरिस सब ठान ॥
चहूं कुंडली याहि विधि, विधि विरचित शुभ दान ॥१८॥

अथ श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जन्म कुंडली ॥

श्रीरामचंद्रजीकी कुंडली ।
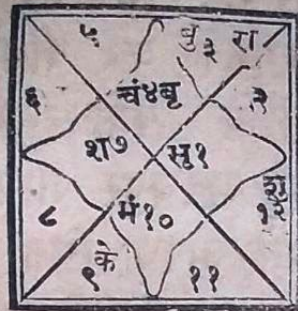
श्रीभरतजीकी कुंडली ।

श्रीलक्ष्मणजीकी कुंडली ।

श्रीशत्रुघ्नजकि कुंडली ।

दोहा—विधि विरचितवर पत्रिका, विशद विचित्र ललाम ॥
लखि वाशिष्ठ सुरगुरु सहित, मुदित सुमिरि उरराम ॥ १९ ॥

हरिगीतिका छंद ।

इमि राम जन्म उछाह औसर जानि सुर नर मुनि चहूँ ॥
छाये अवधमें आय भौन विहाय डोलैं जहँ तहूँ ॥
इहि भांति भारी भीर महि आकाश बिच अवकासना ॥
सविलास सकल सुपास हृदय हुलासको उहिरासना ॥ २० ॥
सजि अंग आनन विविध जानन वर विमानन राजहीं ॥
सुर नाग नर गंधर्व यूथन यूथ बहु छबि छाजहीं ॥
आयो सु औसर अमल अनुपम अवधपति अनुरागको ॥
फल पर्म धर्म सुकर्म संतत भागको अरु जागको ॥ २१ ॥
दुख दवन खल दल सवन भक्तन अवन हिय हुलसायकै ॥
सुख छवन जन मन रवन दशरथ भवन प्रगटे आयकै ॥

औचक उजास विकास विमल प्रकाश दश दिग आसभो ॥
तिहुँ भास भो महि खासभो अहिवासभो आकाशभो ॥ २२ ॥
तिहि देखि शेष महेश अरु अमरेश अति चित चकितभे ॥
सब देश सहित नरेश भेस दिनेशह्वै थिर थकितभे ॥
नहिं शेष कहुँ तम लेश सकल कलेश गो असुरेशमें ॥
रसिकेश रूप रमेश मोद प्रवेशभो अवधेशमें ॥ २३ ॥
पुनि सबहि जानो हर्ष मानो राम रूप प्रकाशभो ॥
जै जैति अवध किशोर शोर त्रिलोक सहित हुलासभो ॥
नभ जाय देव बजाय दुंदुभि सुमन झरि बहु लावहीं ॥
पुनि आय कौशल नगर लखि सुखदाय आनँद पावहीं ॥२४॥
गंधर्व किन्नर कराहिं गान सु अप्सरा गण नाचहीं ॥
सब अंग पूर उमंग ढंग अभंग रंग सुराचहीं ॥
सुत मुख विलोकत कौशलाके हीय सुख न समात है ॥
मानहु निहारि मयंक पूरण सिंधु अति उमगातहै ॥ २५ ॥
नृप नारि सब सानंद अति मुख चंद लखि रघुचंदको ॥
मणि वसन भूषण वारि परसाहिं अंग सुत सुख कंदको ॥
दासी जुखासी दासि दासी तेउ सुवन निहारिकै ॥
पावैं सु औरहु वारि डारैं वित्त वित्त बिसारिकै ॥ २६ ॥
तिहि समय दशरथ राज हियको अमित सुख को कहि सकै ॥
है अकथ वरनन न जाहि वरनत शारदा रसना थकै ॥
जिहि भाग्य प्रभुता हेरि लघु लागत विभव सुरराजको ॥
तिहुँ लोक पति भौ पुत्र सो महाराज सम है आजको ॥ २७ ॥
सब अवधवासी सुकृतरासी हिय हुलासी धावहीं ॥
आनन्द भरि भरि दान करि करि अमित वित्त लुटावहीं ॥
प्रति सदन शोभित हेमकुम्भ पताक वन्दनवार हैं ॥
वर नारि गावहिं सोहिले बहु होत मंगलचारहैं ॥ २८ ॥
बहु भीर भारी भूप द्वार खुले भँडार अपार हैं ॥
जन देत दान यथेच्छ लेत सु देत सकल उदारहैं ॥

चहुँ नृत्य गान अनूप अगणित बाजने बहु बाजहीं ॥
छायो सु दुंदुभि शोर मानहुँ घोर घन घन गाजहीं ॥ २९ ॥
आनंद परमानंदके मधि और महदानंद भो ॥
सुत तीन प्रगटे बहुरि रघुवर बंधुवर निरद्वंदभो ॥
है एक राम समान श्याम जु दोय और सुरूपहैं ॥
तनु तेज शोभा सरस चारहु सुवनपरम अनूपहैं ॥ ३० ॥
सुललाम सब सुखधाम शोभित कौशला सुत रामहैं ॥
छबि मन हरत बहु भरत कैकेयी सुवन अभिरामहैं ॥
द्वै पुत्र लछमन शत्रुहन सुठिहैं सुमित्राके भले ॥
तिहुँ कल्पलतिकामे यथोचित सरस फूल मानहु फुले ॥ ३१ ॥
चहुँ बाल सुंदर तदपि सबते सरस शोभा रामकी ॥
जिहि निरखि लागत चंद मंद लाग छबि शत कामकी ॥
सुनि जन्म उत्सव अवध आवैं देव दशरथ द्वारपै ॥
अति होत मोद विनोद भारी भीर भूप अगारपै ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

प्रगटे अनूप पुत्र चारि अवधेश जूके जैजैकार जोर चहुँ ओर सोरहै उतंकु ॥ भारी भीर भूप द्वार भवन भँडार खुले दान भो अपार कोऊ जगमें रहो न रंकु ॥ दिवस भयो सो येक मासको अभूत हेरि रसिक विहारी गुणी गणक गनैंहैं अंकु ॥ रंचहु न पावैं भेद अधिक अचंभा जानि हेरि हेरि भानु फेरि फेरि कै मिलावैं संकु ॥ ३३ ॥

दोहा—भयो अमित आनंद चहुँ, प्रगटे चारि कुमार ॥
किये विधान अनेक वर, लोक वेद अनुसार ॥ ३४ ॥
छठी दिवस उत्सव महा, भयो यथोचित जान ॥
भूप भवन रनिवास मधि, अति अनंद उमगान ॥ ३५ ॥
सो०—अमित नारि नर वृंद, साजि साजि वर साज बहु ॥
आवहिं अतिसानंद, राम बधाई हित हरषि ॥ ३६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

नीर भरे विशद विचित्र कुंभ कंचनके शोभित सपल्लव सदीप शीशधारेहैं ॥ थार वर वानिक जड़ाऊ मणि माणिकके लीने साज

मंगल जे पूरित सँवारेहैं ॥ रसिकविहारी सुख दैनी गुणऐनी तीय नख शिख अंग शुचि सकल सिंगारेहैं ॥ मंजु मृगनैनी पिकवैनी कल गान कीने वृंद वृंद आवैं नित कौशिलाके द्वारेहैं ॥ ३७ ॥

दोहा—इमि एकादश दिवस जब, बीते सहित हुलास ॥
नामकरन हित सकल जन, जुरे आय रनिवास ॥ ३८ ॥
तब वशिष्ठ शुभ समय लखि, भूपति रुचि अनुसार ॥
अर्थ सहित चहुँ सुतनके, कीने नाम उचार ॥ ३९ ॥
बहुरि चारिहू सुतनके, विधि विरचित ग्रह जोय ॥
सविधि पुजाय नृपाल युत, सबहि सुनाये सोय ॥ ४० ॥
ग्रह फल सुनि प्रमुदित नृपति, सहित सकल रनिवास ॥
दोऊ गुरु द्विज वृंद युत, पूजे सहित हुलास ॥ ४१ ॥
पुनि आनंद उछाह अति, दान मान बहु कीन ॥
पाय एकतेः एकसो, अपर एक इक दीन ॥ ४२ ॥

सो०—जैसो दान अपार, देत नृपति सुत जन्म सुख ॥
ताहूते अधिकार, होत सकल रनिवास नित ॥ ४३ ॥
इत नृप उत नृप नारि, पुर परिजन सेवक सखा ॥
निज निज वित्त बिसारि, करत दान सब मानयुत ४४
नृपदशरथ सजिसाज, करी सभा आनंदमय ॥
राजैं सकल समाज, यथा उचित मर्यादयुत ॥ ४५ ॥
देश देशके भूप, आये रघुवर जन्म सुनि ॥
सब सोहैं सुठि रूप, अवधनाथ दरबार बिच ॥ ४६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

कौशलाधिराज सोहैं सहित समाज साज राजैं द्विजराज दोऊ विधिसे महेशसे ॥ मंत्री वसुवेस देश देशके नरेश चहुँ लखत निदेश देश शोभित सुरेशसे ॥ रसिकविहारीहैं धनेशसे धनेश कोऊ शेष शेष रोष तोष कारक जलेशसे ॥ दशरथ राज महाराजकी सभामें भूप भ्राजत वनेशसे गनेशसे दिनेशसे ॥ ४७ ॥

सो०—या विधि अवध नरेश, विशद सभा बैठे रुचिर ॥
राजत मनहुँ रमेश, देवमंडली मध्यमें ॥ ४८ ॥
नृत्य गान रसरंग, होत कुतूहल विविध बहु ॥
सब उरभरे उमंग, राम जन्म आनन्द अति ॥ ४९ ॥
ताही छिन तहँ आय, द्वारपाल कीनी विनय ॥
सादर शीश नवाय, महाराज अवधेशसों ॥ ५० ॥
राजराज महाराज, विविध अपूरव कौतुकी ॥
सुनि प्रभु सुयश दराज, आये उत्तरदेशते ॥ ५१ ॥
जो तिन होय रजाय, तौ इत सकल सुआवहीं ॥
राज दरश वर पाय, निज इच्छित फल सो लहैं ५२॥
द्वारपालके बैन, सुनि भूपति आज्ञा दई ॥
आवैं सब गुणऐन, दरशावैं निज निज कला ॥ ५३ ॥
द्वारपाल हरषाय, शीश नाय तहँ जाय तिन ॥
दीनी मुदित रजाय, आये भूपति निकट सब ॥ ५४॥

घनाक्षरी कवित्त।

कोऊ बालरूप वर विमल अनूप अति कोऊ बहु वृद्ध सिद्ध तेज तनु छायेहैं ॥ कोऊ हैं किशोर कोऊ तरुण सजोर कोऊ वसनविहीन कोऊ भूषण सजायेहैं ॥ कोऊ झुकि झूमैं कोऊ गिरि गिरि भूमैं उठैं कोऊ व्यंग्य बोलैं कोऊ नृत्य गीत लायेहैं ॥ रसिकविहारी हेरि कौतुकी अनोखे चोखे सहित समाज राज मंद मुसक्यायेहैं ॥ ५५ ॥

दोहा—लखि भूपहि मुद जैति कहि, सो कौतुकी सुजान ॥
करन लगे लीला रुचिर, तनु धरि विविध विधान ॥ ५६ ॥

अथ कौतुक-शंभु ॥ घनाक्षरी कवित्त।

आयो एक अंबरके मारग दिगंबर ह्वै गावत सुढंग रंग छावत छटानतें ॥ कबहूं दिखावै पंच आनन दुरावै कबौं तीय बनिजावै अरधंगीके नटानतें ॥ रसिकविहारी कबौं खडग त्रिशूल धारी बीर पदचारी भुजा फेरत पटानतें ॥ कबौं प्रगटावै भाल ज्वाल दरशावै व्याल कबौं वारिधारा शुभ्र छोड़त जटानतें ॥ ५७ ॥

वीरभद्र।

वीर बनि आयो एक कौतुकी नरेश ढिग कह्यौ महाराज राज भवन पधारिये॥ रसिकविहारी सुखकारी साज साजे गेह रावरेहीहेत कीनी सकल तयारिये॥अशन धतूर आदि।भूर भांति भांतिनके सरश अभंग भंग नीर मद करिये॥ वृश्चिक विषोर कारे नाग फन वोरे बहु देहों यह भेंटे मेरे संग जो सिधारिये॥ ५८॥

ब्रह्मा।

ताहि छिन दूजो द्विज रूप धरि बोलो वेगि आयो दूरी तेहीं सुनि सुयश प्रतापको॥ वृद्धहों घनेरो पीत केश ममहेरो भूप रसिकविहारी नित्य कारी वेद जापको॥ देखौं आठ नैनते सुनौं मैं आठ श्रौननतें ताहू पै न पायो भेद बूझौं तब आपको॥ औरनके एक मुख मेरे क्यों बनाये चार दीजिये बताय का बिगारो विधि बापको॥ ५९॥

यमधर्मराज।

एक वर कौतुकी सुकीनी है अनूपकला उछलि महीतें नभ मंडल समायगो॥ लैकै संग अमित अनेक जीव जंगमको वेगहि तड़ाक पुनि ताहि ठाम आयगो॥ देखत सभाके ते सु देव भये जंतु सब आपह्वै कराल रूप बहुरि दुरायगो॥ रसिकविहारी फेरि धरिकै सु देश वेश बानिकै नरेश अवधेशहि रिझायगो॥ ६०॥

सनकादिक–सवैया।

आय अनाचक बीच सभा वर बालक चार सुनाचन लागे॥
नाचतहीं तिय रूप भये चहुँ चंचल चारु सु जोबन पागे॥
फेरि विलोकतहीं शिशुह्वै मचले पुनि हंसबने उड़ि भागे॥
देखतहीं रसिकेश नरेश महाअनुराग आनंदमें पागे॥ ६१॥

गणेश–कवित्त।

एक आय बोलो मेरे गेहके चरित्र भूप सत्य सुनिये पै हौंतौ कहत डरातहौं॥ बापहै भिखारी मम माता मतवारी पुनि भ्राता क्रोधकारी तिहुं शोचमें रहातहौं॥ रसिकविहारी महाराज बात भारी और

रावरे समीप सोऊ भाषत लजातहौं ॥ माई सेर भाईहु छसेर पितु पांच सेर आपहींमें थोरो नित्य मन भर खातहौं ॥ ६२ ॥

षट् वदन ।

स्वाँगी एक आय घबरायकै पुकारो धाय धर्मराज तोऊ ऐसो कलह सचोरहै ॥ धावै मात वाहन रिसाय तात वाहन पै त्योंहीं मात वाहन पैं तातहू खचोर है ॥ वाहन हमारो झहराय पितु भूषणपै भूषण पिताको बंधु वाह पैत चोरहै ॥ रसिकविहारी नृप कीजिये निसाफ आप मेरे घर नित्य यह झगरो मचोरहै ॥ ६३ ॥

इंद्र ।

एक कछु बोल ढोल दैकै भूप भौन बीच ओट करि वेगै कलपवृक्ष रचि दीनोहै ॥ रंचक दुराय चिंतामणिको वनायो मेरु रसिकविहारी गुणी परम प्रवीनोहै ॥ हरित तुरंग औ मतंग प्रगटाये सेत फेरो निजरूप फेरि परत न चीनोहै ॥ निरखि अनोखे खेल चोखे परितोषे नृप नीको इंद्र जाली इंद्र जाल जाल कीनोहै ॥ ६४ ॥

नारद ।

बोलो येक आय बात सुनिये अवधराय अनुचित आय पै कहौं हौं सुनि नारीसो ॥ जोई तुव नारी तुव तातकी सुनारी तात तातकी सुनारी तात तात तात नारीसो ॥ फेरि तुव नारी तुव पुत्रकी सुनारी पुत्र पुत्र की सुनारी पुत्र पुत्र पुत्र नारीसो ॥ रसिकविहारी सुखकारिया अशीशभारीभोगौयुग कोटि धर्मधारी वर नारी सो६५इति कौ०

पद्धरीछंद ।

इहि भाँति विशद कौतुक अनेक । सब किये येक पहँ सरस येक ॥
लखि मुदित होय दशरथ नृपाल । दीनी रजाय सेवकनहाल ॥ ६६ ॥
धन धाम ग्राम भूषण अपार । गज बाजि साजि इच्छानुसार ॥
इन सकल कौतुकिन देहु जाय।सुनि कह्यो सकल तिन हर्ष छाय॥६७॥
राजाधिराज कौशल नरेश । हम लहो सकल सुनि नृप निदेश ॥
धन धाम ग्राम कछु चहिय नाहिं।दीजे सु जोय मम हृदय माहिं ॥६८॥
सुनि बैन भूप कछु बिहँसि मंद। बोले सु वाक्य वर भरि अनंद ॥
अभिलाष होय तुव जोय जोय।पूरैं प्रसन्न हम सोय सोय ॥ ६९ ॥

सुनि सकल कौतुकी हर्ष पाय। बोले सुजैति जै अवधराय ॥
तुव पुत्र चारि प्रगटे अनूप। हम सबहिं चहैं तिन दरश भूप॥७०॥
नृप रूप प्रेम कौतुकिन केर। लखि कह्यो गुरुहि करजोरि हेर॥
इन यथायोग लै सबहिं साथ। दीजे दिखाय चहुँ सुवन नाथ॥७१॥
सुनिकै वसिष्ठ लै सबहिं संग। वर उचित रीति संयुत सुढंग॥
छबिधाम चारहु सुत ललाम। दरशाय दये हिय भरि सुठाम॥७२॥
सो सकल कौतुकिन हेरि बाल। किलकैं चलाय कर चरण लाल॥
स्वाँगी सुदेखि शोभित स्वरूप। हिय लई धारि वह छबि अनूप॥७३॥
आनंद मगन ह्वैकै अपार। कीनी सु देव वाणी उचार॥
कहि जैति जैति कौतुकिय वृंद। गवने सु गेह जित तित सुछंद॥७४॥
इमि राम जन्म उत्सव अभंग। चहुँ होत अवधपुर राग रंग॥
नट भाट नर्तकी गण अपार। वर विविध कौतुकी झुंडझार॥ ७५॥
द्विज वृंद और याचक अनेक। गुण मंत्र एकते अधिक एक॥
नित आय आय अवधेश द्वार। निज निज कलान ठानैं प्रचार॥७६॥
ते सबहि यथोचित दान मान। लहि होत हीय आनँद महान॥
लखि नृपति दान प्रतिदिनसुरेश। सकुचात डरत संयुत धनेश॥७७॥

दोहा—अवध नृपतिके दानको, कछू न पारावार॥
शेषहु भाषि सकै न जो, वरणैं युगन हजार॥ ७८॥

घ० कवित्त।

दीने अवधेश ते गयंदनके भार भूमि बार बार झूमै शीश शेषके छिलतहैं॥ रसिकविहारी दान सुनिकै त्रिकूट कूट कंचन रजत मेरु शंकते हिलतहैं॥ संकलप नीर भई सरिता गँभीर बहु जिनके प्रवाहना पयोधि पै झिलतहैं॥ खोजहु अखंड नवखंड महि मंडल में एकहु न पुंगीफल तंदुल मिलतहैं॥ ७९॥ अंबरते अंबर दिगंबर वरंवरभो भूषणकी भूषण रहीहै भूषणनको॥ मानको नमान मानको नमान मान देखि सूखनते रूखन मिटोहै रुखननको॥ रसिकविहारी भये रसिकविहारी सबै दूषन विदूषन भयोहै दूषननको॥ दशरथ दानके निदानको निदान यही पूषनते पूषन जनात पूपननको॥ ८०॥

दोहा—याहीविधि नितहोत बहु, दान विधान अपार ॥
लोक वेद कुलरीति मय, सकल मंगलाचार ॥ ८१ ॥
राम दरश हित आवहीं, सुर नर नाग अपार ॥
अवध निवासी रूप धरि, सेवत विविध प्रकार ॥ ८२ ॥
पुर परिजन सेवक सखा, सुर नर सब रतधर्म ॥
कुशल हेतु चहुँ बंधुकी, संतत करत सुकर्म ॥ ८३ ॥
यौंहीं अति आनंदमें, पगे सकल पुर लोग ॥
कहत मुदित अब सफलभो, नेम धर्म जप योग ॥ ८४ ॥
मुदित अयुध्यानगरके, वासी परम सुजान ॥
वर्णत चारहु बंधुके, गुणगण रुचि अनुमान ॥ ८५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

अगम सनेह सिंधु उमगो विलोकि जाहि सज्जन चकोरनके हीय सुख ह्वै गयो॥रानी अनुमोदिनी कुमोदिनी विकासीं मंजु भूप उर भूमिमें प्रकाश आतिहीं छयो ॥ रसिकविहारी पाप ताप तमटारी लोक शोक हर शीतकर शीत करते दयो॥पूरण कलाको शुद्ध प्राची दिशि कौशिलाते स्वच्छ रामचंद्र चारु चंद्रमा उदै भयो ॥ ८६ ॥ मंजुल मृणाली मृदु कौशलादि रानी शुभ्र जिनते प्रगटि रूप अनुपम भासेहैं ॥ लोचन विशाल पत्र कोस हिय मध्य भूरि पूरित पराग कृपा विमल विलासे-हैं ॥ रसिकविहारी भूप धर्म रवि तेज फूले फैली जस गांधि भक्त भ्र-मर हुलासेहैं ॥ अवध तडाग भरो सलिल सनेहतामें राजपुत्र चारु चारिकमल विकासेहैं ॥ ८७॥

दोहा—इहि विधि पुरवासी सकल, नाम रूप गुण गान॥
करत चारहूं बंधुके, धन्य जन्म निज जान ॥ ८८ ॥
अवध वासिनी सकल तिय, नित प्रति हिय हुलसाय ॥
बार बार चहुँ बंधुको, लखैं जाय दुलराय ॥ ८९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

आरती उतारैं कोउ राई नोनवारैं कोऊ नीर फेरि डारैं कोऊ मंत्र-नतें झारैहैं ॥ कोऊ दुलरावैं मलरावैं हलरावैं कोउ चुटकी बजावैं को-

ऊ देति करतोरेहैं ॥ रसिकविहारी भरीं परमप्रमोद नारी सहित विनोद गोद लैकै चुचुकारेहैं ॥ आय आय आनँद उमाय चित: चाय चाय धाय धाय जाय चहुँ बालक निहारेहैं ॥ ९० ॥

दोहा—सकल मातु अवधेश सुत, पुर परिजन समुदाय ॥
निरखत चारहु बंधुकी, बालकेलि सुख पाय ॥ ९१ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

छोटे पद पाणि लाल छोटी आंगुरीहु लाल छोटे नख लाल छोटी रेषा लाल लालहैं ॥ कलित कपोल लाल लोचन ललित लाल अधर अनूप लाल लाल मुख लालहैं॥लाल लाल भूषण वसन तन लाल लाल रसिक विहारी सब साज भौन लालहैं ॥ लाल पालनामें लाल फूलनकी सेज लाल खेलैं नृपलाल लै खिलौना लाल लाल हैं ॥ ९२ ॥ झूलैं मणि मोतिनके झुमका विशाल. तिनैं हेरैं टकलाय हँस फेरि हेरि फूलैंहैं ॥ फूलैं हैं विलोकि बाल चहुँ दिशि जोवैं पुनि होवैंहैं अधीर रोवैं सब सुधि भूलैंहैं॥ भूलैंहैं रुदन जब मातु पय प्यावैं तब बहुरि आनंद ह्वै कलोलनमें तूलैंहैं ॥ तूलैंहैं न या सुखपै कोटि ब्रह्मलोक सुख रसिकविहारी लाल पालने सुझूलैंहैं ॥ ९३ ॥ कौशिला सु कैकयी सुमित्रा आदि रानी सबै एकनते बालन लै एकन झिलावतीं ॥ कोऊ लै उछंग दुलरावतीं उमंग रंग, कोऊ चूमि चूमि मुख मुखसों मिलावतीं ॥ रसिकविहारी मन मुदित हँसावतीं हैं अंगुरी ते कलित कपोलन हिलावतीं ॥ भूषन वसन धन वारिकै लुटावतीं हैं हिय हुलसावतीं यों सुतन खिलावतीं॥९४॥ रसिकविहारी प्यार करि करि राम मात बार बार झंगुली नवीन पहिरावैहै ॥ कबहुं गुलाबी आबी धानी आसमानी कबौं कबहूं गुलाली औ जंगाली सरसावैहै ॥ कबहूं सुरंग श्वेत नारंगी बदामी श्याम कबहूं हरित पीत नील छबि छावैहै ॥ मानो ऋतु पावसमें सजल पयोद श्याम संध्या समै अमित सुरूप दरशावैहै ॥ ९५ ॥ चित्रित कपोल कल कज्जल विलोकि हठि कौशिला हरषि हीय सुत मुख धोयोहै ॥ ता छिनकी शोभा मंजु वरणी नजाय मोपै रसिक-

बिहारी जो अनूप रूप जोयो है ॥ श्याम जल बूँदें, पीत रंगके झंगापै परीं तापै लसो बघना विचित्र गुन पोयो है ॥ मानों नीलगिरिपै बिछायकै बघंबर सो अंबर विहाय बालचंद आय सोयो है ॥ ९६ ॥ कबौं अति रोवैं कबौं निपट अधीर होवैं कबौं नहीं सोवैं टकलायकै निहारैहैं ॥ कबौं नाहिं छीवैं मातु अंचल न पीवैं पय अंकमें रहैं ना पानि पद झझकारै हैं ॥ सुतहि विलोकि जिय जननी विहाल ह्वैके बांधैं जंत्र तंत्र करि राई नोन वारैहैं ॥ रसिकविहारी होयँ मुदित घनेरे जब आयकै वसिष्ठ राममंत्र पढ़िझारैहैं ॥ ९७ ॥ चौकैं चौंकि चौंकि अति रोवैं नाहिं सोवैं रंच होवैहैं अधीर क्षीर पीवतहीं भूलैरी ॥ किलकैं न नेकौ काहू हेरि हिलकैं नहेली निरखि रमैया मो हियेमें दुखहूलैरी ॥ रसिकविहारी मातु कौशिला सहेलिनसों कहैं कोउ लावो झारि लावै गात धूलैरी ॥ कलनापैरैहै एक पल ना भयो धौं काह ललना हमारो आज पलना न झूलैरी ॥ ९८ ॥

दोहा—इहि विधि बीते मासषट, शुभदिन समय निहार ॥
अन्नप्राश नीको विशद, उत्सव भयो अपार ॥ ९९ ॥
भोजन दान विधानको, वरणौं इतो नज्ञान ॥
अकथनीय आनंद सों, बनत कियेही ध्यान ॥ १०० ॥
प्रतिदिन दशरथ भवन जो, उत्सवहोयँ सदायँ ॥
सो शतशेष गणेशपै, रंचहु कहे नजाँयँ ॥ १०१ ॥
नित नित होत अनंद अति, दूनो हृदय हुलास ॥
दूनो नृपसुत तेज बल, संतत करै प्रकास ॥ १०२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

दिन दिन दूनो प्रगटात रूप राघवको दिन दिन दूनो तनु तेज, वरसातहै ॥ दिन दिन दूनो औध मंगल जनात चहुँ दिन दिन दूनो लंक दुख दरशातहै ॥ दिन दिन दूनोहीं सनेह उमगात उर, दिन दिन दूनो नित्त चित्त हरसातहै ॥ रसिकविहारी दिन दूनो अधिकात वित्त दिन दिन दूनो सबै सुख सरसातहै ॥ १०३ ॥ शोभित सुवन चारौ कौशिला महल मध्य विचरत जानु पानि इत उत घेरि

घेरि ॥ गिरत सु भूमि, उठि रोवैं पुनि जोवैं चहुँ आप चुप होवैं एक एकनको गेरि गेरि॥ धूसरित धूरि भूरि पूरित वसन अंग खेलत उमंगते अमंग रंग फेरि फेरि ॥ अति सुख छावैं मात आनंद अघावैं भावैं रसिकविहारी हुलसावैं हिय हेरि हेरि ॥ १०४ ॥ धावत बकैंया ह्वै चिरैया गहिवेको कबौं देखि परछैंया कबौं रोवत डरायकै ॥ कबौं मचलाय भूमि लोटत रिसाय कबौं चारौ भाय खेलैं एक एकन गिरायकै ॥ कबौं प्रतिबिंब मणि खंभन विलोकि हँसै, रसिक विहारी कबौं रहत चुपायकै ॥ जननी निहारि मुख हरषि उठावैं अंक तब हुलसाय रहैं अंक लपटायकै ॥१०५॥ बिथुरी लटूरी मुख सोहैं घुँघुरारी कारी, रुचिर दंतूली दोय लागत पियारीहैं ॥ धूसरित धूरि अंग पूरित उमंग भरे, रसिकविहारी चहुँ बंधु सुखकारीहैं ॥ करत उमाह गहि भीत उठिवेकी फेरि गिरत बहोरि जोर भरत हुँकारी-हैं ॥ सब जननीके जननीके मन मोद हेरि, अवधविहारी खेलैं अजिर विहारीहैं ॥ १०६ ॥

सवैया-कवित्त।

बात कहैं तुतरात हँसात लसै जलजातसों आनन नीको ॥ आँगु-री हात गहात चलात डरात चलैं निरखात महीको ॥ पायँ डगात रुकात लखात सुमात उठातहैं जीवन जीको ॥ ज्योंरसिकेश हिये लपटात त्यौं नेहबढ़ात घनों जननीको ॥ १०७ ॥

दोहा-कबहूँ हठि अचगरि करैं, छिन मचलैं उमगाय ॥
मात भुरावैं जबहिं तब, मौन रहैं हरषाय ॥ १०८ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

लाऊँ मैं मिठैया औ मलैया सो खवाऊं तुमैं आऊँले चकैया झं-झनैया सो सुनाऊँमैं ॥ नाऊँ मैं झपैया दरुपैया जोमँगाऊँ गैया द्वारे है ववैया जोडरैया सो भगाऊँमैं ॥ गाऊँ मैं सुहैया गीत रसिक-विहारी सुनौ दैया जो पपैया रंग रैया सो बजाऊँ मैं ॥ जाऊँ मैं बलै-या कहै मैया जो रमैया तुम सोवो नेक भैया तौ जुन्हैयाको बुला-ऊँमैं ॥ १०९ ॥

दोहा–इहिविधि बालविनोद बहु, करत लखत पितु मात ॥
प्रतिदिन तन बल रूप गुन; अधिक अधिक अधिकात ११०

घनाक्षरी–कवित्त ।

ठुमकि चलैंहैं मातु संग गहि आँगुरी को ठहरैं ठुनकि फेरि मछलि रहैं जबै ॥ कौशला प्रमोद भरि गोदमें उठाय चूमि, अति दुलरावैं सुख पावैं विहसैं तबै ॥ रसिकविहारी नर नारी लखि लालन पै, तन मन प्रान धन वारत रहैं सबै ॥ नितहि मनावै मैया दैया लै धनैयां कर संगतिहुँ भैया मो रमैया खेलिहैं कबै ॥ १११ ॥

सो०–योंही नित प्रति माय, दैव मनावै हुलसि हिय ॥
बड़े भये रघुराय, खेलत बंधु सखान मिलि ॥ ११२ ॥
नारदादि ऋषिराज, ब्रह्मादिक सुरवृंद बहु ॥
राम दरशके काज, गुप्त रूप नित आवहीं ॥ ११३ ॥
निरखत हिय भरि नित्त, सकल सुलक्षण रामके ॥
पुलकित प्रमुदित चित्त, करत परसपर गुण कथन ११४॥
चारहु बंधु ललाम, सखन संग शोभित भले ॥
वर विनोद अभिराम, करत लखत सब मुदित मन ॥ ११५ ॥

घनाक्षरी–कवित ।

हृदय हुलास भरि देवता दरश आश, आवैं बनिभिक्षुक बजावैं द्वार तुन्तुनू ॥ त्योंहीं सुरवामा होय मानुषी अनूपरूप, भूप भौन भीतर सुआय नचैं थुन्थुनू ॥ रसिकविहारी रघुरैया तिहुँ भैया संग खेलैं धाय नूपुर बजाय पाँय छुंछुनू ॥ सब नरनारी हेरि शोभा मनलोभा थकैं व्यापैं अंग अंग अनुराग भई झुंझुनू ॥ ११६ ॥

छोटे छोटे बाल संग लीने करवाल छोटी छोटी ढाल, छोटे तून बान औ कमान हैं ॥ छोटी शीश चौतनी सुरंग अंग छोटे झंगा, कटि पट पीत छोटे छोटे पद त्रान हैं ॥ छोटे कण्ठ कठुला, जलजहार छोटे छोटे छोटी छोटी पैजनीं विराजैं छबिमान हैं॥ रसिकविहारी चहुँ बन्धु चारु छोटे छोटे धाय धाय खेलैं सबै सुषमा निधान हैं ११७
अंगन फटिक भूमि विमल विशाल तहां, चारौ बाल करत कलोल

कल केलैं हैं ॥ लीने धनुबान त्यौं प्रफुल्लित प्रकाश मान जग सुख-
दान करकंदुक सुझेलैं हैं ॥ रसिकविहारी लपटाय रघुराय अंक
तीनौं भाय धाय धाय गल भुज मेलैं हैं ॥ मानौं रतिनाथ ऋतुनाथ
रातिनाथ तिहूँ शुभ्र सरिपाथर सनाथ साथ खेलैं हैं ॥ ११८ ॥

दो०-यहि विधि कौशलराजके, चारहु पुत्र अनूप ॥
विहरत भूपति भवनमें, मुदित मनोहर रूप ॥ ११९ ॥
समै समै सब सविधि वर, सहित वेद कुल रीति ॥
भये अमित उत्साह चहुँ, मुण्डनादि उपवीत ॥ १२० ॥
पढ़ी सकल विद्या निपुन, भये परम गुणमान ॥
चारहु सुत अवधेशके, हैं सब कला निधान ॥ १२१ ॥
धर्म कर्म धारी चतुर, दानी परम दयाल ॥
नीति प्रीति ज्ञाता बली, चारहु दशरथ लाल १२२ ॥
यदपि चारहू बन्धुवर, रूपवन्त मतिवंत ॥
तदपि सबहिते रामको, बल गुण तेज अनंत ॥ १२३ ॥
राम अनन्त अनन्त गुण, सुयश चरित्र अनन्त ॥
नाम एक त्रिभुवन विदित, यौं वरणैं सब सन्त ॥ १२४ ॥
सो कौशलपति पुत्रके, विशद चरित नवनित्त ॥
जनक जननि पुर लोग सब, निरखत प्रमुदित चित्त ॥ १२५ ॥

सवैया-कवित्त ।

कबहूँ गहि बान कमान सजैं, कबहूँ रथ वाजि गयन्द चढैं ॥ कब
हूँ मृगया बन खेलत हैं, लखि मात पिता मन मोद बढैं ॥ कबहूँ पुर
हेरनको निकसैं, चतुरंग अनी चहुँ संगकढ़ैं ॥ रसिकेस लहैं पुर लोग
अनन्द भली विरदावलि वंदि पढैं ॥ १२६ ॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

थर थर कम्पत हैं शेषके सहस्र शीश, दिग्गज अधीर ढारैं भर
भर आंशू अच्छ ॥ गाढ़के वराह डाढ रोपत रुपैन बाढ़ हलत सुमेरु
खल भलत पयोधि मच्छ ॥ दशरथ नंद महाराजा रामचन्द्र जूकी

चमू चतुरङ्ग देखि दङ्ग होत देवरच्छ ॥ रसिकविहारी जबै कढत सवारी तबै, आहि करि कसक कराहि रहि जात कच्छ ॥ १२७ ॥

सवैया-कवित्त।

खौर दिये शिर चंदनकी धनु बान लिये औ कसे कटि भाथै ॥ मत्त गयन्दसी चाल चलैं, छबिसों निरखैं सरयू सरि पाथै ॥ बाल सखा शुचि सेवक वृन्द सुबन्धु लसैं रसिकेशहुसाथै ॥ औध निवासी सबै धनि जो इहि भांति लखैं नितहीं रघुनाथै ॥ १२८ ॥

दोहा-चारहु सुत अवधेशके, संग सखा अभिराम ॥
विचरैं सरयू तीरसो, लखैं मुदित मन वाम ॥ १२९ ॥

सवैया-कवित्त।

ढोटाहैं ये अवधेशक मानों सुबाल मरालके जोटाहैं आछे॥ लाल झँगा शिर चौतनी चारु लसैं कटिमें पट पीत सुकाछे ॥ हैंरसिकेश सु एकहि बैसके संग सखा चहुँ ओरते गाँछे ॥ देखु सखी सुखधाम छटा तिहुँ बंधु ललामहैं रामके पाछे ॥ १३० ॥

दोहा-विशद विनोदी रामत्यों, तीनहु बंधु अनूप ॥
सरयू तट युत सखनके, खेलैं रचि रचि रूप ॥ १३१ ॥
जैसे बल गुण रूप निधि, चारौ दशरथ लाल ॥
संग सखा तैसें सकल, रघुवंशिनके बाल ॥ १३२ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

कोऊ धनु बान धारी, कोऊ तो कृपान धारी, कोऊ शक्ति धारी शूल धारी गदा धारीहैं ॥ कोऊ कुंत धारी वज्र धारी चक्र धारी कोऊ कोऊ खड्ग धारी औ उदंड दंड धारीहैं ॥ यूथप सखान पारी बंधुनकी न्यारी न्यारी ठानैं कला भारी, एक येकन प्रचारीहैं ॥ सरयूके तीर खेलैं सहित उमंग रंग रसिकविहारी संग अवध विहारीहैं॥१३३॥कोऊ लै तुरंग स्याह सबजा सुरंग नील, नुकरा कुमैत लाखी अबलख साजेहैं॥ चालत सुचालैं सहगाम औरु हालैं कोउ धावा कोउ कावा दै लंगूरी कोउ छाजेहैं ॥ कोउ मल्ल युद्धै ठानि रुद्धैंहैं उदंड दंड मुद्गर प्रचंड फेरि कोऊ ताल बाजेहैं ॥ रसिक-विहारी कोउ बाना फेकि पट्टनते कोऊ भल्ल बानाके निशाना घालि

गाजे हैं ॥१३४॥ चीता श्वान जुर्रा कुही बाज बहिरीलै, कोउ चलत अहेरी वर बीरता बखानके ॥ चंद्र कुज भागैं विधि सेनप सुभारती औ दुर्गा पत्र हेरिछोड़ैं पौरुष पषानके ॥ निरखि कृपान बान वाहन सुरेश सती दुरत विहाय बल दशन नखानके ॥ रसिकविहारी अवधेशके कुमार चारु खेलत अहेर बन संयुत सखानके ॥ १३५ ॥

दोहा—कबहुँ चारहू नृप सुवन, संग सखा समुदाय ॥
रचत अनूप सुखेल वर, सरयू तट हुलसाय ॥ १३६ ॥

घनाक्षरी—कवित्त।

बनत रमेश राम, भरत महेश होत, लछमन शेष औ सुरेश शत्रु शालहैं ॥ सखन बनावैं हैं धनेश औ गणेश काहू रचत दिनेश, काहू करैं निशिपालहैं ॥ काहू रूप साजैं कपि रीछ औ निषाद, काहू निश्चर बनावैं काहू काहू मुनि बालहैं ॥ रसिकविहारी इमि ठानिकै अनोखो ख्याल सरयूके तीर खेलैं दशरथ लालहैं ॥ १३७ ॥ काहूको बनाय मच्छ कच्छ जल बोरतहैं, काहूको बराह रूप रचत करालहैं ॥ काहूको बनावैं मृगराज दीह देह धारी काहू लघु रूप कला करत विशाल हैं॥ काहूको बनावैं गौर काहूको बनावैं श्याम, काहूको कलंकी करदेवैं करवालहैं ॥ ऐसे स्वाँग अमित सखानके बनाय हँसैं रसिकबिहारी खेल खेलैं रघुलालहैं ॥ १३८ ॥

दोहा—इहि विधि नित कौशल नगर, विहरत राज कुमार ॥
खेलत खेल अनूप अति, निज इच्छा अनुसार ॥ १३९ ॥
निरखि राम गुण रूप बल, मुदित सकल पुर लोग ॥
चारु चार सुत संग बहु, सखा यथा जिहियोग ॥ १४० ॥
सुर किन्नर आदिक विविध, नरतनु धरि हुलसाय ॥
सखा भये चहुँ बंधुके, अवध आय प्रगटाय ॥ १४१ ॥
ते प्रमुदित रघुकुल विषे, प्रगटे चारु कुमार ॥
सकल सखा नृप सुत चहूँ, वय बल वपु इकसार ॥१४२ ॥
शिशुताते इक संगही, सब सुख भोग विनोद ॥
उचित निरंतर परस्पर, रहत सनेह प्रमोद ॥ १४३ ॥

सखा मातु नृप सुत जननि, यौं जानैं सतभाव ॥
हैं मेरेही सुवन सब, रंच न कछू दुराव ॥ १४४ ॥
चारहु राजकुमारके, मुख्य सखा तिन नाम ॥
वर्णतहौं इनते अपर, अमित सकल अभिराम ॥ १४५ ॥

छप्पय छंद ।

सुंदर १ सेषर २ वीरसेन ३ मणिभद्र ४ निहारौ ॥ तेज रूप५र-सिकेश ६ कलाधर ७ हृदय विचारौ ॥ बाणरूप ८ रसरास९मनो-हर १० और–गुणाकर ॥ ११ ॥ मानद १२ पुनि पत्रीस १३ बहुरि वनपाल १४ गदाधर १५ ॥ रमनेश १६ पद्मकर १७ शीलनिधि १८ रसिकविहारी जानिये ॥ रघुवीर सखा ये अष्टदश अंतरंग पहि-चानिये ॥ १४६ ॥

दोहा–रसिक रसाल १ सुभद्र २ अरु, कमलाकर३श्रुति जात४॥
कुशल ५ जटाधर६वीरमणि७,भरतसखा ये सात१४७
वज्रशाल १ रसमत्त २पुनि, वातप ३ मंडन ४ मानि ॥
बहुरि विहारी५ लषनके, पंच सखा ये जानि ॥ १४८ ॥
चार शत्रुहनके सखा, संतानक १ सुखदान ॥
दमन २ राज रंजन ३ लखौ, चामीकर ४ बलवान॥१४९॥
मुख्य सखा ये जानिये, पुनि इनके स्वाधीन ॥
अष्टोत्तर शत प्रति सखा, यूथप सखा प्रवीन ॥ १५० ॥
प्रति यूथप आधीनहैं, सखा पंचशत जानि ॥
पुनि सेवक सब सखनके, इनते न्यारे मानि ॥ १५१ ॥
अरु चारहु वर बंधुके, सेवक दास अपार ॥
अंतरंग शुचि सुभगतनु, बली प्रवीन उदार ॥१५२॥
सखादास संयुत सकल, तीनहु बंधु ललाम ॥
प्रीति सहित रघुचंदको, सेवतहैं वसु याम॥ १५३॥
बंधु सखा सेवक सबहि, रघुवर युत सनमान ॥
यथा उचित राखत सदा, प्राणहुते प्रिय जान ॥ १५४॥

अथ श्रीरामचंद्रजीके सखानका निर्णय चक्र।

सखानकी संख्या.	सखानके नाम	सखाप्रति यूथप	यूथपप्रति सखा	सर्वयूथपन के सखा	प्रतिमुख्य सखाके स्वाधीन
१	सुंदर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
२	शेषर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
३	वीरसेन	१०८	५००	५४०००	५४१०८
४	मणिभद्र	१०८	५००	५४०००	५४१०८
५	तेजरूप	१०८	५००	५४०००	५४१०८
६	रसिकेश	१०८	५००	५४०००	५४१०८
७	कलाधर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
८	बाणरूप	१०८	५००	५४०००	५४१०८
९	रसरास	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१०	मनोहर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
११	गुणाकर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१२	मानद	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१३	पत्रीस	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१४	वनपाल	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१५	गदाधर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१६	रमनेश	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१७	पद्मकर	१०८	५००	५४०००	५४१०८
१८	शीलनिधि	१०८	५००	५४०००	५४१०८
सर्व	१८	१९४४	९०००	९७२०००	९७३९४४

श्रीभरतजीके सखानका निर्णय चक्र ।

सखानकी संख्या	१	२	३	४	५	६	७	सब
सखानके नाम	रसिक रसाल	सुभद्र	कमला कर	श्रुतिजात	कुशल	जटाधर	वीरमणि	७
सखाप्रति यूथप	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	७५६
यूथपप्रति सखा	५००	५००	५००	५००	५००	५००	५००	३५००
यूथपनके सखा	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	३७८०००
प्रतिमुख्य सखाके स्वाधीं-न सखा	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	३७८७५६

श्रीलक्ष्मणजीके सखानका निर्णय चक्र ।

सखानकीसंख्या	१	२	३	४	५	सब
सखानकेनाम	वज्रसाल	रसमत्त	वातप	मंडन	विहारी	५
सखाप्रतियूथप	१०८	१०८	१०८	१०८	१०८	५४०
यूथपप्रतिसखा	५००	५००	५००	५००	५००	२५००
यूथपनकेसखा	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	२७००००
प्रतिमुख्यसखाके स्वाधीनसखा	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	२७०५४०

श्रीशत्रुघ्नजीके सखानका निर्णय चक्र ।

सखानकीसंख्या	१	२	३	४	सब
सखानकेनाम	संतानक	दमन	राजरंजन	चामीकर	४
सखाप्रतियूथप	१०८	१०८	१०८	१०४	४३२
यूथपप्रतिसखा	५००	५००	५००	५००	२०००
सर्वयूथपनकेसर्व्व सखा	५४०००	५४०००	५४०००	५४०००	२१६०००
प्रतिमुख्यसखाके स्वाधीन सखा	५४१०८	५४१०८	५४१०८	५४१०८	२१६४३२

दोहा—नीति प्रीति मर्याद मय, रामधर्म धुर जान ॥
यथा योग चहुँ बंधुवर, करत काज सुखदान ॥ १५५ ॥
इहि विधि चारहु नृप सुवन, भये समर्थ सुरूप ॥
पितु ढिग सकुचे रहत अति, सो लखि प्रमुदितभूप ॥१५६॥
निरखि चतुर्दश वर्षके, सुत चारहू अनूप ॥
सकल साज मय भवन वर, चहुँन दये तब भूप ॥ १५७ ॥
रंग भवन रघुचंदको, खचित रचित मणि जाल ॥
रूप भवन शुचि भरतको, सुंदर विमल विशाल ॥१५८॥
क्रांति भवन वर लखनको, विशद प्रकाशित धाम ॥
चित्र भवन रिपुदमनको, अमल अधिक अभिराम ॥१५९॥
निज निज भवन सखान युत, रीति सहित नृप नंद ॥
हास विलास निशंक उर, करत सदा सानंद ॥ १६० ॥
पगे परसपर प्रेममें, यदपि चारहू भाय ॥
राम लषण रिपुहन भरत, तदपि मिले अधिकाय ॥ १६१॥
तिहूँ बंधू निज सखन मिलि, संयुत प्रीति प्रतीति ॥
सेवहिं श्रीरघुवीरको, सहित धर्म नृप नीति ॥ १६२ ॥
इहि विधि दशरथ राजके, चारहु कुँवर सुजान ॥
सबहि देत आनंद अति, दान ज्ञान सनमान ॥ १६३ ॥
मातु पिता पुर लोग अरु, सकल लोक नरनारि ॥
मुदित होत चहुँ बंधुको, बल गुण रूप निहारि ॥ १६४ ॥
कवि कोविद नट नर्तकी, जे जग गुणी अपार ॥
राम निकट सब आवहीं, पावहिं बहु सतकार ॥ १६५ ॥
द्विज मुनि संत गुणीनकी, सभा करत नित राम ॥
इहि विधि कौशल नगरमें, रहत मोद वसु याम ॥ १६६ ॥
सुर ब्रह्मादि प्रशंसहीं, अवध जननको भाग ॥
धन्य धन्य जे रामके, पगे परम अनुराग ॥ १६७ ॥

इति श्री० रामर० द्वि० वि० श्रीरामजन्म वर्णनो नाम चतुर्थोवि० ॥ ४ ॥

चौपाई-एक समय नारद हुलसाये ❀ विचरत अवध नगरमें आये ॥
राम दरश लालसा उरधारे ❀ प्रमुदित रंग भवन पग धारे ॥१॥
सखन सहित तहँ चारहु भाई ❀ हास विलास करत हरषाई ॥
मुनिहि निरखि सब उठि पग वंदे ❀ किये उचित सतकार अनंदे॥२॥
समय प्रसंग सरिस बहु गाथा ❀ कहत परसपर मुनि रघुनाथा ॥
पुनि नारद बोले मतिधीरा ❀ हौं कछु कहौं सुनौ रघुवीरा ॥३॥
जक्त माहिं क्षत्रिय सब जेते ❀ सुर द्विज धेनु पाल बहु तेते ॥
तिनहूँ महँ पुनि जे रघुवंसी ❀ धर्मसिंधुते परम प्रशंसी ॥ ४ ॥
तिनहूँ महँ पुनि अवध नरेशा ❀ भये एकते एक सुदेशा ॥
नृपति चक्रवर्त्ती धुर धीरा ❀ दान धर्म दाया रणवीरा ॥ ५ ॥
तुव कुलके अपार गुण गाथा ❀ मैं वरणौं कहँलग रघुनाथा ॥
कहौं कछू रघु नृप प्रभुताई ❀ सुनहु सबंधु राम मन लाई॥६॥
भये चक्रवर्त्ती रघुराजा ❀ कियो धर्म संयुत बहु राजा ॥
तिहूँ लोक नृप आज्ञाकारी ❀ एंक चक्र बल निर्भय भारी ॥७॥

दोहा-एक समय रघु भूप बन, विचरत करत अहेर ॥
संग स्वजन छूटे सकल, भ्रम कानन मग फेर ॥ ८ ॥
ग्रीषम ऋतु पुनि मध्य दिन, क्षुधित तृषित अति भूप ॥
तहां नहीं जल फल कहूँ, विहबल भये बिरूप ॥ ९ ॥
ताछिन औचकहीं तहां, आयो यक बनपाल ॥
तिहि बिलोकि ढिग टेरिकै, निज गति कही नृपाल ॥ १० ॥
सो सुनि वेगहिं विपिनते, लायो कंद अनूप ॥
तिहिं भोजन करि तृप्तह्वै, मुदित भये अति भूप ॥ ११ ॥
रघु प्रसन्न बोले बनप, माँगु जु तो रुचि होय ॥
मौन रहो मुसक्याय सो, भूपति मुख दिशि जोय ॥ १२ ॥
पुनि बोले नृप माँगु जो, अबहिं देउँ तुहि सोय ॥
सोरिसाय भाषी महा, दुस्तर दैवो होय ॥ १३ ॥
दै न सकौ जो हम चहैं, काह तिहारे पाहँ ॥
सुनि सकोप तब नृप कही, माँग जु तो मन माहँ ॥ १४ ॥

सो अनखाय रिसायकै, बोलो महा उदार ॥
याही छिन इहि ठौर मुहि, स्वर्ण देहु शतभार ॥ १५ ॥
चकित भये नृप सुनतही, कीनो हृदय विचार ॥
अब याही छिन विन दिये, धर्म सुयश हो छार॥ १६ ॥
करि विचार भूपति तुरत, लै अनामिका रक्त ॥
तृणते पत्र सुपत्रपै, लिखो हाल कछु व्यक्त ॥ १७ ॥
बाण बाँधि तिहि धनुष धरि, छोडो वेगि नृपाल ॥
सो शर जाय कुबेर ढिग, पहुँचो अतिहि उताल ॥१८॥
लखि धनेश वह पत्र द्रुत, लै सुवर्ण बहु भार ॥
नभ मंडलह्वै भूप ढिग, वरसो आय अपार ॥ १९ ॥
चारि दंड नभते भई, वरषा हेम अखंड ॥
बनप गिरो नृप चरण पै, देखि प्रताप उदंड ॥ २० ॥
समाधान करि भूप अति, सकल कनक तिहि दीन ॥
चढ़ि तुरंग मग बूझिकै, बेगि पयान सु कीन ॥ २१ ॥
ऐसे रघु गुण अमितहैं, एक एक अधिकाय ॥
पुनि प्रताप कछु औरहू, कहौं सुनौ रघुराय ॥ २२ ॥

चौ०-एक समय लंकापति रावन ❋ धरि द्विज रूप अनूप सुहावन॥
आय अवध लखि अति हरषायो ❋ पुनि रघुके रनिवास सिधायो२३
रघुरानी बहु तियन समेता ❋ सुखयुत बैठीं मुदित निकेता ॥
तहँ लंकेश विप्र तनु धारी ❋ गयो विलोकि उठीं सब नारी२४
द्विज वर जानि सकल शिर नायो ❋ हेम सिंहासन वेगि धरायो ॥
सो प्रतापमय रघु नृप केरा ❋ जटित अमोल रत्न चहुँ फेरा२५
तेजमंत सिंहासन भारी ❋ तापर दियो द्विजहि बैठारी ॥
बैठतहीं सब छल प्रगटाने ❋ दश शिर बीस भुजा दरशाने२६
सो देखत भागीं सब बाला ❋ धाय धसीं गृह अतिहि विहाला
सोडरि उठि द्विज तनु पुनि कीनो ❋ रावण चलो कोऊ नहिं चीनो२७
इत सब तीय हीय भय पैठी ❋ दै कपाट शंकित चुप बैठी ॥
उत दशमुख कछु डरपि लजायो ❋ पुनि धरि धीर भूप ढिग आयो२८

ताछिन सरयू तट रघुराजा ❀ करत हुते संध्या शुचि साजा ॥
द्विज लखिकै सादर बैठारो ❀ करन लगे पुनि कृत्य सुखारो ॥ २९ ॥
औचक संध्या करत नृपाला ❀ कियो आचमन अतिहिं उताला ॥
पुनि करलै जल दर्भ सक्रोधा ❀ दक्षिण दिशि घालो नृप योधा ॥ ३० ॥
पुनि आचमन कीन रघुराई ❀ करन लगे संध्या चित लाई ॥
सो न भेद रावण कछु जानो ❀ चकित चित्त अति जिय अकुलानो ३१
करै कल्पना अमित सुरारी ❀ बैठो चकित मौन मनमारी ॥
जब नृप सुचित भये करिनेमा ❀ तब बूझी विप्रहि सब क्षेमा ॥ ३२ ॥
दै अशीश कहि कुशल बहोरी ❀ दशमुख बोलो नृपहि निहोरी ॥
महाराज जो दर्भ चलायो ❀ सो गुण श्रवण हेतु हुलसायो ३३ ॥
तब नृप कही बात कछु नाहीं ❀ लंका ढिग इक धेनु चराहीं ॥
तिहि भक्षण धायो बनराई ❀ सो सुरभी मो दई दुहाई ॥ ३४ ॥
हतो केहरी गाय बचाई ❀ या हित कुश घालो अतुराई ॥
सुनि विस्मितह्वै शोक दुरायो ❀ पुनि अशीशदै भवन सिधायो ॥ ३५ ॥
वेगि जाय सोई गति पेखी ❀ मृतक सिंह सुरभी मुद देखी ॥
ह्वै सशंक अति आतुर धाई ❀ सकल कथा निज तियहि सुनाई ३६
मंदोदरी सुनत अकुलानी ❀ कही कंत सब लंक नशानी ॥
रघु प्रताप तुम रंच न जानो ❀ तिहि गृह माँहिं जाय छल ठानो ३७
तब दशकंठ कही बिलखाई ❀ प्रिया कहा अब करौं उपाई ॥
जाते बचै प्राण परिवारा ❀ नृपति चक्रबल प्रबल अपारा ॥ ३८ ॥
तब मयसुता उपाय विचारी ❀ पतिहि संगलै भवन सिधारी ॥
तहाँ जाय इक पीठ धरायो ❀ ताहि हेठ रावणहिं दुरायो ॥ ३९ ॥
निपट नग्नह्वै वसन विहाई ❀ बैठी ताहि पीठपर आई ॥
करन लगी मंजन मिसधारी ❀ अतिहि सभीत दुहूँ पति नारी ॥ ४० ॥
इत रघु भूपहि महल बुलाई ❀ तियन दशा निज सकल सुनाई ॥
जानो दशमुख छल महिपाला ❀ भये क्रोधवश लोचन लाला ४१ ॥
तुरत भूप शुचि नीर मँगायो ❀ लै मंत्रित करि भूमि गिरायो ॥
तहँ महिते इक शर तनुधारी ❀ प्रगट भयो नृप आज्ञाकारी ॥ ४२ ॥

अति सकोप नृप दई रजाई ❀ लंकहि जाय वेग बल छाई ॥
बीसहुकर दशकंधर केरे ❀ बाँधि अबहिं आनौ मम नेरे॥४३॥
पायरजाय बाण करि कोहा ❀ गयो लंक रावण चहुँ जोहा॥
तिया भवन पत्री दृढ़ जानो ❀ नग्न नारि लखि हिय सकुचानो४४॥
रोको द्वार शोर करि भारी ❀ कह्यो आव इत दुष्ट सुरारी ॥
लखि कराल शर कंपहि लंका ❀ भये निशाचर सकल सशंका४५
करत विचार बाण अकुलाई ❀ नग्न नारि देखौं किमिजाई ॥
पट धारे तिय जबहिं अन्हाई ❀ तब हौं गहौं रावणहिं धाई॥४६॥
इहि विधि गुणत भई बहु बारा ❀ उठत नहीं रजनीचर दारा ॥
इत विलंब लखि भूप रिसाये ❀ तीन बाण पुनि कोप पठाये४७॥
तेऊ जाय नग्न लखि नारी ❀ रुके द्वार चहुँ क्रोधित भारी ॥
तिनहुँ गये अति भयो विलंबा ❀ तब रघु कीनो कोप कदंबा ४८॥
सप्त बाण पुनि बोलि नृपाला ❀ दीनी तिनहिं रजाय कराला ॥
बाण सहित रावण गहि आवो ❀ कै लंकहि उखारि इत लावो ४९॥
सुनि रजाय सो बाण कराला ❀ गये लंक सब अतिहिं उताला ॥
पुर पहुँचत त्रिकूट चहुँ फेरा ❀ उठी ज्वाल अति भयो उजेरा ५०
भयो सिंधु खलभल महि कंपी ❀ धूरि पूरि लंका सब झंपी ॥
तब मयसुता हीय दृढ़ जानी ❀ अब सब भांति प्राणकी हानी५१
यह विचारि आतुर पटधारी ❀ आय द्वार कहि त्राहि पुकारी ॥
तृण दबाय द्विज दुहुँ कर जोरी ❀ विहवल बोली बचन निहोरी५२
हौं रघुराज शरण युत ईशा ❀ बधौ मोहिं आगे यह शीशा ॥
सुनत बैन सब शर अनुमानी ❀ है अवध्य अबला दृढ़ जानी५३॥
पुनि रघुराज शरण कहि टेरी ❀ अब कीजे कह जतन निवेरी ॥
यौं विचारि शर एक उताला ❀ नृप ढिग आय कहो सब हाला५४
सुनि शरमुख तिय बैन सुदीना ❀ पुनि अवध्य अबला दृढ़ कीना ॥
ताहू पै सो शरण पुकारी ❀ सकल बात इमि हीय विचारी५५
तब बोले रघुराज कृपाला ❀ धर्म शरण रक्षण हम पाला ॥
याते चूक क्षमा सब कीनी ❀ अबला जानि अभयातिहि दीनी५६

जाहु सकल शर निज निज ठामा ❀ इषु सुनि पुनि आयो तिहिं धामा॥
कहो मानि रघु वचन प्रमाना ❀ लंका त्यागि गये सब बाना ५७
जब सब बाण गये तजि लंका ❀ तब रजनीचर भये निशंका॥
तुव कुल ऐसे बली नृपाला ❀ प्रगटे विपुल सुनौ रघुलाला ५८॥
सो रावण अब सबहिं सतावै ❀ हिये भीति रंचहु नहिं लावै॥
महि निछत्र यों दशमुख जानै ❀ मनमानै अधर्म सो ठानै ५९॥
महाबीर लंकापति रावण ❀ अस्त्र शस्त्र विद अमर सतावन॥
यहिविधिअमितव्यंग्यमुनि भाषी ❀ नारद गिरा राम उर राषी॥६०॥

इति श्रीरामर०ज०वि०रघुचरित्रवर्णनो नाम पंचमोविभागः॥ ५॥

दोहा–पुनि बोले मुनिराजसुत, रावण यदपि प्रचंड॥
तदपि भानुवंशी अधिक, ताहूते वरवंड॥ १॥
जिहि दशमुखको तेज बल, विदित लोक तिहुँ माहिं॥
अति उदंड रघुराज सो, तृणहुँ गिनौं तिहि नाहिं॥ २॥

चौ०–सुनि मुनि मुख लंकेश प्रशंसा ❀ हँसि बोले रवि कुलअवंतसा॥
कहिय कछू रावण कर गाथा ❀ तब भाखी नारद ऋषिनाथा३

दोहा–सुनौ राम रावण प्रगटि, प्रथम महातप कीन॥
ह्वै प्रसन्न करतार तिहि, परम प्रबल वर दीन॥ ४॥
नर बानर तजि सबहिंते, भयो अवध्य सुरारि॥
परम प्रचंड उदंड चहुँ, कीनी विजय प्रचारि॥ ५॥
लंका बंक कुबेर ते, बरबस लई छुड़ाय॥
सैन कुटुंब समेत तहँ, दशमुख रहै सदाय॥ ६॥
अति उतंकहै लंक वर, बंक निशंक अखंड॥
यातुधानरक्षित सदा, चंड मंड वरिवंड॥ ७॥

घनाक्षरी कवित्त।

खाई सिंधु वितत त्रिकूट शतयोजनको तापै मणि हेममई नगर बसै निशंक॥ बीस दश योजनको आयत वितार जाके, चार दृढ द्वार सबै रक्षित सुवीरबंक॥ अयुत सुलक्ष दश लक्ष कोटि कोटि

शत पूरवादि मध्य जोधा पाहरू विचारौ अंक ॥ रसिकविहारी साज अपर अपार भूरि चमू चतुरंगहै अभंग यौ उतंक लंक ॥ ८ ॥

दोहा—पुनि दशमुखके त्रासते, बहु सुर मुनि गंधर्व ॥
जाय जाय लंका सदा, सेवतहैं तिहि सर्व ॥ ९ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

वेद धुनि छावैं विधि ग्रहन बतावैं गुरु शारदा बजावैं बीन, गंधरव गावैंहैं॥सदन समीर झारैं वरुन सुनीर ढारैं चंद्र छत्र धारैं, भानु चँवर चलावैंहैं ॥ अनल सुपाककारी द्वारपाल दंडधारी, देव त्रिपुरारी आय प्रातहि पुजावैंहैं ॥ रसिकविहारी तेज भारी यौं दशाननको अमररसं-शकयातें लंक नित जावैंहैं ॥ १० ॥

दोहा—परम प्रतापी अति बली, ऐसो निश्चरराय ॥
जाय जाय तिहुँ लोक चहुँ, विजय करी हरषाय ॥ ११ ॥

चौ०—अति वरिवंड उदंड सुरारी ❁ सुर नर नाग सबहिं दुखकारी॥
धाय धाय तिहुँलोक मँझारी ❁ हरी अमित वरबस वर नारी १२
पुनि कुबेरको धर्षित कीनो ❁ पुष्पकवर विमान हरि लीनो॥
मेघनाद तिहि सुत बलवाना ❁ सो सुरपतिहि जीति हरषाना १३

दोहा—याही विधि दशकंठ बहु, करै सदा उतपात ॥
पै तिहि बल गुण तेजते, सुर नर नाग डरात ॥ १४ ॥
एक समय कानन विषे, होत रहो वर जाग ॥
सकल अमर बैठे तहां, लीने निज निज भाग ॥ १५ ॥
ताही छिन तहँ लंकपति, आयो अति बलवंत ॥
दूरहिते तिहि देखि सुर, जहँ तहँ भगे तुरंत ॥ १६ ॥
निज निज तनु सुर गुप्त करि, धरे औरही रूप ॥
देव चरित सो रंचहू, लखो न निश्चर भूप ॥ १७ ॥
धरो सुरेश मयूर वपु, धर्मराजभे काग ॥
सरठ कुबेर सुहंसहै, वरुन दुरे इमि भाग ॥ १८ ॥

चौ०—इहि विधि सब रावण भयभारी ❁ दुरे रहे सुर निपट दुखारी ॥
जब दशकंठ गयो ध्रुव जाने ❁ सकल देव तब अति हरषाने १९

है निशंक निज निज तनु धारे ❀ परम प्रसन्न सुबैन उचारे ॥
जो सुर जाहि सुरूप दुराना ❀ ताहि दियो सो वरवरदाना ॥२०॥
मोरहि कही इंद्र हुलसाई ❀ रहौ व्याल ते अभय सदाई ॥
सहस नैन जिमि मो तनु माहीं ❀ तिमि तुव पक्ष चिह्न दरशाहीं २१॥
नील वर्ण तनु प्रथम तुमारा ❀ पै अब वर प्रभाव विस्तारा ॥
चित्रित पंख वर्ष प्रति पावो ❀ सुंदर रूप अनूप लखावो ॥२२॥

दोहा—धर्मराज तब वायसहिं, वर दीनो हुलसाय ॥
विन वध मृत्यु न होय तुव, रहौ निरोग सदाय ॥ २३ ॥
पुनि जो तुमहिं करायहैं, भोजन विशद बनाय ॥
तिनके सकल कुटुंबि जन, मम पुर तृत रहाय ॥ २४ ॥

सो०—तब कुबेर वर दीन, हर्ष सहित कृकलासको ॥
द्रव्य सहित शिर पीन, रहै अंग कंचन सरिस ॥ २५ ॥

पद्धरीछंद।

वर वरुण दीन हंसहि अनूप। तुव श्याम श्वेत मिश्रित सुरूप ॥
तनु सकल आजते शुभ्र होय। अतिक्रांतिमंत वर विमल सोय२६

चौ०—सुर वरदै निज निज थल आये ❀ दुखी रहत दशमुख भय छाये॥
इमि लंकेश तेज बल भारी ❀ सुनि पुनि मुनिहि कही धनुधारी२७
कहिय मुनीश आजलग रावण ❀ कीने कर्म अनेक अपावन ॥
कहा हेत कितहूँ नहिं हारो ❀ वीर विहीन लोक भो सारो२८॥
तब नारद मुनि कही सुबानी ❀ सुनौ राम धनुसायकपानी ॥
बहुते ठौर पराजय पाई ❀ कहूं बँधो कहुँ गयो पराई॥२९॥
एक बार सो निश्चर राई ❀ लियो जाय कैलास उठाई ॥
तब शिव लखि दशमुख कर दापा ❀ पद अंगुष्ठ वाम गिरि चापा३०॥
दबे बीशहू भुज भूधरतर ❀ रोय कीन बहु वर्ष विनय वर ॥
तब दयालुह्वै छोड़ि दये कर ❀ रावण नाम धरो ताको हर॥३१॥
कियो समर पुनि हरिसे जाई ❀ तहँते दशमुख गयो पराई ॥
सहसबाहुसे सब विधि हारो ❀ वाली कपि तिहिको मद गारो३२॥
पुनि इत अवध माहिं बहु वारा ❀ भिरो आय दशकंधर हारा ॥

इहि विधि अमित बार रघुराई ❀ सो बहु ठौर पराजय पाई ॥३३॥
पै वह निज भुज बल अधिकाई ❀ करत अनीति देव दुखदाई ॥
धर्म कर्म शुभ सकल निवारे ❀ द्विज सुर मुनि गोवृंद सँहारे ३४॥
दोहा—सुनि नारदमुनिके बचन; गर्भित अर्थ प्रमान ॥
बोले दुहुँ कर जोरिकै, दशरथसुत मतिमान ॥ ३५ ॥
चौ०-इमि अपराध रजनिचर कीना ❀ शापहु कोउ कबहुँ तिहि दीना ॥
सुनि बोले नारद हुलसाई ❀ भई शाप सो कहौं बुझाई ॥३६॥
एक समै अभिमान बढाई ❀ मुनिन दई लंकेश रजाई ॥
हौं भूपति ऋषि प्रजा अपारा ❀ दंड भरैं सब वित अनुसारा ॥३७॥
सुनि मुनि सकल कही हम पांहीं ❀ कुश वल्कल मृगचर्म रहांहीं ॥
कंद मूल दल फल नित खांहीं ❀ यह तजि और पदारथ नांहीं ॥३८॥
सुनि लंकापति कोपि सुनाई ❀ दंड न भरैं दंड सो पाई ॥
तब सब ऋषिन क्रोध उर छायो ❀ एक कुंभ अति वेगि मँगायो ३९॥
तामहँनिजनिज रुधिरनिकारो ❀ शोणित भरो सबनि घट सारो ॥
घोर शाप करि शोर सुनाई ❀ यहि घटतें रावण विनशाई ॥४०॥
यों कहि घट भेजो तिहि पासा ❀ हम मुनि करैं विपिनमें वासा ॥
है नाहिं कछू भरैं कह दंडा ❀ नृप आज्ञा अति भई उदंडा ॥४१॥
यातें भरो दंड हम येहू ❀ है मुनि गणको शोणित लेहू ॥
यौं सुनि शाप डरपि लंकेशा ❀ वेगहि दीनो जनन निदेशा ॥४२॥
यह घटलै अति दूर सिधावो ❀ तिरहुत देश माहिं तुम जावो ॥
तहां भूमि खानि खात सुभारी ❀ ताबिच धरौ कुंभ दृढ़कारी ॥४३॥
जातें फेरि न घट प्रगटावै ❀ बहुरि काह यह विघ्न जनावै ॥
सुनिजन जाययुक्तितिमिकीनी ❀ जिमि लंकेश रजायसु दीनी ॥४४॥
दोहा—एक शाप यह मुनिनकी, सो जानौ रघुनाथ ॥
पुनि दूजी गंधर्वकी, भई कहौं सो गाथ ॥ ४५ ॥
एक समय मग जातहो, रावण संयुत सैन ॥
बीच लखो अति रुचिर गिरि, उर आयो तिहि चैन ॥४६॥

ताभूधर पर लंकपति, कियो मुदित विश्राम ॥
तिहि मगह्वै एक तिय कढी, सजे अंग अभिराम ॥ ४७ ॥
नारिहि लखि लंकेश तब, भाषे मंजुल बैन ॥
को सुंदरी अकेलि तुम, कहां चली अधरैन ॥ ४८ ॥
तिय बोली हौं अप्सरा, इत गंधर्व रहात ॥
नल कूबर जिहि नामहै, तिन ढिग मैं नित जात ॥ ४९ ॥
सुनि बोलो ह्वै कामिनी, हौं लंकेश निहार ॥
काह लहौ गंधर्व ढ़िग, मो मिलि करौ विहार ॥ ५० ॥
सो सुनि तिय सब भांति ते, समुझायो लंकेश ॥
सो नहिं मानो रंचहू, ता हिय भयो कलेश ॥ ५१ ॥
ताछिन मदन विहालह्वै, गही तिया भुजबीस ॥
वरबस कियो विहार तहँ, अति निशंक दशशीश ॥ ५२ ॥
सो अप्सरा विहाल बहु, नल कूबर ढिग जाय ॥
रुदन कियो कहि निज दशा, गिरी चरण पर धाय ॥ ५३ ॥
तब गंधर्व सु ध्यान धरि, देखो सत्य सुहाल ॥
जैसो निपट अधर्म हठि, सकल कियो दशभाल ॥ ५४ ॥
ह्वै क्रोधित गंधर्व तब, दई रावणहिं शाप ॥
जाते फेरि न भूलि इमि, करै निशाचर पाप ॥ ५५ ॥
आजहिते परतीय गहि, जो हठि करै विलास ॥
तौ मम शाप प्रभावते, होय लंकपति नास ॥ ५६ ॥
रावण सुनि यह शाप दृढ़, तबहीतें भय मान ॥
गहै नारि पै शंकते, रहै ताहि रुचि जान ॥ ५७ ॥
द्वितिय शाप रावणहिं यह, घोर दई गंधर्व ॥
वेदवतीकी बात पुनि, कहौं सुनौ वह सर्व ॥ ५८ ॥

चौ०—एक समय सजि पुष्प विमाना ❀ बैठि कियो लंकेश पयाना ॥
कन्या विमल बिपिन इक देखी ❀ वर सुंदरि तप रूप विशेखी ॥ ५९ ॥
निश्चरपति आयो तिहि पासा ❀ कहे बैन भरि हीय हुलासा ॥
क्यों सुंदरी विपिन विच डोलौ ❀ कोहौ कहा नाम तुव बोलौ ६० ॥

शुद्ध हृदय निश्शंक सुबाला ❀ बोली विमल सुबैन विशाला ॥
कुशध्वजनाम ब्रह्मऋषि ख्याता ❀ सो मम पिता वेद वर ज्ञाता६१॥
वेद पढतहै मम पितु ज्ञानी ❀ तबहौं तिहि मुखतें प्रगटानी ॥
वेदवती याते मो नामा ❀ अर्थ सहित राखो अभिरामा६२॥
सो मम तात सत्य प्रण धारा ❀ विष्णु संग मो व्याह विचारा ॥
यहसुनिशंभु दैत्यपति कोप्यो ❀ खल मलीन सब धर्महि लोप्यो६३
अर्ध रैनि सो शंभु सिधारो ❀ सोवत मम पिताहि हति डारो ॥
तब मो मात पतिहि लै अंका ❀ जरीअनलअति दुखित निशंका६४
तबते मैं नित हरि आराधौं ❀ पितु प्रण सत्य हेतु तप साधौं ॥
सुनि दशकंठ मुदितह्वै भाखी ❀ यह अभिलाष वृथा हिय राखी६५
मम भामिनी होहु अब बाला ❀ त्यागौ तपहि कलेश कराला ॥
हौं कलेश तिहूँ पुर स्वामी ❀ मो सन्मुखकहँखगपति गामी ६६
सुनि बोली रे अधम सुरारी ❀ कह अधर्म यह बात उचारी ॥
मोदृग ओट वेग खल होई ❀ पातक लगो वदन तुवजोई॥६७॥
सो सुनिरावण अधिक रिसाई ❀ खल तिहि केश गहे वरियाई ॥
ताछिन वेदवती कर हाथा ❀ भयो कृपान सरिस रघुनाथा६८॥
सो कन्या निज कर निजकेशा ❀ छिन्न किये द्रुत पाय कलेशा ॥
पुनि रावण प्रति बहु तप धारी ❀ बोलत भई क्रोध करि भारी ६९॥
रेखल हतौं तोहिं छिन माहीं ❀ पै यह बात उचित मुहिं नाहीं ॥
करौं शाप दै जो अब छारा ❀ तौ नशाय मम तप फल सारा ७०

दोहा—याते हौं पुनि जन्मलै, करौं वेगि तुवनास ॥
यौं कहि वेदवती तबै, कियो अग्निमें वास ॥ ७१ ॥
वेदवती जबहीं क्रुधित, अनल दाह तनु कीन ॥
तबहिं भये दशवदनके, दशहू वदन मलीन ॥ ७२ ॥
येही विधि लंकेशको, भई अनेकन शाप ॥
तऊ रजनिचर मंदमति, करै अमित नित पाप ॥ ७३ ॥
पै अब रावण शीश पै, फिरै काल मडरात ॥
जानि परै ध्रुव वेग सो, सहित कुटुंब नशात ॥ ७४ ॥

याही विधि बहु वार लग, नारद मुनि बहु गाथ ॥
कहे अनेक प्रसंगके, मुदित सुने रघुनाथ ॥ ७५ ॥
राम मुदित कर जोरि दुहुँ, ऋषि पद शीश नवाय ॥
बोले बंधु सखान युत, धन्य धन्य मुनि राय ॥ ७६ ॥
अहो भाग्य मम आज प्रभु, दरश कृपा करि दीन ॥
भयो कृतारथ अतिहि मैं, नाथ सुपावन कीन ॥ ७७ ॥
तब प्रसन्नह्वै मुनि कही, राम सकल गुण धाम ॥
जानत हौ सब हीयकी, हौ परिपूरण काम ॥ ७८ ॥
सुनि नारदके बचन वर, गर्भित अर्थ सहेत ॥
विहँसि राम मुनि पद गहे, बंधु सखान समेत ॥ ७९ ॥
जैति राम कहि मुनि गये, प्रमुदित सबहि सुनाय ॥
रघुवर ऋषिहि प्रशंसहीं, कहि कहि अमित प्रभाय ॥ ८० ॥
येही विधि रघुवंश मणि, नित सज्जन सतसंग ॥
करत रहत विचरत अवध, लखि सब हिये उमंग ॥ ८१ ॥
इति श्रीरामर० ज० वि० रावणवृत्तांत वर्णनोनाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

दोहा–अवध निवासी नारि नर, संयुत नृप रनिवास ॥
चरित चारहू बंधुके, लखि हिय होत हुलास ॥ १ ॥
व्याह योग नृप सुत चहूँ, लखि सब करत विचार ॥
वधुन सहित कब देखिये, सुंदर राज कुमार ॥ २ ॥
सो इत अवध नरेशके, जब जनमे सुत चार ॥
तिहि पाछे मिथिलेश गृह, कन्या भई सुढार ॥ ३ ॥
सीरध्वज मिथिलेशकी, कन्या युगल अनूप ॥
अरु कुशध्वज नृप बंधुकी, दोय सुता सुख रूप ॥ ४ ॥
भूमिसुता मिथिलेश गृह, प्रगट भई जिहि भांति ॥
जन्म कथा तिनकी कहौं, सहित रूप गुण पांति ॥ ५ ॥
चौ०-मिथिला नाम सुमंडल भारी ❀ विदित जनकपुर आनँद कारी ॥
विशद विशाल नगर शुचि सोहै ❀ तिहिं विलोकि सुरलोक विमोहै ६ ॥

तहँ महीप सीरध्वज नामा ❀ तिनके कुशध्वज बंधु ललामा ॥
सो नृप परम धर्म नयनागर ❀ जिहिको यश तिहुँ लोक उजागर ॥७॥
ज्ञानीवर विरक्त भूपाला ❀ परमसंत गुणवंत विशाला ॥
सत्य विदेह देह धर राजा ❀ विमल विवेकी सकल समाजा ॥८॥
सीरध्वज अरु जनक विदेहू ❀ एकहि रूप नाम तिहु येहू ॥
पटरानी नृपकी मति ऐना ❀ धर्म रूप जिहि कहत सुनैना॥ ९ ॥

दोहा–जनक राजके पुत्र वर, बीर विशद गुण रूप ॥
लक्ष्मीनिधि यह नाम जिहि, यश विख्यात अनूप॥१०॥
प्रोहित नृप मिथिलेशके, शतानंद मतिमान ॥
वेद नीति ज्ञाता कुशल, त्रिकालज्ञ शुभदान ॥ ११ ॥
सुत संपति तिय धर्म सुख, सज्जन सहित समाज ॥
जनक नगरमें जनक नृप, करत अकंटक राज ॥ १२ ॥

चौ०–एक समय मिथिलामधि भारी ❀ परो अवर्षण काल दुखारी॥
कालहु पर दुकाल पुनि देखी ❀ चहुँ दिशि पीड़ित प्रजा विशेषी १३
सो कलेश लखिकै नर नाहा ❀ हृदय भयो अतिदारुण दाहा ॥
पूजन दान अनेक प्रकारा ❀ किये अमित मिथिलेश उदारा १४॥
तदपि न कहूँ रंच जल वरषै ❀ प्रति दिन प्रजा नीरहित तरसै॥
तब भूपति सब मुनि द्विज ज्ञानी ❀ गुणी बुलाय सभावर ठानी १५॥
यथा योग सनमानि नृपाला ❀ सविनय बोले बचन रसाला ॥
सबही सुजन कृपा करि हाला ❀ कहिए जतन मिटै जिहि काला १६
वरषै वेगि वारिधर वारी ❀ होय सकल मम प्रजा सुखारी॥
नृपति बचन सुनि सकल दृढाई ❀ यज्ञ भये बिन काल नजाई॥१७॥
यह सुनि दई रजायसु राजा ❀ वेगहि सजौ यज्ञ कर साजा ॥
होय शीघ्र मख सहित विधाना ❀ यथा वेद क्रतु कर्म बखाना १८ ॥
वेद विहित सब साज सजाई ❀ नृप कर महि शोधन विधि आई॥
कंचन हल वर विशद बनावा ❀ यथा उचित द्विज मुनिन बतावा१९
सतानंद आयसु लै राजा ❀ चले मुदित महि शोधन काजा॥
भूपति चलत सगुण वर भारी ❀ भये निरखि सब भये सुखारी२०॥

द्विजन सहित तहँ जाय नरेशा ❀ सविधि कृत्य करि सकल सुदेशा॥
पुनि हल गहिकर जनक सुजाना ❀ महि शोधन अरंभ वर ठाना २१॥
सप्तावृत्त होत हलरेषा ❀ महिगत कुशभो अचल विशेषा॥
सो इल रंच न चलै चलावा ❀ रुको सीत नृप लखि दुख पावा२२॥

दोहा—औचकहीं तहँ भूमिमें, भयो प्रकाश अपार॥
लखि चौंके चित चकितह्वै, सकल लोग इकबार ॥२३॥
पुनि नृप हेरे सीत ढिग, हल रेखा विस्तार॥
भूमि विवर मगह्वै कढी, प्रबल अनल सम झार ॥२४॥

चौ०—बहुरि सीत संयुत इक कन्या ❀ भूदलते प्रगटी अति धन्या॥
नृप विलोकि तिहि धाय उठाई ❀ दीपति दिव्य देह बहु छाई २५॥
अमित तेज तनु भयो प्रकासा ❀ छायो भ्रम दशहू दिग आसा॥
सो विलोकि जहँ तहँ तिहुँ लोका ❀ दौरे विपुल सु होय विशोका२६॥

घनाक्षरी कवित्त ।

पद नख पानि अरु अधर कपोल नैन भ्रुकुटी सुकंठ नाभि एडी औ चरण रेख॥ कंज भानु पल्लव सुबिंब औ मुकर बाण चाप कंबु कुंड फल सरिता अनूप लेख ॥ भौंर कोक कोकिल सुकीर कमला अनंग इंद्र हरि देव वृंद कीस शफरी विशेष॥ रसिक विहारी सिया प्रगटत येते सब भ्रमवश धाये भये चकित सुरूप देष२७

चौ०-कन्या अमल अनूपनिहारी ❀ भयेजनक हिय अतिहि सुखारी॥
आवतही नृप अंक मझारी ❀ रुदन करन लागी सुकुमारी॥२८॥
रुदन शब्द सुनि सब जन धाये ❀ भूपति निकट वेगि ते आये॥
जे मुनि त्रिकालज्ञ वर ज्ञानी ❀ तेउर माहिं सकल गति जानी२९॥
कन्या निरखि भूप कर माहीं ❀ द्विज मुनि सब बोले नृप पाहीं॥
महाराज यह सुता अनूपा ❀ प्रगटी रमा मनौं धरि रूपा॥३०॥
आप भूमिपति भू तुव नारी ❀ महाराज यह सुतातिहारी॥
सीत द्वार महिते प्रगटानी ❀ सीता नाम सुमंगल दानी ३१॥
मुनि बर बचन मुदितह्वै राजा ❀ वंदेसब द्विज संत समाजा॥
नभते सुमन विबुध गन वरषे ❀ चहुँदिशि सकल चराचर हरषे ३२॥

त्रिविध समीर चलो सुखकारी ❀ गिरे मेघ मंडल चहुँ भारी ॥
गगन हेरि सबही हुलसाये ❀ शतानंद तब नृपहि सुनाये३३॥

दोहा—जनकराज तुव सिद्धि भो, सकल काज अब आज ॥
आय गये सुरराज बहु, लीने मेघ समाज ॥ ३४ ॥
वेगहिभवन पधारिये, साज समाज समेत ॥
भूपसुता पग धारिये, आतुर राज निकेत ॥ ३५ ॥
सुनि वर वचन महीप मणि, बहु माणि गण धन वारि ॥
सुता गोदलै हरष युत, आये भवन पधारि ॥ ३६ ॥
सुभग सुनैना सदनमें, गये भूप हुलसाय ॥
सुता दई तिय गोद मधि, परम प्रमोद अघाय ॥ ३७ ॥
महरानी मन मुदितह्वै, सुतालई जब गोद ॥
तब तनुते पय स्रवित भो, बाढो परम प्रमोद ॥ ३८ ॥
ताही छिन चहुँ ओरते, माचि उठे घन घोर ॥
राचि उठे सब रंगमें, नाचि उठे वन मोर ॥ ३९ ॥
वरसन लागे मेघ जल, महि मंडल चहुँ छाय ॥
धारा धर धारा अमित, धारन धरनि समाय ॥४०॥
भई पंचदश जामलों, वरषा अमित अखंड ॥
नीर भूरते पूर महि, चहूँ ओर नवखंड ॥ ४१ ॥
मिथिला मंडल सकलमें, छायो परमानंद ॥
दुख छूटो सबही भये, जड़ चेतननिर्द्वन्द्व ॥ ४२ ॥
प्रमुदित प्रजा विलोकि बहु, सुखपायो मिथिलेश ॥
शोर होत चहुँ ओरते, जै जै जनक नरेश ॥ ४३ ॥
मिथिलापुरवासी सकल, सहित भूप रनिवास ॥
सिया जन्म उत्साह हित, छिन छिन कियो हुलास ॥ ४४॥
पै अपार जल वृष्टिते, उत्सव नीकी भाँति ॥
होत घनो वर तदपिहू, जिय उमंग रहिजात ॥ ४५ ॥
इहि विधि बीते पंच दिन, भूमि स्वच्छ नभ देखि ॥
उमड़ो आनँद जनकपुर, सुर नर मुद चहुँ पेषि ॥ ४६ ॥

सदन सदन प्रति जनकपुर, बीथी पंथ बजार ॥
साजे साज अपार सुठि, होत मंगलाचार ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

चित्रित कराये नव भवन लिपाये रंभ खंभन रुपाये दल अंकुर सुछाये हैं ॥ तोरन बँधाये त्यों वितान तनवाये मंजु ध्वज फहराये हेमकलश धराये हैं ॥ सुमन सजाये चौक मोतिन पुराये मणिदीपक दिपाये बर बाजने बजाये हैं ॥ जनकदुलारी भई प्रगट उछाह भारी रसिकविहारी नर नारी हुलसाये हैं ॥ ४८ ॥ लीने सौंज मंगल सुढंगते शृँगारकीने अधिक उमंग अंग रंग छबि छावैं हैं ॥ गावैं हैं बधाई कोउ आवैं कोउ जावैं चहूँ वृंद वृंद जुरिकै अनंद उपजावैं हैं ॥ रसिकविहारी रनिवास भीर भारी तऊ रुचि अनुसारी नर नारी सुख पावैंहैं ॥ फेरि धन वारैं औ निहारैं मुख फेरि फेरि जनक ललीको हेरि हेरि हुलसावैं हैं ॥ ४९ ॥ मिथिला निवासी सिया जन्मके हुलासी सब परम उपासी काहू प्रेमको नछेह है ॥ अमित उमंगमें अभंग रंग राचे घने रसिकविहारी हीय उमड़ो सनेह है ॥ सुरति न वित्तकी न हित्तकी न चित्तहूकी जानैं हैं न कोऊ कित देह कित गेह है ॥ भाषैं देव देखौ इतै विपुल विदेह वसैं आजलौं सुनी यौं सदा एकही विदेह है ॥ ५० ॥ आईं पाँच नारी धौं कहाँते मिथिलेश भौन भरीं गुण तेज रूप मद प्रभुताईमें ॥ ऋद्धि सिद्धि लक्ष्मी भुक्ति मुक्ति सकुचानी हीय निज सम देखीं वाम विपुल बधाईमें ॥ सकल सुनैना पास जाय परि पाँय बोलीं दासी हमैं कीजे रैहैं रावरी रजाईमें ॥ रसिकविहारी दीनजानि महारानी तिनैं राखी कृपा करिकै सियाकी सेवकाईमें ॥ ५१ ॥

सोरठा—सिया जन्म उत्साह, होत महा आनंद युत ॥
हिय उमँगे नरनाह, करत दान सन्मान बहु ॥ ५२ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

आनँद अथाह सिया जनम उछाह माँह गति नरनाहकी न परत पिछानीहै ॥ औरै दान औरै मान औरै ज्ञान औरै ध्यान औरै प्रीति नीति रीति औरै प्रगटानी है ॥ रसिकविहारी न्यारी उमँग विलोकि भारी सब नर नारी सत्य येही उर ठानी है ॥ कैतो अधिकानी या विदेहकी विदेहताई आजकै विदेहकी विदेहता भुलानी है ॥ ९३ ॥

सोरठा—इत नृप जनक उदार, ज्यों उमँगे आनंदमें ॥
त्यों सिय मातु अपार, दान निछावरि करहिं बहु ॥९४॥
येही विधि दिन रैन, जनकनगर उत्साह नित ॥
लखि पावैं सब चैन छाके, परम प्रमोदमें ॥ ९५ ॥
अमित देव मुनि वृंद, सुरी किन्नरी आदि बहु ॥
दरश हेत सानंद, जनक द्वार नित आवहीं ॥ ९६ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

शतानंद होवैं विधि कौशिक महेश बनै जनक स्वरूप त्यौं सुरेश निज ठानैं हैं ॥ अंग ज्यों कुशध्वजको धारत कुबेर त्योंही, वरुण सुगालवको गात निरमानैं हैं ॥ रसिकविहारी नर नारी देव देवी और वपु विरचैंहैं बहु जैसे मन मानैंहैं ॥ मिस करि आवैं सब सीयके दरशहेत भीरमें न कोऊ भेद जानै ना पिछानै हैं ॥ ९७ ॥ धाय ह्वै सुधात्री धाय धाय पय प्यावैं सदा पद्मा प्रोहितानी ह्वै सुनेग निरवारतीं ॥ किन्नरी नरी ह्वै पुरवासिनी सुगीत गावैं शारदा सुवासिनी ह्वै आरती उतारतीं ॥ रसिकविहारी रूप रचिकै रिझावैं रती जननी सखी ह्वै शची सीतहि शृंगारतीं ॥ अंग उपटावैं नागकन्या नव नायन ह्वै गिरिजा गुसायन ह्वै आय नित झारतीं ॥ ९८ ॥

दोहा—जनकललीके शिशु चरित, रूप अनूप ललाम ॥
पुर परिजन पितु मातु सब, मुदित लखत वसुयाम ॥९९॥

घनाक्षरी कवित्त।

झँगुली सुपीत जरतारी ते जटित मंजु रंग रंग मणिन मढ़ीसो अंग खूलैहै ॥ कारी चिकनारी शीश लटुरीं लखात लोनी शोभित डिठौना भाल सुखमा अतूलैहै ॥ रसिकविहारी सुरनारी पुरनारी

सब लेति बलिहारी हेर हेर हिय फूलैहै ॥ कहति अलीसों अली जनक ललीको देख कमल कलीसी भली पालने सुझूलैहै ॥ ६० ॥

दोहा–निरखि सुता मुख मात नित, करै निछावर दान ॥
पुनि पसार अंचल मुदित, माँगै रुचि वरदान ॥ ६१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

शंभु अभिषेक शुचि सविधि करैहौं सदा गिरिजा पुजैहौं बाल सुदित सुखी रहै॥ मोदक चढैहौं गणराजको घनेरे नित्य रसिकविहारी कबौं रंचन, दुखी रहै ॥ द्विजन जिमैहौं दान देहौं व्रत लेहौं बहु देवी देव ग्रहन मनैहौं सो सुखीरहै ॥ अंचल पसार प्रात उठिकै निहोरे मात मेरी प्राण प्यारी सिया संतत सुखी रहै ॥ ६२ ॥

चौ०–यही भाँति पितु मातु अपारा ❀ करत सुकर्म अनेक प्रकारा ॥
बीते कछुक दिवस तब सीता ❀ खेलैं सखिगण संग पुनीता॥६३॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

छोटे छोटे पाँयनमें पैजनी सु छोटी छोटी नूपुर जु छोटे छोटे रुनझुन बाजैहैं ॥ छोटे छोटे कंकन चुरीहु कर छोटी छोटी, छोटे श्रौन छोटे झूमकाहु छबि छाजैहैं ॥ रसिकविहारी छोटी छोटीही सहेली संग छोटे छोटे भूषन बसन सब साजे हैं ॥ धाय जाय आय माय अंक लपटाय सीय खेलैं हुलसाय, मिथिलेश भौन भ्राजैहैं ॥ ६४ ॥

मंजन कराय माय सकल सजाय अंग भालपै डिठौना दियो रुचिर सुधारिकै ॥ जनकदुलारी किलकारी दै सखीन संग खेलैं धाय धाय मन मुदित निहारिकै ॥ श्रम जल पाय श्याम बिंदुसो वितारभयो हिय हुलसायो मंजु उपमा विचारिकै ॥ रसिकविहारी चंद्र मंडलमें एक ओर बैठो अलिछोना मनो पंखन पसारिकै॥६५॥

दोहा–इहिविधि बाल विनोद बहु, करत सीय सुखदानि ॥
सो विलोकि सुर परस्पर, वचन कहत अनुमानि ॥ ६६ ॥

घनाक्षरी–कवित्त ।

फूलो हिय कंज मंजु रानी कौशिलाको उत महिषी सुनैना इतै नलि- नी विकासीहै ॥ रसिकविहारी धर्मकोकभो विशोक उतै इतहि चकोरी भक्ति अमित हुलासीहै ॥ असुर अनीत शीत भीति उत दूर भई

सकल त्रिताप दाप ताप इत नासीहै ॥ अवध चहूँघा उत छायोहै दिनेश तेज, इत मिथिलामें चंद्र चंद्रिका प्रकाशीहै ॥ ६७ ॥

दोहा–यहि विधि सब सुर मुदित मन, वर्णत सिय गुण रूप ॥
जबते प्रगटी भूमिजा, तबते सुगति अनूप ॥ ६८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

हरष विषाद सुख शोक औ उमंग व्रीडा, कंप तेज जड़ता सुधीर परसावैंहै ॥ देवासुर जनक पिनाक राम सिंधु लंक कीश औ हरीश संत क्रम सरसावैंहैं ॥ रसिकविहारी या अनूप गति सारी हेरि, छिन छिन भारी मोद उर वरसावैंहै ॥ जनकदुलारी प्रगटीहैं तबही ते नित्य शुभाशुभ दोऊ दिन दूने दरशावै हैं ॥ ६९ ॥

दोहा–इहिप्रकार सिय जन्मते, चहुँदिशि होत चरित्र ॥
मनहीं मनते मुदित जे, ज्ञानी परमपवित्र ॥ ७० ॥
जबते प्रगटीहैं सिया, जनकनगरमें आय ॥
तबते सुर मुनि गुप्तह्वै, नित दरशन करिजाय ॥ ७१ ॥
एक दिवस नारद प्रगट, आये जनक समीप ॥
ऋषिहि नाय शिर उचित विधि, पूजे मुदित महीप ॥ ७२ ॥
पुनि बोले नृप जोरि कर, भवन पधारिय नाथ ॥
कृपा सुता पर कीजिये, हाथ धरिय तिहि माथ ॥ ७३ ॥
सुनि प्रमुदित मुनि वर तुरत, मिथिलाधिपके संग ॥
आये अंतःपुर हिये, बाढ़ी परमउमंग ॥ ७४ ॥
निरखि सुनैना ऋषिहि उठि, सविधि पूजि शिरनाय ॥
लै सीतहि निज अंकते, मुनि पग धरी सुभाय ॥ ७५ ॥
तब नारद अतिहर्ष युत, सियहि लई निज अंक ॥
ताछिन मुनिमन मोद ज्यों, पारस पायो रंक ॥ ७६ ॥
लखि मुनिवरहि प्रसन्न चित, सविनय कही नरेश ॥
नाथ सुताके चिह्न लखि, दीजे मोहिं निदेश ॥ ७७ ॥
सुनत वचन मुनि मुदित ह्वै, नखशिख सियहि निहारि ॥
बोले नृपति विदेह सों, ज्ञानी विमल विचारि ॥ ७८ ॥

भूप सुताके अमित गुण, कहौं कहा मति मोरि॥
शेषहु भाषि सकैं न जो, वरणैं वर्ष करोरि ॥ ७९॥
तुव पुत्रीके चिह्न जो, परे चरण कर भूप॥
अवधनाथ सुतके सकल, येही लखे अनूप ॥ ८०॥
सुनि त्रिकाल ज्ञाता नृपति, मुनिहि कहो कर जोरि॥
श्रवण करनको चिह्न सो, चाहतिहैं मति मोरि॥८१॥
तब मुनि बोले रामके, लक्षण सकल अपार॥
पैपद करके कछु कहौं, निजमतिके अनुसार॥ ८२॥

घनाक्षरी कवित्त।

स्वस्तिक १ त्रिकोण २ बाण ३ कल्पतरु ४ कंज ५ चक्र ६ वज्र ७ छत्र ८ चौंर ९ रथ १० अष्टदल ११ ऊर्द्धरेष १२॥ सिंहासन १३ अंकुश १४ मुकुट १५ हल १६ मूशल १७ श्री १८ वसु १९ अहि २० दंड २१ ध्वजा २२ नर २३ जवमाला २४ लेष॥ रसिकविहारी रेष ऊरधके वाम सोहैं, एक बीस २१ताके दिशि दक्षिणसुद्रै २ विशेष॥येहैं वीस चारि चिह्न दक्षिणचरण चारु राजैं रामचंद्रके मैं मुदित भयो हौं दोष॥८३॥गोपद१पताका२शंख३ भू ४ घट ५ त्रिकोण ६ गदा ७ जंबू ८ जीव ९ सरयू१०छकोन ११ तिल १२ चंद १३ जान॥ शक्ति १४ वीन १५ त्रिवली १६ पियूषसर १७ मीन १८ हंस १९ तूण २० धनु २१ वंसी २२ नैनबिंब २३ शशिबिंब २४ मान॥ द्वादश १२ अनूप सरयूके दिशि दक्षिणहैं एकादश १ ताके वाम ओर वर कीनो थान॥ रसिकविहारी चिह्न चौबिस विशाल येई रामपद वाम मैं विलोके मनमोद मान॥८४॥ चिंतामणि १ कामधेनु २ ऊरध ३ तुरंग ४ गज५कुंभ ६ षटकोण ७ लता ८ चक्र ९ ध्वज १० भ्राजे हैं॥ वज्र ११ पंचकोण १२ कंज १३ मंदिर १४ त्रिकोण १५ बान १६ षड़ग १७ त्रिशूल १८ मीन १९ चंद्र २० रवि२१राजैहैं॥ अष्टकोण२२कुंडल२३प्रसून२४ तिल २५ रंभा २६ क्रीट २७ माल २८ फल २९ चांद्रिका३०गिरीश ३१ ग्राम ३२ साजैहैं॥ रसिकविहारी रघुचंदकर दाहिनमें विशद

बतीस वर चिह्न छबि छाजैहैं ॥ ८५ ॥ कंकण १ कदंब २ चाप ३ अंकुश ४ मलिंद ५ तुला ६ योनि ७ नरमुंड ८ रथ ९ कुंभ १० मणिमाल ११ है ॥ मास १२ शक्ति १३ तोमर १४ पयोध १५ महि १६ कीर १७ केतु १८ नलिनी १९ सरोज २० शंख २१ भानु बिंब २२ लालहै ॥ पारिजात २३ मंजरी २४ अशोक २५ मृग २६ मीन २७ सिंह २८ तारा २९ सरिता ३० पियूषकुंड ३१ शशिबाल ३२ है ॥ रसिकविहारी ये बतीस वर चिह्नतेत रामको सुवामकर चिह्नित विशाल है ॥ ८६ ॥

दोहा—दोऊ पद कर दुहुँनके, येकहि चिह्न ललाम ॥
दक्षिण वाम जु वाम सो, दक्षिण सीताराम ॥ ८७ ॥
पुनि मुनि बोले नृपति मणि, सुनौ कहौं दृढ़ बैन ॥
राम भामिनी तुव सुता, ह्वैहै संशय हैन ॥ ८८ ॥
इनकी प्रभुता जगत्में, ह्वैहै वर विख्यात ॥
रूप तेज बल गुण सहित, चिरुजीवै कुशलात ॥ ८९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सुंदरी सुरी औ नरी किन्नरी अनूप सदा इनकी सुतीय सबै रैहैं अनुगामिनी ॥ देव द्विज वृंद संत सुखसर सैहैं, भक्ति भुक्ति मुक्ति पैहैं गुण गैहैं दिन यामिनी ॥ रसिकविहारी हीय मोद उमगैहैं, यश प्रभुता बढैहैं औ कहैहैं राम भामिनी ॥ धर्म निरवैहैं पतिव्रतहि दिढैहैं सत्य कंत प्रिय हैहैं तिहुँ लोकनकी स्वामिनी ॥ ९० ॥

दोहा—सुनि भूपति नारद वचन, बोले हिय हुलसाय ॥
सुखीरहै संतत सुता, मुनि तव कृपा प्रभाय ॥ ९१ ॥
इहि विधि मुनिवर दरशलै, सियहि दई नृप गोद ॥
कहि जैजै कीनो गमन, पुलकित परम प्रमोद ॥ ९२ ॥
मुनिहि चलत नृपतियसुता, संयुत उठि शिरनाय ॥
कही दरश फिरि दीजिये, गेह रावरो आय ॥ ९३ ॥
दै अशीश नारद गये, इत रानी नरनाथ ॥
कहत परस्पर मुनि कृपा, भो यह गेह सनाथ ॥ ९४ ॥

पुनि बोले नृप मुनि जिती, कही सत्य सब सोय ॥
विधि हरि हर नारद वचन, कबहुँ मृषा नहिं होय ॥ ९५ ॥
बैन सुनत पितु मातके, सिय हिय भयो प्रमोद ॥
सो दुराय लागीं करन, इत उत बालविनोद ॥ ९६ ॥
सिय लघु भगिनी तीन जे, बहु गुण रूप ललाम ॥
कहत मांडवी उर्मिला, श्रुतिकीरति ये नाम ॥ ९७ ॥
ते मिलि सखिगण संगमें, खेलैं खेल अनूप ॥
चहुँ नृपकन्या सकल अलि, परममनोहर रूप ॥ ९८ ॥
यद्यपि चारहु नृपसुता, हैं गुण रूप प्रधान ॥
तदपि सबहिमें जानकी, सुभग शिरोमणि मान ॥ ९९ ॥
मात पिता पुर नारि नर, लखि सिय बालविनोद ॥
छिन छिन पुलकित होत हिय, पावत परम प्रमोद ॥१००॥
जबते सिय प्रगटीं अवनि, तबते नृप मतिमान ॥
सहस धेनु तिहि हाथते, नितहि करावत दान ॥ १०१ ॥
अपर दान उत्सव अमित, समय समय अनुसार ॥
सकल यथाविधि होत नित, जिनको कथन अपार॥१०२॥
सिया जन्म दिनते जनक, करत सदा जो दान ॥
ता प्रभावते रंक बहु, भये कुबेर समान ॥ १०३ ॥
धर्म तेज पितु मातको, भाग्यवंत पुनि आप ॥
याते नित प्रति सीयको, छिन छिन बढ़ै प्रताप ॥ १०४ ॥
थोरी वय स्यानी लखत, बल गुण रूप अपार ॥
सकल कला विद्या निपुण, संतत विशद विचार ॥ १०५॥
शिशुताई ते सीय हिय, रुचै अधिक वसु ८ रीत ॥
दान१दया२शुचि३धर्म४बल५,प्रीति६नीति७संगीत८ १०६
इहि विधि जन्म अनूप भो, जनकसुताको जान ॥
शुक्लपक्ष नवमी लखौ, माधव मास प्रमान ॥ १०७ ॥
नषत उत्तरा फाल्गुनि, मध्य दिवस गुरुवार ॥
सिंह लग्नमें अवनि ते, सिय प्रगटीं सुखसार ॥ १०८ ॥

प्र० महासुंदरीतंत्रे-श्लोक।

नवम्यां शुक्लवैशाखे ह्युत्पन्ना सावनीसुता ॥ सीतामुखात्सा संजाता पालिता जनकेन च ॥ १ ॥ रामपत्नी महाभागा सीता नामेति विश्रुता ॥ तास्मिन्दिने रामभक्ताः श्रद्धाभक्तिसमन्विताः ॥ ॥ २ ॥ महोत्सवपराः सर्वे वित्तशाठ्यविवर्जिताः ॥ गीतवादित्र नृत्याद्यैः रामभक्तिपरायणाः ॥ ३ ॥ नवम्यां सितवैशाखे पुराण-पठनं तथा ॥ लक्ष्मीसूक्तं पठंस्तत्र याति रामं सनातनम् ॥ ४ ॥ सौभाग्यं धनधान्यं च पुत्रसंततिविस्तृतम् ॥ रामप्रसादाल्लभते मुच्यते सर्वपातकात् ॥ इत्यादि ॥

इति श्रीरामरसायन श्रीसीताजन्मवर्णनो

नाम सप्तमो विभागः ॥ ७ ॥

सोरठा—सिय गुण रूप निधान, सखी वृंद संयुत सदा ॥
सकलहीय सुखदान, जनक भवन मधि राजहीं ॥ १ ॥

चौ०—एकसमैसियसखिन समेता ❀ विचरतहीं आराम निकेता ॥
बाग विलोकि चहूँ रुचिराई ❀ जहाँ सदा ऋतुराज रहाई ॥२॥
अलिन सहित तिहि बाग मँझारी ❀ प्रमुदित फिरत विदेह दुलारी ॥
इक रसाल तरु लखि हरषानी ❀ कछुक बार तिहि तर बिलमानी ३
ताछिन इक शुक शुकी अनूपा ❀ आये तहँ विचरत वर रूपा ॥
बैठे सो रसालपर दोऊ ❀ परम प्रसन्न शंक नहिं कोऊ ॥४॥
करत परस्पर केलि कलोलैं ❀ प्रमुदित दुहूँ मनोहर बोलैं ॥
रुचै जोइ सोई वरवानी ❀ कहैं सुनैं निज निज मनमानी ५॥
कबहुँ शुद्ध सुर गिरा उचारैं ❀ कबहुँक नरवाणी विस्तारैं ॥
कबहूँ शुक भाषा निज बोलैं ❀ दुहूँ परस्पर जिय गति खोलैं ॥६॥
मधुर शुद्ध वर सुनि शुक बानी ❀ सखिन सहित सिय हिय हुलसानी
सीता कह्यो जतन सो कीजै ❀ सुंदर शुक जोरी गहि लीजै ॥७॥
वचन सुनत आली इक जाई ❀ फंद डारि गहिबेको धाई ॥
शुक उड़ि गयो हाथ नहिं आयो ❀ शुकी गही तनु फाँस फँसायो ॥८॥

तिहि गहि कनक पिंजरा डारी ❀ शुकी देखि सिय भई सुखारी ॥
भूषण वसन अमोल नवीने ❀ प्रमुदित ह्वै सो आलिहि दीने९॥
पारि पिंजरा शुकी अकुलानी ❀ रोवन लगी दीन कहि बानी ॥
हा सुखदान हाय शुक प्यारे ❀ हा मम जीवन प्राण अधारे १०॥
यौं कहि तलफत पिंजर माहीं ❀ छिन छिन ताहि कल्प सम जाहीं
सिय विलोकि तिहि व्याकुल भारी ❀ लै पिंजर चुचुकारि दुलारी॥ ११॥
फल मेवा पकवान अनेका ❀ मीठे सरस एकते एका ॥
कनक कटोरिन सकल सजाये ❀ नीर सहित तिहि निकट धराये १२
शीश धुनै सो पंख पसारी ❀ रोवै शुक विहीन शुक नारी ॥
कछू न खाय पियै नहिं नीरा ❀ करै विलाप सुनिपट अधीरा १३
बोली शुकी दीन ह्वै वानी ❀ हे सीता तुम परम सयानी ॥
हम पक्षी फल फूल अहारी ❀ रहैं स्वतंत्र सदा वनचारी॥ १४॥
ताहू पै पुनि हौं इहिकाला ❀ दुखी सगर्भ अतिहि बेहाला ॥
याते मोहिं तजौ बैदेही ❀ मिलौं जाय शुक परम सनेही १५
सुनि जानकी कही मृदुवानी ❀ शुकी अतिहि तुम मोहिं सुहानी॥
याते सत्य कहौं हे प्यारी ❀ तोहिं द्दगन ते करौं न न्यारी १६॥
भई निराश शुकी सुनि बैना ❀ दृढ जानी अब सिया तजैना ॥
शुक वियोग ज्वाला अति जागी ❀ घोर शोर पुनि रोवन लागी १७॥
शुक तरु पल्लव ओट दुराई ❀ शुकी सीय गति लखी चुपाई ॥
भयो अधीर दुखी तिय देखी ❀ आई निकट मृत्यु दृढ लेखी १८
तब शुकह्वै प्रतक्ष तरु पाहीं ❀ हेरत चकित चहूँ जहँ ताहीं ॥
सिय सन्मुख सुबैठि द्रुम शाषा ❀ बोलो विशद मानुषी भाषा १९॥
सुनौ वचन वर जनककुमारी ❀ या छिन त्यागि देहु ममनारी ॥
ह्वै प्रसन्न सुत जनै सुबाला ❀ कछुक दिवस करि तिहि प्रतिपाला २०
पुनि हम दुहुँ आवैं तुव पासा ❀ सदा राखियो सहित हुलासा ॥
हम तुमते मिथ्या नहिं भाखैं ❀ रंच हिये छल छिद्र न राखैं २१॥
सुनि बोलीं हँसि जनक किशोरी ❀ रे द्विज यौं जनि करहि ठगोरी॥
हौं सब गति जानतिहौं तोरी ❀ तू मति मान भई मैं भोरी ॥२२॥

बचो फंदते तू उडि भागो ❀ अब बहु बात बनावन लागो ॥
सुनि बोलो शुक सियहि बहोरी ❀ तुव हिय होय प्रतीति न मोरी२३
सुनौ सिया शुक मोहिं न जानौ ❀ हौं गंधर्व सत्य करि मानौ ॥
पक्षी देह हेतु जिहि पाई ❀ सकल कहौं वह कथा बुझाई२४॥

पद्धरीछंद।

गंधर्वलोक मेरो सुधाम । हौं नृत्य गानकारी ललाम ॥
गंधर्विनी सु यह तीय मोरि। संगीत कला यामें करोरि ॥ २५ ॥
तिय सहित सदा सुरलोक जाउँ। सुरराज सभा सब निशि रहाउँ ॥
तहँ नित्य होत वर नृत्य गान। गंधर्व अप्सरा जुरहिं आन ॥ २६॥
सुरपति रजाय जब जाहि होय। तब नृत्य गान तहँ करहि सोय ॥
इहि हेतु सबै हाज़िर रहात। अमरेश सभा नित सकल जात ॥२७॥
इक दिवस तीय संयुत तहाँय। हम गये नित्य जिहि समय जाँय ॥
तिहि दिन सभा न आये सुरेश। मो जिय विचार आयो सुदेश २८॥
है अमरराजको अति विलंब । पुनि नृत्यगानकारी कदंब ॥
चलि लखिय आज अमरावतीहि। बर विशद वाटिका भावतीहि२९॥
तिहि मध्य विना वासव रजाय। सुर किन्नरादि कोऊ न जाय ॥
याते दुराय गंधर्व देह। शुक रूप धारि हम दुहुँ सनेह ॥३०॥
नभ पंथ होय तहँ जाय दोय। मन मुदित भये आराम जोय ॥
तरु बेलि फूल फल अति अनूप। मणि हेम धाम शुचि विविध रूप३१
तिहि देखि अमित आनंद फूलि। दुहुँ गये सभाकी सुरति भूलि ॥
लहि विमल धाम पुनि तीय संग। विचरें अपार बाढी उमंग ॥३२॥
उत सभा आय राजे सुरेश। दीनी रजाय मोहित सुदेश ॥
दरबार माहिं पायो न मोहिं। थाके समस्त जन जोहि जोहि ॥ ३३ ॥
तब कियो अमित सुरराज कोप। तिहि समय हीय राखो सुगोप ॥
किन्नर सु किन्नरी अमित और। ते नृत्य गान ठाने सुठोर ॥ ३४ ॥
इत अर्धरैनि लग करि विहार। तिय सहित फेर निज देहधार ॥
हौं सभा मध्य गवनो सशंक। लखि भई इन्द्र भ्रुकुटी जु बंक॥३५॥
तिहि देखि भयो मैं अति विहाल। जान्यौं सतीय आयो जु काल॥

कहि त्राहि त्राहि अकुलाय धाय । शिर धरो जाय सुरराज पाय॥३६॥
सहरोष कही तब इन्द्र मोहिँ । गुण पाय बढ़ो अभिमान तोहिँ ॥
रेदुष्ट भंगकी नीरजाय । तिय सहित मूढ़ वध योग आय ॥ ३७ ॥
कहु सत्य रहो किहि ठौर आज । क्यों करि विलंब आयो समाज ॥
मिथ्या न बोल तौ बचिहि प्रान । नत वध्य होय या छिन निदान ३८
हौं सुनत लई दृढ़ हीय ठान । अब दुहूँ भाँति है प्राणहान ॥
याते असत्य भाषौं नरंच । सो होय होय जो पूर्व संच ॥ ३९ ॥
यौं ठानि कहो सब सत्य हाल । सुनि भये इन्द्र दुहुँ नैन लाल ॥
बोले सुरेश पुनि अतिसरोष । दुरि कियो दुष्ट तू अमित दोष ॥४० ॥
आज्ञा सुभंग द्वै कीन मोरि । तिय सहित मृत्यु आई सु तोरि ॥
कह करौं चरण गहि लीन धाय । अब हतौं तोहिं तौ धर्म जाय ॥४१॥
इहि हेतु देउँ तुहि शापदंड । या समय रोष मो अति प्रचण्ड ॥
हो खल उलूक तिय सहित जाय । नरलोक विपिन निर्जन बसाय४२॥
सुनि घोर शाप तिय विकल होय । द्रुत गिरी धाय तिन चरणरोय ॥
हौं शरण पाहि बोली पुकार । यह दुसह शाप कीजे उधार ॥४३ ॥
अबला विलोकि अतिहीं विहाल । पुनि कृपाकीन वहु ह्वै दयाल ॥
देवेश तबै बोले सुबैन । मो शाप अन्यथा होय हैन ॥ ४४ ॥
पैकहौं लाय दाया सु हीय । ह्वैहो उलूक ध्रुव पुरुष तीय ॥
सत वर्ष रहौ सो देह दोउ । तिहि अंत फेरि शुकरूप होउ ॥४५॥
इमि जन्म मरण भोगौ अपार । शुकयोनि वर्ष पैहौ हजार ॥
पुनि रजक भवन दुहुँ प्रगट होय।दश सहस वर्ष सुख अवध जोय४६॥
सो देह त्यागि नर नारि दोउ । पुनि स्वर्ग लोक तुव वास होउ ॥
इमि इन्द्र शापवश ह्वै सदाय । शुकशुकी पुरुष तिय जगरहाय॥४७॥
मुहि पूर्वजन्मको सकल ज्ञान । तुझ निकट सत्य कीनो बखान ॥
याते प्रतीति मन मानि मोरि । सिय देहु वेगि मम शुकिहि छोरि४८॥

दोहा—सुनत कही सिय सखिन ते, शुक अति मोहिं सुहाय ॥
याहूको गहिलेहु तौ, दोउरहैं यक ठाय ॥ ४९ ॥

सुनि सीता वाणी शुकी, सब विधि होय हिरास ॥
पति वियोग दृढ़ जानिकै, तजी प्राणकी आस ॥ ५० ॥
शिर धुनि धुनि पिंजर विषे, दोऊ पंख पसारि ॥
प्राण त्यागि दीनों शुकी, सबही रहीं निहारि ॥ ५१ ॥
शुक विलोकि निज तिय मरन, रोयो विकल पुकारि ॥
निपट दीनह्वै रोषयुत, बोलो सियहि प्रचारि ॥ ५२ ॥
जनकललि कीनी भली, लये दुहुँनके प्रान ॥
याको फल भल पायहौ, कहौं कहा अब आन ॥ ५३ ॥
अवध लेहुँगो जन्ममैं, जाय रजकके भौन ॥
तब याको फल देहुँगो, जाविधि बनिहै जौन ॥ ५४ ॥
यों कहिकै शुक बिकलह्वै, गिरो धरणिपै आय ॥
हाय हाय प्यारी शुकी, मोहिं गई तजि हाय ॥ ५५ ॥
बहु विलापकरि छिनकमें, शुकहु तजो निज प्रान ॥
सो लखिकै सिय सखिन युत, कीनी अमित गलान ५६॥
सोच विवश पछिताय चित, भईं जानकी मौन ॥
तिहि कमला पर बाँहदै, चलीं मंद निजभौन ॥ ५७ ॥
पुनि दृगजल भरिकै सिया, सखिन कही बिलखाय ॥
सत्यप्रीति की रीति वर, लखौ अली यह आय ॥ ५८॥

सवैया कवित्त।

चित चाहको चाहक पाय सदा धिग है तिहि फेरि जु चाहै बियै॥
करि नीके अमीरस पान घनो धिगहै पुनि जो कटुवारि पियै ॥
जिय चाहै चलो विन प्रीतमकें धिग वाहि जु धीर धरावै हियै ॥
रसिकेश कहायकै नेही तबै धिग ताहि जु मीत बिछोहै जियै५९॥
दोहा—यों कहि सिय बोलीं बहुरि, सखि हौं अति पछिताउँ ॥
मोपै बनी न बात कछु, आपहि आप लजाउँ ॥ ६० ॥
सुनि बोलीं आली सबै, स्वामिनि हौ मतिमंत ॥
होनी होय सु नहिं टरै, यौं भाषैं सब संत ॥ ६१ ॥

सिय सखीन मिलि परस्पर, योंही बहु बतराय ॥
आई गेह विलंबभो, मातहिं निपट सकात ॥ ६२ ॥
निरखि मात सिय मुदितह्वै, गोदलई बैठारि ॥
कियो प्यार मृदु वचन कह, मुख अंचल पट झारि॥६३॥
प्रेम निरखि निज मातुको, सिय हिय भयो अनंद ॥
सकल सखी प्रमुदित अमित, लखि स्वामिनि मुखचंद६४
पुरवासी पितु मातु सखि, सदा सिया मुख देखि ॥
निशिदिन रहत अनंदमें, धन्य जन्म निज लेखि॥६५॥

इति श्रीरामरसायन ज० वि० शुकचारित्र वर्णनो
नाम अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

दोहा–जनक नंदिनी सखिन युत, मुदितरहै वसुयाम ॥
मात पिता शिखमानिकै, करैं सदा सब काम ॥ १ ॥
चौ०-एकसमैशुभऔसर जानी ❀ दई रजाय सुनैनारानी ॥
कुलपति पूजन सदा सुहायो ❀ होत समय सो अति नियरायो२॥
याते वेगि सौंजसाजि सारी ❀ होय देव पूजन तैयारी ॥
सुनि आज्ञा सेवक हुलसाये ❀ सपदि यथोचित साज सजाये॥३॥
पूजन दिन सुघरी जब आई ❀ तब प्रमुदित जानकिहिं बुलाई ॥
सुता सुशील धर्म रत जानी ❀ कही मात मंजुल मृदुवानी ॥ ४ ॥
दोहा–पूजा निजकुल देवकी, होत सदा यह नेम ॥
जाते सकल कुटुंबमाधि, संतत रहै सुक्षेम ॥ ५ ॥
पुत्री सो दिन आजहै, याते तुम निज हाथ ॥
कछु कारज कुलदेव हित, करिकै होहु सनाथ ॥ ६ ॥
मात वचन सुनि जानकी, बोलीं हिय हुलसाय ॥
करौं काज सो वेगि जो, जननी होय रजाय ॥ ७ ॥
सुनि माता सियके वचन, श्रद्धाभक्ति समेत ॥
पुत्रिहिलै निज गोद यों, भाषी हरषि सहेत ॥ ८ ॥
पूजन जहँ कुलदेवको, होत सदा सो धाम ॥
गोमय लेपन उचित है, तुव करते तिहि ठाम ॥ ९ ॥

चौ०—माय रजाय पायकै सीता ❀ धाय जाय तिहि ठाँय पुनीता॥
शुचि गोमय जल तुरत मँगाई ❀ लेपन करन लगी हरषाई॥१०॥
लेपन करत सिया जिहि धामा ❀ तहाँ धरो यक धनु अभिरामा॥
मंजूषा वसु चक्र सँवारी ❀ तामधिरहै चाप अतिभारी॥११॥
पंच सहस्रवीर बरियारा ❀ मंजूषा खैचैं इक बारा॥
चलै चक्र बलतै तब सोई ❀ धनुष उठायसकै किमि कोई॥१२॥
देवरात निमि वंश जु भूपा ❀ तिनहि दयो शिव धनुष अनूपा॥
तबते धरो चाप गृहमाहीं ❀ सुरसम पूजन होत सदाहीं॥१३॥
दश सहस्र भट चहैं उठावा ❀ केवल चाप दापकरि दावा॥
तिन पहँ रंचहु टरै न टारा ❀ तामधि अतिअपार इमि भारा १४
ता ढिग लेपन करत कुमारी ❀ बाल स्वभाव सहीय विचारी॥
जो सब थल लेपन ह्वै जावे ❀ तौ मम मात निरखि हरषावे॥१५॥

दोहा—दक्षिणकर गोमय लिपित, याते गहि कर वाम॥
मंजूषा युत चापसो, धरो दूसरे ठाम॥१६॥

चौ०—सहजहि धनु धरि दूजे ठामा ❀ लेपन कियो सकल वह धामा
कर पखारि पुनि सहित हुलासा ❀ आई सिय जननीके पासा१७॥
बोली सिय चलि मात निहारो ❀ मैं लेपन कीनो थल सारो॥
यौं कहि गहि जननिहि वरियाई ❀ लाय सकल शुचि भूमि दिखाई१८
दूजे थल धनु निरखि सुनैना ❀ चकित थकित मुख कढे न बैना
लखि जननीरुख सिया डरानी ❀ अनुचितकछू भयो जियजानी१९
गद्गद कंठ नयन भरि वारी ❀ जोरि पाणि मृदुगिरा उचारी॥
भयो होय जो अनुचित मोते ❀ क्षमै मात यह विनवौं तोते२०॥
सियहि सशंक देखि महतारी ❀ लाय अंक बहु भाँति दुलारी॥
दै धीरज पुनि कही अभीता ❀ किन टारो इतते धनु सीता२१॥

दोहा—सुनि सिय बोली मातु मैं, धनु धरि लेपो धाम॥
भूली सुधि याते न फिरि, लाय धरो इहि ठाम॥२२॥
अब उठाय धरि देहुँ मैं, चापहि याही ठौर॥
भयो यही अपराधकै, कहु जननी कछु और॥२३॥

चौ०-यौं कहि धाय विदेहदुलारी ❀ मंजूषा सहजहिं कर धारी ॥
जबलग मातु गहै सिय जाई ❀ तबलग धनु तहँ धरो उठाई२४॥
निरखि मातमन विस्मय भारी ❀ चकित भई लखि अपर सुनारी॥
रानी तुरतहि नृपहिं बुलाई ❀ कही सकलगति धनु दरशाई ॥२५॥
भूपति भूमिसुता बल देखी ❀ प्रगटो उर आचरज विशेषी ॥
ईश चरित्र विचित्र विचारी ❀ नृपरानी विस्मय सब टारी २६॥
पुनि पुत्रिहि गहि जनक सुनैना ❀ करचूमें कहि मंजुल बैना ॥
करी सिया यह कह लरिकाई ❀ सुरकी होय न मृदुल कलाई॥२७॥
यौं कहि बार बार नरनाथा ❀ लखत रानि युत सिय दुहुँ हाथा ॥
हरषितह्वै बोले अवनीशा ❀ कीनी दया बाल पर ईशा ॥२८॥
है यह बात अमित भी ताकी ❀ करवर टरी आज सीताकी ॥
यौं कहि भूपति विप्र बुलाई ❀ लक्षधेनु वर दान कराई॥२९॥
मणि भूषण पट वित्त अपारा ❀ कियो दान माता बहुबारा ॥
आये जनक नगर नर नारी ❀ दई वस्तु बहु सिय पै वारी३०॥
जो जो सुनै सुविस्मित होवैं ❀ आय आय सब सिय मुख जोवैं ॥
इहि विधि युगलयाम दिन आयो ❀ कुलपति पूजनसमय लखायो३१
तब सिय मात सियहि लै संगा ❀ गई गेह युत नेह उमंगा ॥
करि मंजन शृँगार शुचि साजी ❀ कुलपति पूजन हेतु विराजी३२॥
इष्टदेव कुलदेव सप्रीती ❀ पूजे सविधि सनातन रीती ॥
गीत वाद्य भोजन युत दाना ❀ भये काज सब सहित प्रमाना॥३३॥
इहि विधि कुलपति पूजन कीनी ❀ पुनि बख़शीश यथोचित दीनी॥
प्रमुदित हृदय सकल नर नारी ❀ जैजै शोर होत चहुँ भारी ३४ ॥

दोहा-यौंही नृपति विदेह गृह, बहु उत्साह अपार ॥
होत रहत प्रतिदिन सदा, लोक वेद अनुसार ॥ ३५ ॥

इति श्री० रा० र० ज० वि० कुलदेवपूजन वर्णनो
नाम नवमोविभागः ॥ ९ ॥

इति श्रीमद्रसिकविहारीविरचिते श्रीमद्रामरसायने जन्मचरित्रवर्ण-
नो नाम द्वितीयोविधानः ॥ २ ॥

दोहा–श्रीसीतापति पद कमल, वंदों मन वच काय ॥
जाकी कृपाकटाक्षते, सकल चरित दरशाय ॥ १ ॥
जबते प्रगटीं जनकजा, जनकनगरमें आय ॥
तबते अति आनंद चहुँ, अधिक अधिक अधिकाय ॥ २ ॥
सिय गुणरूप अनूप लखि, कहत यहै सब लोग ॥
अब सुख तब जब सुभग वर, मिलै जानकी योग ॥ ३ ॥
जनकसुता गुणरूप बल, प्रतिदिन बढ़त अपार ॥
सो विलोकि पितु मात उर, आवैं व्याह बिचार ॥ ४ ॥
पै नारदके बचन उर, धरे सिया पितु मात ॥
याते धीरज राखि अति, उर प्रति दिन उमगात ॥ ५ ॥
होम दान पूजन विविध, सिय मंगल हित नित्त ॥
करत रहत नृपरानि दुहुँ, श्रद्धा सहित सुचित्त ॥ ६ ॥
येही विधि निशि दिवस सब, प्रेम मगन नर नारि ॥
सिय विवाह अभिलाष हिय, रहे सकल जन धारि ॥ ७ ॥

चौ०एक दिवस नृप रानि समेता ❀ प्रमुदित बैठे रहसि निकेता ॥
ता छिन सिया मात सुखदानी ❀ बोली पतिहि जोरि युगपानी ॥८॥
कंत मोहि यह परम उमाहा ❀ दृग भरि कबै लखौं सिय व्याहा ॥
याते जतन कीजिये सोई ❀ सम सम्बंध वेगि जिहि होई ॥ ९ ॥
रानी बचन सुनत मिथिलेशा ❀ हर्षित बोले बचन सुदेशा ॥
प्रिया धीर धारौ मन माहीं ❀ ईश कृपा कछु दुर्लभ नाहीं ॥१०॥
यों कहि भूप सभा मधि आये ❀ मान सहित जन सकल बुलाये ॥
पुनि बोले नृप सबहि सुनाई ❀ धर्म नीति मय गिरासुहाई ॥११॥
है सीता अयोनिजा कन्या ❀ प्रगट भई अवनीतल धन्या ॥
ताको गुण बल तेज अपारा ❀ सबहि विदित का करौं उचारा ॥१२॥
सो गुरु सुहृद सचिव पुरवासी ❀ सब मतिवंत ज्ञान गुण रासी ॥
सज्जन सकल सुमति अनुसारा ❀ सीय व्याह कर करौ विचारा १३॥
जनक बचन सुनि सब हरषाने ❀ धन्य धन्य कहि नृपहि बखाने ॥
ता छिन शतानंद वरज्ञानी ❀ बोले नीत धर्ममय बानी ॥ १४ ॥

दोहा–धेनु सुता तिहुँलोक में, हैं दोऊ अति दीन॥
इनको दुख सुख रहतहै, संत स्वामि आधीन॥ १५॥
कन्या धेनु दुहूँनको, देय सुठौर कुठौर॥
याते अधिक न है कहूँ, पुण्य पाप कछु और॥ १६॥
पुनि वर कन्या रूप बल, कुल गुण तेज निहारि॥
यथायोग जहँ होय तहँ, कीजे व्याह बिचारि॥ १७॥
शतानंदके वचन सुनि, बोले जनक नरेश॥
परम कृपाकरि आप यह, दीनो वर उपदेश॥ १८॥
सो शिर धरि उपदेश यह, कहौं यथा रुचि मोरि॥
सुनि मुनि उचित विचारि हिय, करिय रजाय बहोरि॥ १९॥
सहज उठायो सीय जो, चाप विदित सो बात॥
याते मेरे हीयमें, यह विचार ठहरात॥ २०॥
सुर नर वर कोऊ जु यह, चाप चढ़ावै आय॥
सो सुयशी सुकृती मुदित, सियहि व्याहि लैजाय॥ २१॥

चौ०–जनकराजकी सुनि वर बानी ❀ सभा वृंद बोले शुभ जानी॥
भूप बात यह भली बिचारी ❀ धर्म नीति दुहुँ रीति सुधारी॥२२॥
सुनि पुनि बचन जनक हरषाई ❀ बोलि सचिवगण कही बुझाई॥
सिया व्याह हित हम प्रण ठाना ❀ आजहि ते यह सत्य प्रमाना२३॥
जो वरबीर पिनाक उठावै १ ❀ भंजे २ तौलै ३ तनै ४ चढावै५॥
पंचकर्म मधि एकहु करई ❀ मुदित देहुँ सीता सो वरई॥ २४॥
यह प्रण सत्य सकल संसारा ❀ वेगि यथोचित करौ प्रचारा॥
अरु सब धनुष यज्ञ कर साजा ❀ साजहु अमित कह्यो महराजा २५॥
नृप रजाय सुनि सचिव प्रवीना ❀ बहुजन बोलि निदेश सुदीना॥
सजौ वेगि सब साज सचेता ❀ लिखे पत्र पुनि रीति समेता२६॥

घनाक्षरी–कवित्त।

प्रगट भईहै एक कन्या अवनीते चारु सोई मिथिलाधिराज पुत्री प्रिय प्रानकी॥ गुण बल तेज रूप अमित अनूप याते भूपति दिढाई बात परम प्रमानकी॥ रसिकविहारी शंभु चाप अति भारी ताहि तौलन समर्थ होय काहू बलवानकी॥ आवै वरवीर तौ चढावै धनु छावै यश, मोद उपजावै व्याहि जावै देउँ जानकी॥ २७॥